हिंदी यू.एस.ए की त्रैमासिक ई-पत्रिका

कर्मभूमि

वर्ष ३, अंक ११ दिसम्बर २०१०

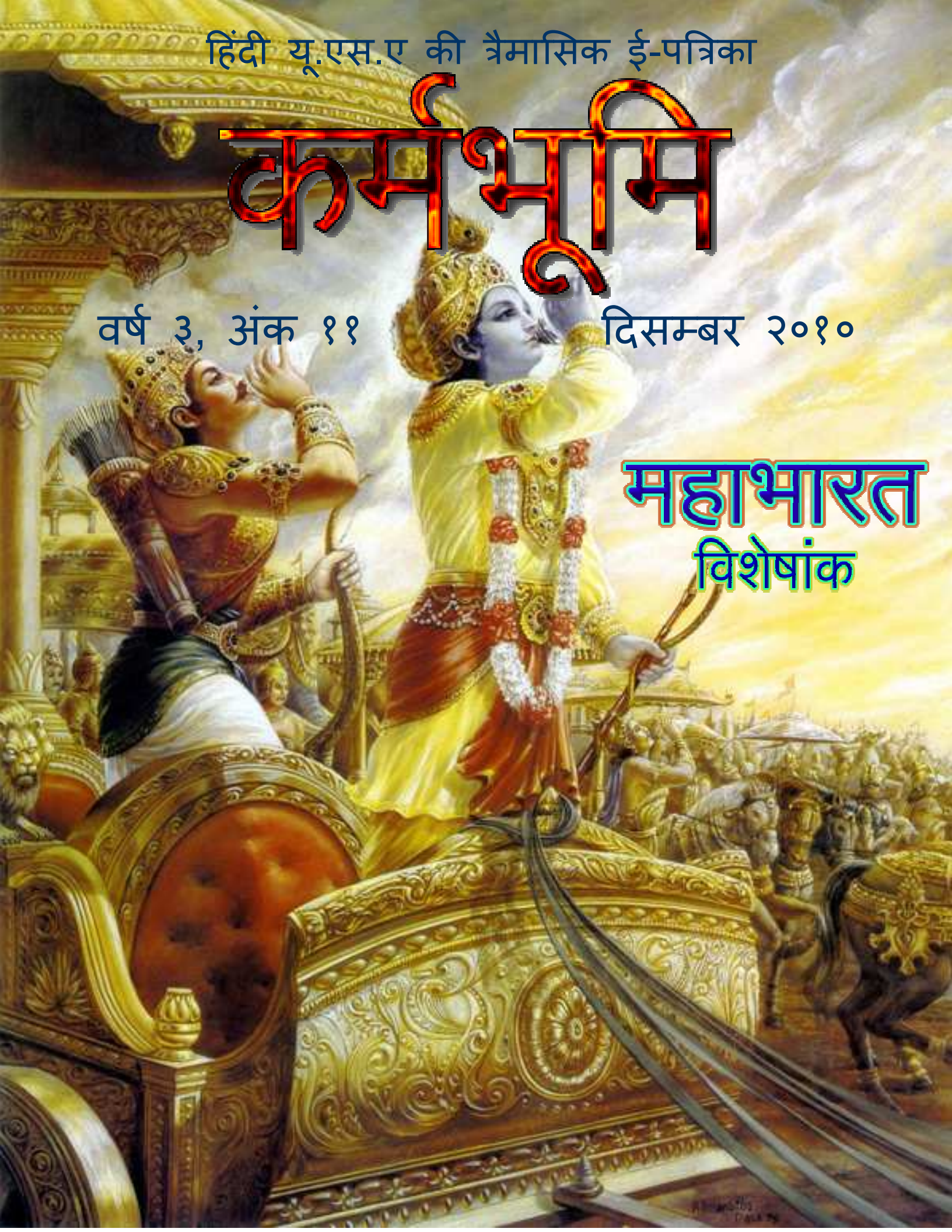

महाभारत विशेषांक

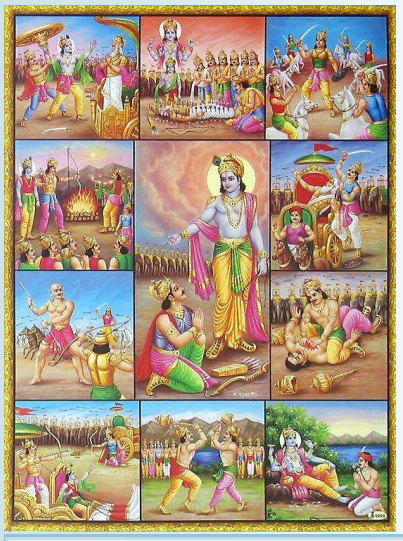

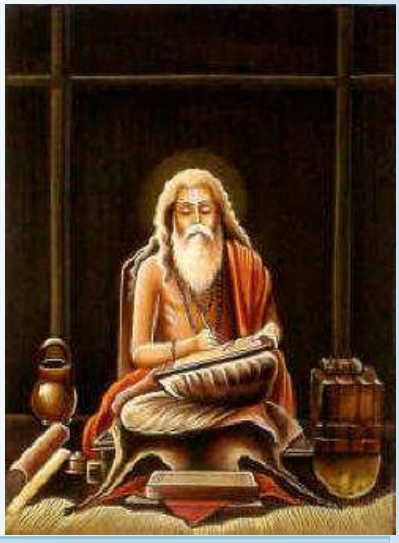

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

कर्मभूमि का यह 'महाभारत' विशेषांक आप सभी को सादर समर्पित है| महाभारत एक विस्तृत शास्त्र है| हजारों घटनाएँ, संस्मरण, एवं पात्र इसमें समाहित हैं| सभी चरित्रों और घटनाओं का विस्तृत रूप से ज्ञानार्जन किया जाये तो कई वर्ष इसमें लग जायेंगे| महाभारत का महामूल मन्त्र 'श्रीमद भगवद गीता' है जो भारतवर्ष की आध्यात्मिक धरोहर का अमूल्य रत्न है| इस अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष है| इसमें प्रकाशित सभी सामग्री सुलभ एवं रोचक भाषा में हमारे बालकों, स्वयं सेवकों, अभिभावकों एवं उच्च साहित्यकारों द्वारा लिखी गयीं हैं|

कर्मभूमि का पूर्व अंक 'रामायण' विशेषांक था जिसकी देश-विदेश के अनेक पाठकों द्वारा सराहना की गयी| कुछ चुने हुए पत्रों एवं प्रतिक्रियाओं को हम इस अंक में प्रकाशित भी कर रहे हैं| महाभारत की कई कहानियों एवं पात्रों का चरित्र-चित्रण बहुत से लेखकों ने सरल भाषा एवं सुगम शब्दों में किया है| हमें आशा है कि आप उसका पूर्ण आनंद लेने लेते हुए अपना तथा अपने बच्चों का साहित्य एवं भाषा ज्ञान भी बढ़ाएंगे| महाभारत के पात्र दुर्योधन, धृतराष्ट्र, अर्जुन, युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण आदि, ये सभी कौन हैं, इनका समस्त सार, प्रो. राजीव शर्मा द्वारा लिखित इन लघु पंक्तियों में स्पष्ट रूप में झलकता है:

दुर्योधन, दु:शासन, धृतराष्ट्र--केवल व्यक्ति नहीं हैं, विकृतियाँ हैं

विदुर, श्री कृष्ण, युधिष्ठिर केवल नाम नहीं हैं, संस्कृतियाँ हैं

प्रवृत्ति बिगड़ती है विकृति हो जाती है

प्रवृत्ति सँवरती है संस्कृति हो जाती है

आइये, वर्तमान की सभी बिगड़ती प्रवृतियों को संवारें और उन्हें विकृति न बनने दे कर, आने वाली पीढ़ियों के लिए संस्कृति के रूप में स्थापित करें|

प्रस्तुत अंक में उपलब्ध अमूल्य सामग्री; महाभारत के अपने ज्ञान की जाँच कीजियेगा 'महाभारत प्रश्नावली' के सरल और कुछ जटिल प्रश्नों का उत्तर देकर| 'महाभारत एक अद्भुत ग्रन्थ', 'भारत में महाभारत' एक भावपूर्ण कविता, 'दानवीर कर्ण', 'द्रोणाचार्य', 'महाभारत - एक ने कही दूजे ने लिखी', 'महाभारत एवं रामायण' दोनों महाग्रंथों का एक तुलनात्मक विश्लेषण, तथा अन्य बहुत सी रचनाओं का यह एक संग्रहणीय अंक है| जैसा कि विदित है, हिन्दी यू.एस.ए., उत्तरी अमेरिका की एक मात्र ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति को हमारी आने वाली पीढ़ियों को स्थानान्तरित करने के कार्य में संलग्न एवं कटिबद्ध है| वर्तमान में न्यू जर्सी, न्यूयोर्क, कनेक्टिकट, तथा अन्य राज्यों में ३० से अधिक हिन्दी पाठशालाओं का संचालन किया जा रहा है जिसमें ३५०० से अधिक छात्र हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं तथा ३५० अध्यापक तथा स्वयंसेवक इस कार्य से जुड़े हुए हैं| 'कर्मभूमि' के अधिकांश लेख/कहानियाँ/कवितायें हमारे छात्रों, उनके अभिभावकों एवं हमारे स्वयं सेवकों द्वारा लिखी जाती हैं तथा उन्हें प्राथमिकता भी दी जाती है| इससे न केवल उनका उत्साहवर्धन होता है, अपितु हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार को भी तीव्र गति प्राप्त होती है|

हमारी विनती है कि इस अंक की सभी रचनाएँ ध्यान से पढ़ें| अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करवाएँ| सम्भव है कि कुछ रचनाओं में व्याकरण एवं वर्तनी की कुछ अशुद्धियाँ रह गयीं हों, इसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं| कृपया उदार हृदय से हमारे छात्रों एवं अन्य लेखकों का उत्साहवर्धन करें ताकि उन्हें इनसे श्रेष्ठतर रचनाएँ लिखने की प्रेरणा मिल सके| आपके पत्रों, आलोचना/समालोचनाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी| मातृभूमि, मातृभाषा, एवं मातृसंस्कृति ये तीन देवियाँ हैं, इनका सम्मान करने से ही हमें विश्व में सम्मान प्राप्त होगा, आइये इसका हम स्वयं पालन करें तथा अपने बच्चों को इसका अनुसरण करना सिखाएं|

धन्यवाद

हिन्दी यू.एस.ए. निदेशक मंडल

अध्यक्ष	निदेशक
श्री देवेन्द्र सिंह	श्री राज मित्तल
उपाध्यक्ष	श्रीमति अर्चना कुमार
श्रीमति रचिता सिंह	श्री माणक काबरा
	श्री सुशील अग्रवाल

कर्मभूमि

लेख–सूची

६ - आपके पत्र

८ - हिंदी का अभियान

१० - महाभारत एक अद्भुत ग्रंथ

१४ - महाभारत और रामायण

१६ - महाभारत एक धर्मयुद्ध

१८ - भारत में महाभारत

२० - क्या "महाभारत" को घर में नहीं रखना चाहिए?

२२ - कर्ण

२५ - हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

२८ - द्रोणाचार्य

३१ - दानवीर कर्ण

३५ - महाभारत - चक्रव्यूह के कुछ तथ्य

३७ - महाभारत प्रश्नावली

४१ - प्रसन्नता अर्जित वरदान

४४ - एजेण्डा

४६ - जल संरक्षण

४७ - भीगे विश्वास का दर्द

५२ - हिन्दी यू.एस.ए. के साथ मेरी यात्रा

५४ - लेख क्यूँ लिखें

५६ - योग दर्शन

५८ - विदेश में हिन्दी प्रशिक्षण - स्वर व्यंजन

६१ - योग - एक अनुभव

६२ - दोहे - धरम के

६३ - फूलों की नदी

६४ - एकाग्रता

६५ - महाभारत - एक ने कही, दूजे ने लिखी

६६ - आया शुक्रवार आया और श्री कृष्ण की महिमा

६७ - महाभारत चित्रकला

६८ - सच्चा वीर युयुत्सु

७० - दीपावली उत्सव रिपोर्ट – लॉरेंसविल, एडिसन, ईस्ट ब्रुंसविक पाठशाला

७४ - शिक्षक अभिनन्दन दिवस रिपोर्ट

७७ - दशहरा उत्सव रिपोर्ट

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

देवेंद्र सिंह

माणक काबरा

अर्चना कुमार

राज मित्तल

महाभारत

विशेषांक

आपकी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA

3 Quay Circle

Sewell NJ-08080

एकश्लोकी महाभारत

महाभारत ऐसा दिव्य ग्रंथ है, जिसमें मानवीय जीवन के संघर्ष में विजय पाने के वह सभी सूत्र हैं, जिनकी अज्ञानता में कोई व्यक्ति प्रतिकूल स्थितियों तनावग्रस्त और बैचेन रहकर जीवन का अनमोल समय गंवा देता है। महाभारत का सारांश निम्नलिखित श्लोक के द्वारा किया जा सकता है|

आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजनन लाक्षागृहे दाहनं
द्यूते श्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालये वर्तनम् ।
लीलागोहरणं रणे विहरण सन्धिक्रियाजृम्भणं
पश्चाद भीष्मसुयोधनादिहननं चैतन्महाभारतम् ॥

आदि में पाण्डवों और कौरवों [धार्तराष्ट्र=धृतराष्ट्र के पुत्र] का जन्म, लाक्षागृह में जलाने का प्रयास, द्यूत में (जुए में) सम्पत्ति का हरण, वनवास दिए जाने पर वन में विचरण, मत्स्यराज विराट के यहाँ एक वर्ष का अज्ञातवास बिताना, लीला में गायों का हरण, पुन: युद्ध करके गायों को फिर से मुक्त करा लेना, सन्धि का अनादर (की हुई सन्धि को न मानना), बाद में भीष्म और सुयोधन (दुर्योधन) आदि का हनन; यही चैतन्य महाभारत है।

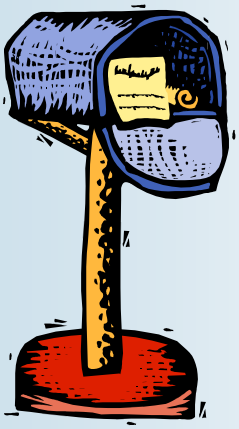

आपके पत्र

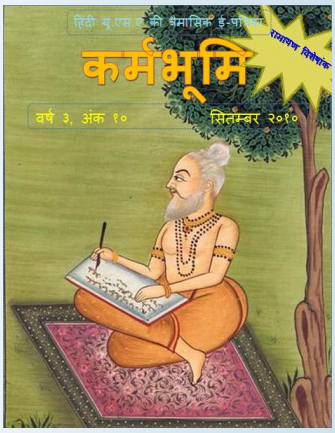

श्री माणक जी काबरा,

सप्रेम नमस्कार

आपने और आपके साथियों ने हिंदी को अमेरिका के स्कूली पाठ्यक्रम में एक विषय के तौर पर मान्यता दिलाने का जो अभियान चला रखा है, उसके लिए धन्यवाद देता हूँ और आपके इस मिशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ|

वास्तव में देखा जाय तो हिंदी को विदेशी पाठ्यक्रम में शामिल करना उतना ही कठिन काम है जितना कि पानी की धारा के विरुद्ध दिशा में तैरना| यह इसलिए कहना पड़ता है, क्योंकि हिंदी भारत की घोषित राष्ट्रभाषा जरुर है मगर कोई भी भारतीय हिंदी स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहता, वो भले ही दुखी होकर पढ़ायेगा मगर उसे अंग्रेजी स्कूल में दाखिला जरुर दिलाएगा| दूर ही क्यों जाएँ, मेरे पोते स्वयं अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं| तथाकथित इन पढ़े लिखों की भाषा में हिंदी में बोलना पिछड़ेपन की निशानी है, अंग्रेजी में फटाफट बोलना प्रगतिशील व्यक्तित्व का लक्षण है, चाहे वह गलत ही क्यों न हो|

हिंदी गंगा की तरह विशाल है, वह देश की सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समेट लेती है| कई उर्दू, तमिल, मराठी शब्द इसमे समा गए हैं और अब हिंदी के ही लगते हैं| अन्य संबंधित विषयों पर अलग से चर्चा, निबंध का विषय बन सकता है|

फिर से एक बार आपको शुभकामनाएँ देते हुये आपसे विदा लेता हूँ|

धन्यवाद

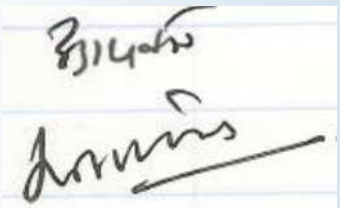

मन्नालाल नंदवान

आपके पत्र

भारत के एक समाचार पत्र, अल्मा टाइम्स, में कर्मभूमि के सितम्बर अंक की समीक्षा

ALMA TIMES ५ दिसम्बर, २०१०

वाह वाह कर्मभूमि तुझे प्रणाम

समीक्षक- प्रो. राजीव शर्मा

भारत की संस्कृति और यहां के लोगों का पारिवारिक और आत्मीयता से भरा सद्व्यवहार, भारत के समाज की अमूल्य, अतुलनीय धरोहर है। हिन्दी यू.एस.ए. की त्रैमासिक ई-पत्रिका 'कर्मभूमि' का रामायण विशेषांक अवलोकित करने पर उपर्युक्त कथ्य स्वयं तथ्य बनकर उपस्थित हो जाता है। हमारे संस्कृति के

महाकलश ग्रंथ रामायण और हिन्दी भाषा के प्रति स्नेह, सम्मान प्रकट करते न्यू जर्सी के नवम् हिन्दी महोत्सव को साथ रखकर चली लेखनी को बारम्बार प्रणाम करने को जी चाहता है। सुधा अग्रवाल ने रामायण के सरल किन्तु जानकारीपरक प्रश्नों को वैकल्पिक स्वरूप में लिखकर स्तुत्य कार्य किया है। नवम् हिन्दी महोत्सव में कार्यक्रम देते प्यारे प्यारे बच्चों की तस्वीरें देखकर मन मयूर नाचने लगता है। ऋषभ राऊत, आस्था सैनी, उर्वी सैनी, मीनू गुप्ता सहित तमाम कर्मभूमि के चितेरों ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से पत्रिका में प्राण फूंक दिए हैं। खूबसूरत मुखपृष्ठ से सुसज्जित कर्मभूमि के आधारस्तम्भ श्री देवेन्द्रसिंह, संपादक- सुशील अग्रवाल, संपादकीय मंडल के माननीय शब्द सारथी श्री माणक काबरा, अर्चना कुमार तथा भाईराज मित्तल ने सात समंदर पार अमेरिका में जिस हिन्दी उत्थान की गौरव ध्वजा को थाम रखा है, वह अनुकरणीय है। परमात्मा इन सबको और अधिक उत्साह तथा सफलताएँ दें, यही कामना।

अमेरिका की पत्रिका में अल्मा की वागीशा

अमेरिका की लोकप्रिय पत्रिका ने अल्मा इन्दौर की नन्ही सदस्य कु. वागीशा शर्मा की कविता 'हिन्दी' का प्रकाशन किया है। सिका स्कूल के प्राचार्य, अल्मा के संतोष शुक्ला, दिलीप एन. पंडित ने बधाई दी है।

आदरणीय श्रीमान,

आपका "कर्मभूमि" अंक १०, वर्ष ३ मुझे मेरे एक रिश्तेदार ने विपत्र द्वारा भेजा| पढ़कर मैं आत्मविभोर हो गया| आपका प्रयास सराहनीय एवं प्रेरणादायक है| इस प्रयास के लिए आप बधाई के पात्र हैं| अमेरिका में हिंदी प्रचार और प्रसार के लिए आपका संकल्प सम्पूर्ण हो|

दीपावली की शुभकामनाओं सहित

आनंद गुप्ता

देहरादून, भारत

आदरणीय देवेन्द्र जी,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी यू.एस.ए. त्रैमासिक पत्रिका कर्मभूमि का अंक मुझे मेरे पति के ई-मेल से प्राप्त हुआ, इसके लिये हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद। मैं स्वंय भोपाल के शासकीय महाविद्यालय में प्रोफेसर (हिन्दी) के पद पर कार्यरत हूँ। आप जैसे अनिवासी भारतीयों के द्वारा अमेरिका जैसे देश में राष्ट्र भाषा के सम्मान एवं प्रचार के लिये किये गये प्रयास अत्यधिक सराहनीय हैं। मैं भी आपके कार्य में भोपाल (म.प्र.) से सहयोगी रहूंगी तथा पत्रिका के लिये शीघ्र ही अपना लेख प्रेषित करूंगी।

भवदीया,

डॉ. प्रतिमा यादव (प्राध्यापक, शास.महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल)

हिन्दी का अभियान

देवेंद्र सिंह

यह कविता मेरे हृदय की अभिव्यक्ति है, और यह सभी हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं को समर्पित है। मेरी कविता की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब हम सब इसके संदेश को अपने जीवन में उतारेंगे, और हिन्दी यू.एस.ए. के ध्येय को पूरा करेंगे।

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

दो बच्चों से शुरु हुई थी हिंदी की ये गाड़ी
रोड़े भी आए राहों में आई जटिल पहाड़ी
रुकी नहीं है यात्रा क्योंकि गाड़ीवान हैं सच्चे
लक्ष्य एक साधा था जिससे ज्ञानवान हों बच्चे
धन्यवाद के पात्र आप हैं समय बताता जाता

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

काम बड़ा होने से बढ़ती जाती जिम्मेदारी
लगी हुई है सब लोगों की हमसे आशा सारी
कक्षा में आने का हमसे नियम कभी न टूटे
सब कुछ छूटे पर हम सबका साथ कभी न छूटे
कोई आता कोई जाता कार्य नहीं रुक पाता

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

क्या साधु क्या संत गृहस्थी क्या राजा क्या रानी
हिंदी यू.एस.ए. को भी अपनी लिखनी कर्म कहानी
बना महोत्सव हिंदी के गौरव की इक परिभाषा
भव्य भवन हिंदी का हम सब की अगली अभिलाषा
धर्म समझ कर कर्म बनाओ इसको भग्नि भ्राता

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

हिन्दी का अभियान

पिछली पीढ़ी ने सदियों से ज्ञान किया जो संचित
आने वाली पीढ़ी उससे रह जाए ना वंचित
गुरुकुल बन कर संस्कार दे दी हिंदी शालाएँ
वीर शिवा लक्ष्मी बाई से बने बाल-बालाएँ
कर्जा पिछली सदियों का है देखें कौन चुकाता

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

सच्चे मूल्यों का अवलोकन जब भी हमको करना हो
खोते हुए संस्कारों की मटकी को जो भरना हो
तो आदर्शों की गरिमा को मानना जरूरी है
कर्म का फल मीठा होता है जानना जरूरी है
ईश्वर रखता अपने घर में सब कर्मों का खाता
मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

हिंदी स्कूलों का संचालन हिंदी से अनुरक्ति
ये ही है कर्तव्य हमारा यही प्रभु की भक्ति
जीवित प्रभु को छोड़ के अपने मन को क्यों भटकाएँ
बच्चों के मन मंदिर में हम प्रभु का दर्शन पाएँ
अहम छोड़ दो हम से यह सब करवा रहा विधाता

मेरे हिंदी के अभियान से सब लोगों का नाता
पर छोटा बड़ा कोई नहीं है कार्य प्रभु कराता।

जो व्यक्ति मानसिक रुप से रोगग्रस्त और भाग्यवादी होते हैं, उसकी सहायता के लिए कोई भी आगे नहीं आता।

ऋग्वेद (४४-१४)

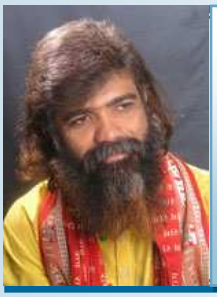

महाभारत - एक अद्भुत ग्रंथ

बाबा सत्य नारायण मौर्य

'बाबा' ..... अनेक विधाओं को अपने अंदर समेटे हुऐ एक अद्भुत व्यक्तित्व..... जिसे एक-दो बार में जाना समझा नहीं जा सकता। सागर सी गहराइयों वाला जीवन जिसमें जितना गहरे उतरो, उतनी ही विविधता मिले.... पर्वत की तरह उन्नत चिंतन, जितना चढ़ो, उतना ही ऊँचा और भी दिखता रहे। संभव है ढूंढने पर ऐसा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति दुनिया में मिल जाये...पर वह गाँव के सीधे-साधे देहातियों से लेकर देश-विदेश के बुद्धि जीवियों तक, महानगरीय सभ्यता में पले बड़े फेशनेबल युवावर्ग से लेकर कस्बाई बुजुर्गों तक, मजदूरों से लेकर व्यापारियों तक, साधु-संतों के आश्रमों से लेकर पश्चिमी रंग में रंगी फिल्मी नगरी तक,.... सभी को समान रूप से अपना सा लगता हो, ऐसा मुश्किल है।

भारत के प्रमुख ग्रंथों में रामायण और महाभारत का नाम विशेष रूप से आता है| लेकिन इन्हें लेकर समाज की धारणाओं में बहुत विरोधाभास है| रामायण की कहानियाँ चाहे जब, चाहे जहाँ सुनाई जाती हैं, पर महाभारत की नहीं| रामायण का मंचन किया जाता है, महाभारत का आमतौर पर नहीं| रामायण का अखंड पाठ हमारी धार्मिक परम्पराओं का अंग है, पर महाभारत का अखंड पाठ? अजी साहब उसके लिए तो समय तय है, बरसात में पढ़ लो| आल्हा-ऊदल की गाथा की तरह उसे भी स्वीकार तो किया गया, पर समाज का अंग नहीं बनाया| यह भी कहा जाता रहा कि महाभारत घर में रखोगे तो लड़ाई-झगड़ा हो जाएगा|

रामायण की कहानियाँ चाहे जब, चाहे जहाँ सुनाई जाती हैं, पर महाभारत की नहीं|

क्या कारण रहा होगा? एक महान ग्रंथ जिसकी रचना स्वयं व्यास जी ने की हो और लेखन भगवान गणेश के द्वारा हुआ हो, उसे जनसामान्य से दूर रखने का प्रयास किया गया| यह जानते हुए कि महाभारत जीवन की सच्चाई है, रामायण को पुरातात्विक आधार पर सिद्ध करना बहुत मुश्किल है, पर महाभारत के तो अवशेष भी उपलब्ध हैं| ढूंढने पर रामायण के पात्रों की तुलना में महाभारत के पात्र हमारे आसपास ही नहीं बल्कि अपने अंदर भी सरलता से मिल जाते हैं|

कुल मिलाकर रामायण आदर्शवादिता के मंदिर की मूर्ति है तो महाभारत हमारे अंदर और बाहर का यथार्थ| यह सब जानने के बाद भी ऐसा भेद इसलिए किया जाता रहा कि **सत्य** अच्छी बात है, पर हर व्यक्ति के लिए हर समय वह शुभ नहीं होता| सत्य **शिवम्** भी होना चाहिए और **सुंदरम्** भी|

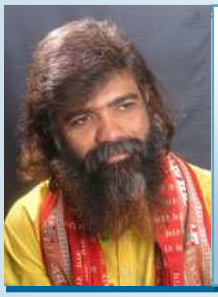

महाभारत - एक अद्भुत ग्रंथ

बाबा सत्य नारायण मौर्य

हर व्यक्ति अपने अंदर कितने राज छिपाए बैठा है| सरकारें कितने ही सत्य जनहित में छिपाकर बैठी हैं| सृष्टि के निर्माता ने सृष्टि की कितनी ही सच्चाइयों को अज्ञानता के अंधेरे में दबाकर रखा है| बच्चों से हम कितने सत्य छिपाकर रखते हैं? हम उन्हें सत्यवादी भी बनाना चाहते हैं, और उनसे कई झूठ भी बोलते हैं|

रामायण पढ़ें और सुनें तो शुरु से तय हो जाता है कि कौन नायक है और कौन खलनायक| कहानी के आरंभ से ही नायक का नायकीकरण और खलनायक का खलनायकीकरण प्रारंभ हो जाता है| पहले ही कदम से मंजिल की दिशा तय हो जाती है, और अंत भी वहीं पर होता है जहाँ से सोचकर यात्रा प्रारंभ की जाती है| पूरी कहानी में कहीं से भी देखो तो **नायक** नायक ही होगा, और **खलनायक** खलनायक ही दिखेगा| जन्म से ही नहीं बल्कि जन्म के पहले से ही तय हो चुका कि कोई भी पात्र अपनी लाइन से जरा भी इधर-उधर नहीं हटेगा| बिल्कुल पुरानी हिंदी फिल्मों की तरह| खलनायक चेहरे-मोहरे से भी खलनायक होता है और चरित्र से भी| बच्चों की कहानी की तरह सरलता लिए होती थीं पुरानी भारतीय फिल्में, जिनमें गाना, बजाना, नृत्य आदि सब कुछ होता था, और खलनायक के आतंक का डंका बजता था| नायक पिटता था पर अंत में नायक की जीत होती थी और फिल्म समाप्त| पर फिर अंतर आया..... कहानी का अंत नायक की मृत्यु से होने लगा| फिर ऐसी कहानियाँ भी आईं जिन्होंने किसी निर्णय पर नहीं पहुँचाया, कहानी को किसी मोड़ पर ही छोड़ दिया| इन फिल्मों को ऐसे ही आधार पर युगों में बाँटा जाता है|

ठीक यही बड़े रूप में बड़े युगों की गाथा है| रामायण पुरानी फिल्मों की तरह है तो महाभारत आज-कल की नई फिल्मों की तरह... नई सत्यकथाओं की तरह जिनमें नायक पूरा नायक नहीं और खलनायक भी पूरा खलनायक नहीं| जिसमें लेखक अपनी बात दर्शकों पर नहीं थोपता| सत्य का यथार्थ दर्शन कराता है और फिर निर्णय दर्शकों के विवेक पर छोड़ देता है| सरल शब्दों में कहा जाए तो अच्छी ब्रांड का बना बनाया "पैक्ड फूड" है रामायण, जिसके ऊपर अच्छे होने की मोहर भी है| पर महाभारत.... महाभारत तो खुला सामान है, आटा, दाल, मसाले, तेल सब कुछ है यहाँ, और बनाने की कई तरह की विधियाँ भी| जैसा

रामायण पुरानी फिल्मों की तरह है तो महाभारत आज-कल की नई फिल्मों की तरह...

महाभारत - एक अद्भुत ग्रंथ

बाबा सत्य नारायण मौर्य

बनाना हो बनाइये, सारे मसाले अच्छे हैं जिनके बिना काम नहीं चलता| पर जरा भी कम ज्यादा हुआ तो बड़ी दिक्कत हो जाती है| इसलिए छोटे बच्चों को हम बना-बनाया भोजन देते हैं और समझदार को रसोईघर|

आम समाज महाभारत में घुसेगा तो क्या पाएगा? यहाँ नायक पूरा नायक नहीं...खलनायक पूरा खलनायक नहीं| भीष्म, युधिष्ठिर, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण, द्रोपदी, सभी में अच्छाइयाँ भी हैं तो बुराइयाँ भी| कभी लगता है दुर्योधन का स्वभाव झगड़े का कारण है तो कभी लगता है शकुनी इस अनर्थ की जड़ है, और कभी द्रोपदी का वाक्य कि अंधे की संतान भी अंधी होती है|

एक बात और भी मजेदार है| रामायण में जीत पूरी जीत है और हार पूरी हार| यदि जीत में दुख का थोड़ा भी अंश था तो उसे भी कल्पना की रबड़ से मिटा दिया गया| युद्ध में राम के पक्ष के जो लोग मारे गए उन्हें भी अमृत छिड़क कर जिंदा कर दिया| यानि जीत सौ प्रतिशत| पर महाभारत...? महाभारत की जीत में भी हार है और हार में भी जीत| पांडव जीतकर भी हार से ज्यादा दुखी होते हैं| हिमालय की बर्फ ने उनके शरीर को गला दिया, पर उनके मानसिक ताप को गला पाई या नहीं... पता नहीं| अपनों को खोकर पाई गई जीत उनके लिए हार से भी अधिक दुखदाई हो गई| द्रोपदी ने बदला ले लिया, लेकिन बदले में क्या मिला?

दूसरी ओर शकुनि का पक्ष हारा, लेकिन अपने उद्देश्य में वह सफल रहा| कर्ण को कोई क्या कहेगा... अच्छा या बुरा? हमारी स्थिति भी कुंती की तरह हो जाती है|

देवताओं में विवाह परंपरा का स्वरूप मनुष्यों की तरह नहीं रहा| इसलिए अवैध संबंधों और अवैध संतानों वाली बात देव संस्कृति में नहीं रही| मनुष्य जाति ने देवों को सम्मान तो दिया परंतु देवताओं की यौन स्वतंत्रता को नहीं स्वीकारा| यह वैसा ही है जैसे भारतीय अमेरिका जैसा भोगवादी जीवन तो जीना चाहते हैं पर चरित्र भारतीय परम्पराओं के अनुरुप ही बनाए रखने का सोचते हैं|

रामायण की अहिल्या के संबंध में श्रीराम ने जो उदार दृष्टिकोण अपनाया, यदि राजा राम ने सीता के संबंध में उसी का आग्रह किया होता या समाज ने व्यापक सोच के अंतर्गत उसे कुछ प्रावधानों के तहत स्वीकार्यता दे दी होती तो आगे चलकर महाभारत में कर्ण का मुद्दा न उठता| मैं इस विषय को सही या गलत नहीं बता रहा हूँ, महाभारत की ही तरह सत्य सामने रख रहा हूँ| आज असंख्य मुस्लिम हमारी उन माँ-बहिनों की संतानें हैं जो हमारी कमजोरी के कारण हरण कर ली गईं और हमारी ही हठ धर्मिता के कारण वापिस हिंदू न बन पाईं| इतिहास के कई प्रसंग बताते हैं कि हमने ऐसे कार्यों को खुद दुर्योधन के पक्ष में दीक्षित किया है|

महाभारत - एक अद्भुत ग्रंथ

बाबा सत्य नारायण मौर्य

अब कई संगठन उन गलतियों को ठीक करके उन्हें स्वीकारना चाहते हैं, पर यह वैसा ही असफल प्रयास है जैसा कर्ण को वापिस लौटाने के लिए कृष्ण और कुंती ने किया था|

गरीबी की चोट आदमी को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है| अर्जुन के साथ दिल और दुर्योधन के साथ शरीर रहे, द्रोण इस पीड़ा के जागृत स्वरूप हैं|

महाभारत का लगभग हर पात्र अपने आप में असंख्य पीड़ाएँ और अंतर्द्वन्द लिए घूमता नजर आता है| अपने जीवन के हर प्रसंग में आदमी किसी न किसी महाभारतीय पात्र से साम्यता अवश्य महसूस करता ही है| किसी कवि की पंक्तियाँ हैं - “हरेक चेहरे में होते हैं दस बीस चेहरे| जिसे भी देखना दस बीस बार देखना”| यही है महाभारत के पात्रों की सच्चाई|

इस महाभारत के मुख्य आधार श्रीकृष्ण, श्रीराम की तरह जीवन जीकर नहीं दिखाते| आपको दुनिया की सच्चाई दिखाते हैं और कहते हैं, यह दुनिया है, यह ऐसी ही रहेगी| यहाँ जीना है तो लड़ाई तो लड़नी ही पड़ेगी| भाई-भाई में भी, परिवार में भी, देशों में भी, और अलग-अलग संस्कृतियों में भी| लड़ाई रोकने का प्रयास कृष्ण ने भी किया था, पर लड़ना ही पड़ा| और यह भी बता दिया कि तुम्हारा लड़ना हार-जीत के लिए नहीं होना चाहिए| यह दुनिया है, यहाँ हार में जीत है और जीत में हार है| इस जीत हार से निर्लिप्त न हो यही कृष्ण की गीता का सार है|

महाभारत में जीवन के ये सारे सच इतने खुले रूप में दिख गए कि लोग उससे डरने लगे| कद्र भी करते हैं और डरते भी हैं| खैर सीरीयल आने के बाद लोग जानने-समझने लगे| घरों में महाभारत के चित्र भी लगाने लगे| पर रामायण की तरह इसका पारायण?.... नारायण-नारायण!

सत्यनारायण की कथा हो सकती है, पर सत्य को पूरा अपनाया नहीं जा सकता| इसलिए युधिष्ठिर के सत्य से ज्यादा कृष्ण का असत्य अच्छा लगता है| विडम्बना यही है कि श्रीकृष्ण का देश आज के महाभारत में सत्य को अपना रहा है, पर कौन सा सत्य.... युधिष्ठिर का| निष्ठा को मानता है पर.....कर्ण की निष्ठा| अपने वचन का पालन करना चाह रहा है, पर युधिष्ठिर जैसे|

सब अपने-अपने जीवनवृत्त को पूरा करने में लगे हुए हैं, बस एक ही गड़बड़ है, धुरी का पता नहीं| वह धुरी जो कृष्ण के रूप में विराजित है, यदि वह मिल जाए तो महाभारत भी रामायण की तरह सुखद हो जाए|

महाभारत और रामायण

देवेंद्र सिंह

महाभारत बहुत ही गूढ़ ग्रंथ है, और इसे समझने के लिए एक लंबी-चौड़ी प्रस्तावना और कुछ और ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है। महाभारत की जटिलता देख कर बहुत से लोग इसे पढ़ने व समझने का प्रयत्न नहीं करते। परंतु जो ज्ञान महाभारत में छुपा है, यदि हम वह जान लें तो जीवन में आने वाली सारी कठिनाईयों का सामना हम पक्के आत्मबल और आत्मविश्वास से कर सकते हैं।

यदि रामायण को हम अपने हृदय की तरह मान लें, और महाभारत को मस्तिष्क की तरह, तो इन महाग्रंथों की तुलना करना अधिक बोधगम्य होगा। जिस प्रकार कोई भी निर्णय लेने में हृदय व मस्तिष्क दोनों का भरपूर समन्वय होना चाहिए, उसी प्रकार किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए रामायण व महाभारत की घटनाओं को उनके लाक्षणिक संदर्भ में देखना आवश्यक है।

रामायण के नायक श्रीराम हैं, और महाभारत के मार्गप्रदर्शक श्रीकृष्ण हैं। श्रीकृष्ण की कुछ लीलाएँ इतनी विविधितापूर्ण और प्रत्यक्ष में विरोधाभासी प्रतीत होती हैं, कि उन्हें पढ़ कर श्रीकृष्ण के चरित्र के बारे में किसी नवदीक्षित को, जिसने भारतीय इतिहास का सही अध्ययन न किया हो, गलत धारणा बनाने की ओर प्रेरणा मिल सकती है। श्रीकृष्ण को यदि समझना है तो पहले मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का अध्ययन करने और उसे अपनाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार महाभारत समझने के लिए पहले रामायण का गहन अध्ययन आवश्यक है।

पाश्चात्य संस्कृति में अधिकतर कार्य मस्तिष्क को अग्रणी रखकर ही किए जाते हैं। हृदय की आंतरिक समीक्षा को ज्यादातर अनदेखा कर दिया जाता है। यह तकनीकी विकास का परिणाम है जिसने मस्तिष्क को पनपने के लिए तो भरपूर खाद उपलब्ध करवाई है, परंतु हृदय की भावनाओं को दबाने के लिए समाज ने सहज स्वीकृति दी है। भावनाओं की उपेक्षा करने से पारिवारिक संबंध टूटते एवं बिखरते जा रहे हैं।

यदि समाज रामायण (हृदय) को अच्छी तरह से समझ कर और उससे प्रेरणा लेकर महाभारत (मस्तिष्क) की शिक्षा का उपयोग करे तो यह धरती स्वर्ग बन सकती है। रामायण भाव-प्रधान है, इसलिए वह सीधे-सीधे हृदय में प्रवेश कर जाती है। दूसरी ओर महाभारत कर्म-प्रधान है, जिसमें धर्म की रक्षा करने के लिए सब कुछ न्योछावर कर सात्विक कर्म करने की शिक्षा दी गई है।

महाभारत भक्ति की एक आदर्श पराकाष्ठा है। वह भक्ति जिसमें हृदय से समझ कर ज्ञानपूर्ण कर्म किया गया है। जब अर्जुन के हृदय में कर्म की सही परिभाषा समा गई, और उसे सही ज्ञान की राह मिली, तो उसका कर्म श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति बन

महाभारत और रामायण

देवेंद्र सिंह

गया।

आजकल की भक्ति अधूरी है, उसमें दिखावा एवं ढ़कोसलापन ज्यादा है। इस भक्ति में डर है, निर्भीकता नहीं, इसमें गुलामी है, स्वतंत्रता नहीं। यह शायद इसलिए कि हम लोगों ने महाभारत का बुद्धिमतापूर्वक अध्ययन नहीं किया। बहुत से लोग तो महाभारत को घर में रखने से भी डरते हैं। इससे अधिक अज्ञान और मूर्खता क्या होगी कि हमनें ज्ञान के भंडार को ही अपने से दूर रखने का प्रयास किया है।

आज विश्व को आवश्यकता है कि वह भावनाओं से ओत-प्रोत होकर और निर्भीकता का कवच पहन कर ज्ञानपूर्वक कर्म करे। यही महाभारत की सच्ची शिक्षा है। इसके बिना विश्व में शांति स्थापित करना असंभव है।

महाभारत - एक "धर्मयुद्ध"

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

"जब-जब धर्म की हानि होने लगती है और अधर्म बढ़ने लगता है, तब-तब मैं स्वयं की सृष्टि करता हूँ, अर्थात् जन्म लेता हूँ। सज्जनों की रक्षा एवं दुष्टों के विनाश और धर्म की पुनःस्थापना के लिए मैं विभिन्न युगों (कालों) में अवतरित होता हूँ।"

प्रभात अग्रवाल

महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है। हिन्दू मान्यताओं, पौराणिक संदर्भो एवं स्वयं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार वेदव्यास जी को माना जाता है। महाभारत चंद्रवंशियों के दो परिवारों, कौरव और पाण्डव के बीच हुए युद्ध का वृत्तांत है। महाभारत युद्ध होने का मुख्य कारण कौरवों की उच्च महत्वाकांक्षाएँ और धृतराष्ट्र का पुत्र मोह था। १०० कौरव भाइयों और पाँच पाण्डव भाइयों के बीच भूमि के लिए जो संघर्ष चला उससे अंतत: महाभारत युद्ध का सृजन हुआ। पाण्डवों के पास सात अक्षौहिणी सेना थी और कौरवों के साथ ग्यारह अक्षौहिणी सेना थी। दोनों पक्षों की सेनाएँ पूर्व तथा पश्चिम की ओर मुख करके खड़ी हो गयीं। कौरवों की तरफ से भीष्म और पाण्डवों की तरफ से अर्जुन सेना का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। कुरुक्षेत्र के केवल ५ योजन (४० किलोमीटर) के क्षेत्र के घेरे में दोनों पक्षों की सेनाएँ खड़ी थीं। युद्ध से पूर्व अर्जुन श्रीकृष्ण से अपने रथ दोनों सेनाओं के मध्य में ले जाने को कहते हैं जिससे वह यह देख लें कि युद्ध में उसे किन-किन योद्धाओं का सामना करना है। जब अर्जुन युद्ध क्षेत्र में अपने गुरु द्रोण, पितामह भीष्म एवं अन्य संबंधियों को देखता है तो वह बहुत शोकग्रस्त एवं उदास हो जाता है। वह श्रीकृष्ण से कहता है कि जिनके लिये हम ये सारे राजभोग प्राप्त करना चाहते हैं, वे तो यहाँ इस युद्ध क्षेत्र में उसी राजभोग की प्राप्ति के लिये हमारे विपक्ष में खड़े हैं। इन्हें मारकर हम राज प्राप्त करके भी क्या करेगें। अतएव मैं युद्ध नहीं करूँगा, ऐसा कहकर अर्जुन अपना धनुष रखकर रथ के पिछले भाग में बैठ जाता है। तब श्रीकृष्ण योग में स्थित होकर उसे गीता का ज्ञान देते हैं और कहते हैं कि संसार में जो आया है उसे एक ना एक दिन जाना ही पड़ेगा। यह शरीर और संसार दोनों नश्वर हैं परन्तु इस शरीर के अन्दर रहने वाली आत्मा शरीर के मरने पर भी नहीं मरती। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्र त्याग कर नये वस्त्र पहनता है उसी प्रकार आत्मा भी पुराना शरीर त्याग कर नया शरीर धारण करती है इसको तुम ऐसे समझो कि यह सब प्रकृति तुम से करवा रही है तुम केवल निमित्त मात्र हो।

महाभारत - एक "धर्मयुद्ध"

श्रीकृष्ण अर्जुन को ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग तीनों की शिक्षा देते हैं जिसे सुनकर अर्जुन युद्ध के लिये तैयार हो जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है। जिस प्रकार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं में उलझकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसके पश्चात् जीवन के समरांगण से पलायन करने का मन बना लेता है उसी प्रकार अर्जुन जो महाभारत का महानायक है, अपने सामने आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर जीवन और क्षत्रिय धर्म से निराश हो गया है, अर्जुन की भाँति ही हम सभी कभी-कभी अनिश्चय की स्थिति में या तो हताश हो जाते हैं और या फिर अपनी समस्याओं से उद्विग्न होकर कर्तव्य विमुख हो जाते हैं। भारतवर्ष के ऋषियों ने गहन विचार के पश्चात् जिस ज्ञान को आत्मसात् किया उसे उन्होंने वेदों का नाम दिया। इन्हीं वेदों का अंतिम भाग उपनिषद् कहलाता है। मानव जीवन की विशेषता मानव को प्राप्त बौद्धिक शक्ति है और उपनिषदों में निहित ज्ञान मानव की बौद्धिकता की उच्चतम अवस्था तो है ही, अपितु बुद्धि की सीमाओं के परे मनुष्य क्या अनुभव कर सकता है उसकी एक झलक भी दिखा देता है। उसी औपनिषदीय ज्ञान को महर्षि वेदव्यास ने सामान्य जनों के लिए गीता में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है।

श्री कृष्ण का विराट रूप एवं अर्जुन को गीता उपदेश देते हुए

महाभारत के युद्ध में भगवदावतार श्रीकृष्ण की गंभीर भूमिका थी, और उन्होंने अपने हथियार डालने को उद्यत अर्जुन को 'धर्मयुद्ध' लड़ने को प्रेरित किया, अर्जुन को ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग की शिक्षा और ईश्वर धर्म की स्थापना के लिए पुनः -पुनः जन्म लेता है ज्ञान का दर्शन दिया।

भारत में महाभारत

प्रोफ़ेसर (डॉ.) राजीव शर्मा

ब्लॉग: www.kavirajeevsharma.com विपत्र: kavirsharma@yahoo.co.uk

इंदौर के कवि, प्रोफ़ेसर श्री राजीव शर्मा, एक बहुआयामी सफल व्यक्तित्व का नाम है| आप एक सुविख्यात राष्ट्रीय-हास्य व्यंग के कवि हैं| साथ ही प्रसिद्ध वक्ता एवं पत्रकार भी हैं| वक्तृत्व कला के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए प्रोफ़ेसर राजीव शर्मा को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपतियों महामहिम ज्ञानी जैलसिंह तथा डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया हैं| पांच सौ राज्य एवं राष्ट्रस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विजेता होने की उपलब्धि के कारण गिनेस बुक ऑफ़ रेकॉर्ड्स में प्रो.राजीव शर्मा का नाम संम्मिलित रहा हैं| डॉ. शर्मा, इंदौर (म. प्र.) की टी.वी. न्यूज़ चैनल "एस.आर.टी.वी." के प्रधान सम्पादक का दायित्व संभाल रहे हैं तथा शैक्षणिक राष्ट्रीय समाचार पत्र "अल्मा टाइम्स" के प्रधान सम्पादक हैं| अभी तक आपकी ९ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं| आपने नई महाभारत फिल्म के गीत, संवाद लिखे हैं जिसमें हेमा मालिनी, राजेन्द्र कुमार व मुकेश खन्ना जैसे दिग्गज फिल्मी कलाकारों ने अभिनय किया है| प्रो. शर्मा प्रतिष्ठित शिक्षाविद हैं तथा मंच एवं टी.वी. के तीन सौ से अधिक कार्यक्रमों का संचालन कर चुके हैं| कविवर शर्मा अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों का आयोजन कश्मीर से रामेश्वरम तथा मुंबई से दिल्ली तक में सफलता पूर्वक कर चुके हैं| एम.ए.-पी.एचडी., बी.म्युज़ की शैक्षणिक उपलब्धियाँ प्रोफ़ेसर राजीव शर्मा ने प्रथम श्रेणी प्रावीण्य सूचि के साथ अर्जित की हैं| भारत के अनेक समाचार पत्रों के नियमित स्तंभकार हैं, टी.वी.सीरियल्स के निर्माता तथा संगीतकार होने के नाते आप संगीत जगत की ख्यात संस्था अखिल भारतीय संगम कला ग्रुप की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष भी हैं| अभी तक कुल जमा एक हज़ार से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित प्रोफ़ेसर शर्मा आई.के.कॉलेज, इंदौर में विगत दो दशकों से भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं| आपके निर्देशन में कई छात्रों ने पी.एचडी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं|

प्रस्तुत 'भारत में महाभारत' एक जीवन्त कविता, इन्होंने हमारे विशेष आग्रह पर 'कर्मभूमि' के इस विशेषांक के लिए ही लिखी है|

रूस में नहीं हुआ महारूस,

जापान में नहीं हुआ महाजापान,

चीन में नहीं हुआ महाचीन,

मगर भारत में हुआ महाभारत,

क्यों------?

क्योंकि भारत शब्द के मायने है अन्धकार पर प्रकाश की जय,

जब-जब अन्याय का तिमिर धरती पर छाने लगता है,

तब-तब गीता का प्रकाश, दुनिया में आने लगता है|

दुर्योधन, दु:शासन, धृतराष्ट्र – केवल व्यक्ति नहीं हैं, विकृतियाँ हैं

विदुर, श्री कृष्ण, युधिष्ठिर केवल नाम नहीं हैं, संस्कृतियाँ हैं

प्रवृत्ति बिगड़ती है विकृति हो जाती है

प्रवृत्ति सँवरती है संस्कृति हो जाती है

विकृतियों के तांडव से महाभारत उपजता है

हर महाभारत में गीता का बोध सिरजता है

बोध जो सुदर्शन चक्रधारी हैं इसकी अपनी

भारत में महाभारत

बलिहारी है

यह कोई अस्त्र-शास्त्र नहीं है, ना ही कोई आयुध है

ये सकारात्मकता की प्रबल इच्छाशक्ति हैं, ये ही ज्ञान हैं, वैराग्य हैं, परमभक्ति हैं

ये फल रहित कर्म हैं जो श्रेष्ठी का धर्म हैं

श्रेष्ठी जानता हैं, मानता है सुयानी अच्छा दर्शन यानी विचार

चक्र यानी घूर्णन, सुदर्शन चक्र मतलब अच्छें विचारों का चक्र

व्यक्ति, शक्ति या आसक्ति अमर नहीं हैं, ना ही ये राज करते हैं

वो विचार ही हैं जो साम्राज्य करते हैं

अत:

सुदर्शन चक्र चलाते रहिये

बुराई पर विजय पाते रहिये

हर व्यक्ति का मन कुरुक्षेत्र है, संदेह, शंका, कुशंका अर्जुन का प्रलाप हैं

ज्ञानोदय श्रीमदभगवतगीता है

अंधा संतान प्रेम धृतराष्ट्र है

सच्चाई का उदघोष विदुर है

अहंकार, दुर्योधन और लंपटता दु:शासन,

गुरुभक्ति की एकाग्रता एकलव्य है

कठोर व्रती भीष्म हैं, सत्यनिष्ठा युधिष्ठिर है

इन सबके बीच नैतिकता की पांचाली को

जो निर्वस्त्र होने से बचाता है, शकुनी की चालों को धूल चटाता है

भाई बनकर राखी का फ़र्ज़ निभाता है

वह कर्मयोद्धा

महाभारत का सबसे बड़ा अलौकिक नायक श्रीकृष्ण कहलाता है |

"धर्म करते हुए मर जाना अच्छा है पर पाप करते हुए विजय प्राप्त करना अच्छा नहीं।"

- महाभारत

रचिता सिंह

क्या "महाभारत" को घर में नहीं रखना चाहिए?

एक दिन एक विद्वान सज्जन हमारे घर आए तो हमारे हिंदी साहित्य का संकलन देखकर बड़े प्रसन्न हुए, किंतु जैसे ही उनकी दृष्टि महाभारत पर पड़ी, उनकी प्रसन्नता अचानक ही कहीं विलीन हो गई| हमें अपनेपन से समझाते हुए बोले - "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि महाभारत घर में रखना बड़ा अशुभ होता है| कहते हैं महाभारत जहाँ रहती है वहाँ सदैव ही महाभारत मची रहती है|" मैंने उनसे पूछा कि यह बात उन्हें किसने बताई तो वे बोले कि यह तो सभी जानते हैं| हमारे बुजुर्गों ने अपने बुजुर्गों से यही जाना है|

उन सज्जन के जाने के बाद मैं सोचती रही कि क्या यह बात सच है? किंतु इस अंतर्द्वन्द में हर बार मेरी अंतरात्मा ने यही तर्क मुझे दिया कि जिस ग्रंथ के रचनाकार महर्षि वेदव्यास जी तथा लिपिकार स्वयं बुद्धि के देवता तथा देवों में सर्वश्रेष्ठ श्री गणेश जी हों, जिसके गीता रूपी अंश में स्वयं श्री नारायण समाए हों, जैसे ग्रंथ में प्रारंभ से अंत तक शिक्षा तथा संदेश ही मिलते हों, वह ग्रंथ अशुभ कैसे हो सकता है?

यह सत्य है कि इस ग्रंथ की गणना हमारे पूज्यनीय ग्रंथों में नहीं होती, पर इसी का एक अंश "भगवद गीता" हमारा परम पूज्यनीय ग्रंथ है| भगवद गीता में स्वयं भगवान अपने विराट रूप के दर्शन देकर अपने शिष्य को संदेश देते हैं| यह संदेश प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए है जो अर्जुन की तरह समर्पण के लिए तथा अर्जन के लिए तैयार है| यही कारण है कि "भगवद गीता" वेदों के बाद हिंदुओं का द्वितीय धर्म-ग्रंथ बन गया| वेदों में शिव की वाणी संदेश बनकर समाई है तो गीता में कृष्ण का संदेश मित्रता बनकर समाया है|

इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि भगवद गीता के अतिरिक्त जो महाभारत है वह पूज्यनीय ग्रंथ नहीं है| किंतु इससे इसका महत्व गौण नहीं हो जाता| महाभारत की कहानियों का संदेश और उनमें विद्यमान शिक्षा अपना अलग महत्व रखते हैं| पंचतंत्र, हितोपदेश, तथा जातक कथाएँ इसी प्रकार के ग्रंथ हैं जो हमारे ऋषियों ने हमारे कल्याण तथा हमें विपदाओं से बचाने के लिए लिखे थे| ये ग्रंथ भी पूज्यनीय नहीं माने जाते, किंतु आज ये कहानियाँ भारतीय संस्कृति की रग-रग में बसी हुई हैं|

जहाँ रामायण और गीता आदर्श की शिक्षा देकर हमारे लिए पूज्यनीय और अनुकरणीय हो गए हैं, वहीं महाभारत एक आम व्यक्ति के जीवन की कड़वी सच्चाई है, जो हमें यह चेतावनी देती है कि जीवन में हम कम से कम त्रुटियाँ करें और अधिक से अधिक धर्म के मार्ग पर रहें| इसके लिए वह हमारे ही जैसे साधारण आदमी की कहानी के माध्यम से हमें यह बताती है कि हमारे लिए क्या अनुकरणीय है, और हमें किन

क्या "महाभारत" को घर में नहीं रखना चाहिए?

व्यक्तियों तथा परिस्थितियों से परहेज करना चाहिए| जहाँ रामायण हमें परिवार तथा समाज से प्रेम सिखाती है, वहीं महाभारत हमें परिवार में छुपे ईर्ष्यालु संबंधियों तथा मित्रों से सावधान तथा दूर रहने की शिक्षा देती है| महाभारत भीष्म की भीषण प्रतिज्ञा को अनुचित ठहराती है, क्योंकि उस प्रतिज्ञा में पितृ-प्रेम तो है किंतु साथ ही समाज, राज्य तथा राज्यसिंहासन का अहित छुपा है| दूसरी ओर रामायण में राम का पितृ-प्रेम तथा आज्ञा पालन का प्रण उचित बताया गया है, क्योंकि यह वनवास दशरथ के राज्य में फैली अराजकता तथा रावण जैसे राक्षस के अंत का माध्यम बना|

रामायण एक ऐसे परिवार की कथा है जहाँ परिवार का हर सदस्य एक दूसरे से प्रेम करता है तथा त्याग और बलिदान की मिसाल बनना चाहता है, वहीं महाभारत में भाई ही भाई का शत्रु बनकर उसका तथा परिवार का सुख-चैन छीन लेता है, और स्थिति महायुद्ध की आ जाती है|

जहाँ रामायण हमें बताती है कि परिवार में और समाज में हमें कैसे रहना चाहिए, वहीं महाभारत हमें आत्म-अवलोकन के लिए प्रेरित करती है और सावधान करती है कि हम कौरव जैसा जीवन न जिएँ और पाँडवों जैसी गल्तियाँ न करें|

यदि हम ध्यान से विचार करें तो हम स्वयं को महाभारत का पात्र पाएँगे| महाभारत की कहानी हर परिवार की कहानी है, हर सत्ता और समाज की कहानी है| महाभारत जितनी हजारों वर्ष पहले सत्य थी, आज भी उतनी ही सत्य है| हमें समाज में अनेक दुर्योधन अनीति से सत्ता का उपभोग करते आज भी मिल जाएँगे, और कुछ पाँडव भी मिल जाएँगे जो धर्म के नाम पर गरीबी का वनवास काट रहे हैं| महाभारत को जीना बहुत आसान है, क्योंकि उसके लिए हमें प्रयत्न नहीं करना पड़ता| महाभारत मानव स्वभाव का पर्याय है|

यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन रामायण के अधिक निकट हो और महाभारत से दूर हो तो हमें महाभारत को पढ़कर अपने जीवन की बुराइयों को पहचानना होगा, उन्हें अर्जुन की तरह ज्ञान प्राप्त करके दूर करना होगा| बच्चों को एक पवित्र वातावरण में बड़ा कर, धर्म और अधर्म में अंतर पहचानना सिखाना होगा| महाभारत एक माँ को अच्छी माँ बनना सिखा सकती है| जो त्रुटि गाँधारी ने आँख पर पट्टी बाँधकर की, वह त्रुटि माँओं को बहुत भारी पड़ सकती है| पिता, धृतराष्ट्र की त्रुटियों से शिक्षा ले सकते हैं| जब हम अपनी महत्वाकाक्षाओं को साकार करने के लिए बच्चों की गल्तियों को बढ़ावा देते हैं तो बड़े होकर वे ही बच्चे धृष्ट और उद्दंड हो जाते हैं| इसी प्रकार और भी कई संबंधों को जीना महाभारत हमें सिखाती है| हम आज जो कर रहे हैं, उसके परिणाम भी हमें बताती है| अब यह निर्णय हमें करना है कि ऐसे उपयोगी और माँ की तरह चेतावनी देकर गिरने से बचाने वाले ग्रंथ को हमें घर में रखना है या अशुभ मानकर घर से बाहर निकालना है?

कर्ण

प्रमिला अग्रवाल - शिक्षिका, मध्यामा-२, सऊथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला

महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है। कर्ण महाभारत के सबसे प्रमुख पात्रों में से एक है। कर्ण की वास्तविक माँ कुंती थी। कर्ण दुर्योधन का सबसे अच्छा मित्र था, और महाभारत के युद्ध में वह अपने भाईयों के विरुद्ध लड़ा। वह सूर्य पुत्र था। कर्ण को एक आदर्श दानवीर माना जाता है, क्योंकि कर्ण ने कभी भी किसी माँगने वाले को दान में कुछ भी देने से मना नहीं किया भले ही इसके परिणामस्वरूप उसके अपने ही प्राण संकट में क्यों ना पड़ गए हों।

कर्ण की छवि आज भी भारतीय जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो जीवनभर प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता रहा। बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि कर्ण को कभी भी वह सब नहीं मिला जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था। तर्कसंगत रूप से कहा जाए तो हस्तिनापुर के सिंहासन का वास्तविक अधिकारी कर्ण ही था क्योंकि वह कुरु राजपरिवार से ही था और युधिष्ठिर और दुर्योधन से ज्येष्ठ था, लेकिन उसकी वास्तविक पहचान उसकी मृत्यु तक अज्ञात ही रही।

कर्ण को एक दानवीर और महान योद्धा माना जाता है। कर्ण को उसके गुरु परशुराम और पृथ्वी माता से श्राप मिला था। गुरु द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की शिक्षा पूरी होने पर हस्तिनापुर में एक रंगभूमि का आयोजन करवाया। रंगभूमि में अर्जुन विशेष धनुर्विद्या युक्त शिष्य प्रमाणित हुआ। तभी कर्ण रंगभूमि में आया और अर्जुन द्वारा किए गए करतबों को पार करके उसे द्वंदयुद्ध के लिए ललकारा। तब कृपाचार्य ने कर्ण के द्वंदयुद्ध को अस्वीकृत कर दिया और उससे उसके वंश और साम्राज्य के विषय में पूछा - क्योंकि द्वंदयुद्ध के नियमों के अनुसार केवल एक राजकुमार ही अर्जुन को, (जो हस्तिनापुर का राजकुमार था) द्वंदयुद्ध के लिए ललकार सकता था। तब कौरवों में सबसे ज्येष्ठ दुर्योधन ने कर्ण को अंगराज घोषित किया जिससे वह अर्जुन से द्वंदयुद्ध के योग्य हो जाए। जब कर्ण ने दुर्योधन से पूछा कि वह उससे इसके बदले में क्या चाहता है, तब दुर्योधन ने कहा कि वह केवल ये चाहता है कि कर्ण उसका मित्र बन जाए।

इस घटना के बाद महाभारत के कुछ मुख्य संबंध स्थापित हुए, जैसे दुर्योधन और कर्ण के बीच सुदृढ़ संबंध बनें, कर्ण और अर्जुन के बीच तीव्र प्रतिद्वंदिता, और पाण्डवों तथा कर्ण के बीच वैमनस्य। कर्ण, दुर्योधन का एक निष्ठावान और सच्चा मित्र था। यद्यपि वह दुर्योधन को खुश करने के लिए द्यूतक्रीड़ा में भागीदारी करता है, लेकिन वह आरंभ से ही इसके विरुद्ध था। कर्ण शकुनि को पसंद नहीं करता था, और सदैव दुर्योधन को यही परामर्श देता कि वह अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए

कर्ण

अपने युद्ध कौशल और बाहुबल का प्रयोग करे, न कि कुटिल चालों का। दुर्योधन के साथ शांति वार्ता के विफल होने के पश्चात श्रीकृष्ण, कर्ण के पास जाते हैं, जो दुर्योधन का सर्वश्रेष्ठ योद्धा है। वह कर्ण का वास्तविक परिचय उसे बताते हैं, कि वह सबसे ज्येष्ठ पाण्डव है और उसे पाण्डवों की ओर आने का परामर्श देते हैं। कृष्ण उसे यह विश्वास दिलाते हैं चूंकि वह सबसे ज्येष्ठ पाण्डव है, इसलिए युधिष्ठिर उसके लिए राजसिंहासन छोड़ देंगें, और वह एक चक्रवती सम्राट बनेगा। परन्तु कर्ण इन सबके बाद भी पाण्डव पक्ष में युद्ध करने से मना कर देता है, क्योंकि वह अपने आप को दुर्योधन का ऋणी समझता था, और उसे ये वचन दे चुका था कि वह मरते दम तक दुर्योधन के पक्ष में ही युद्ध करेगा। वह कृष्ण को यह भी कहता है कि जब तक वे पाण्डवों के पक्ष में हैं जो कि सत्य के पक्ष में हैं, तब तक उसकी हार भी निश्चित है। तब कृष्ण कुछ उदास हो जाते हैं, लेकिन कर्ण की निष्ठा और मित्रता की प्रशंसा करते हैं, और उसका यह निर्णय स्वीकार करते हैं, और उसे यह वचन देते हैं कि उसकी मृत्यु तक वह उसकी वास्तविक पहचान गुप्त रखेंगे।

देवराज इन्द्र को इस बात का ज्ञान होता है कि कर्ण युद्धक्षेत्र में तब तक अपराजेय और अमर रहेगा जब तक उसके पास उसके कवच और कुण्डल रहेंगे, जो जन्म से ही उसके शरीर पर थे। इसलिए जब कुरुक्षेत्र का युद्ध आसन्न था, तब इन्द्र ने यह ठानी कि वह कवच और कुण्डल के साथ तो कर्ण को युद्धक्षेत्र में नहीं जाने देंगे। उन्होनें ये योजना बनाई कि मध्याह्न में जब कर्ण सूर्य देव की पूजा कर रहा होता है तब वह एक भिक्षुक बनकर उससे उसके कवच-कुण्डल माँग लेंगे। सूर्यदेव इन्द्र की इस योजना के प्रति कर्ण को सावधान भी करते हैं, लेकिन वह उन्हें धन्यवाद देकर कहता है कि उस समय यदि कोई उससे उसके प्राण भी माँग ले तो वह मना नहीं करेगा। तब सूर्यदेव कहते हैं कि यदि वह स्ववचनबद्ध है, तो वह इन्द्र से उनका अमोघास्त्र माँग ले। तब अपनी योजनानुसार इन्द्रदेव एक भिक्षुक का भेष बनाकर कर्ण से उसका कवच और कुण्डल माँग लेते हैं। चेताए जाने के बाद भी कर्ण मना नहीं करता और हर्षपूर्वक अपना कवच-कुण्डल दान कर देता है। तब कर्ण की इस दानप्रियता पर प्रसन्न होकर वह उसे कुछ माँग लेने के लिए कहते हैं, लेकिन कर्ण यह कहते हुए कि "दान देने के बाद कुछ माँग लेना दान की गरिमा के विरुद्ध है", मना कर देता है। तब इन्द्र उसे अपना शक्तिशाली अस्त्र वासवी प्रदान करते हैं, जिसका प्रयोग वह केवल एक बार ही कर सकता था। इसके बाद से कर्ण का एक और नाम वैकर्तन पड़ा, क्योंकि उसने बिना संकुचित हुए अपने शरीर से अपने कवच-कुण्डल काट कर दान दे दिए।

जब महाभारत का युद्ध निकट था, तब माता कुंती, कर्ण से भेंट करने गई और उसे उसकी वास्तविक पहचान का ज्ञान कराया। वह उसे बताती हैं

कर्ण

कि वह उनका पुत्र है और ज्येष्ठ पाण्डव है। वह उससे कहती हैं कि वह स्वयं को 'कौन्तेय' (कुन्ती पुत्र) कहे नाकी 'राधेय' (राधा पुत्र), और तब कर्ण उत्तर देता है कि वह चाहता है कि सारा संसार उसे राधेय के नाम से जाने न कि कौन्तेय के नाम से। कुंती उसे कहती हैं कि वह पाण्डवों की ओर हो जाए और वह उसे राजा बनाएंगे। तब कर्ण कहता है कि बहुत वर्ष पूर्व उस रंगभूमि में यदि उन्होनें उसे कौन्तेय कहा होता तो आज स्थिति बहुत भिन्न होती। परन्तु अब किसी भी परिवर्तन के लिए बहुत देर हो चुकी है और अब यह संभव नहीं है। वह आगे कहता है कि दुर्योधन उसका मित्र है और उस पर बहुत विश्वास करता है, और वह उसके विश्वास को धोखा नहीं दे सकता। लेकिन वह माता कुंती को यह वचन देता है कि वह अर्जुन के अतिरिक्त किसी और पांडव का वध नहीं करेगा। कर्ण और अर्जुन दोनों ने ही एक दूसरे का वध करने का प्रण लिया होता है, और इसलिए दोनों में से किसी एक की मृत्यु तो निश्चित है। वह कहता है कि उनके कोई भी पाँच पुत्र जीवित रहेंगे - चार अन्य पाण्डव, और उसमें या अर्जुन में से कोई एक। कर्ण अपनी माता से निवेदन करता है कि वह उनके संबंध और उसके जन्म की बात को उसकी मृत्यु तक रहस्य रखे।

आज भी लाखों हिन्दुओं के लिए कर्ण एक ऐसा योद्धा है जो जीवन भर दुखद जीवन जीता रहा। उसे एक महान योद्धा माना जाता है, जो साहसिक आत्मबल युक्त एक ऐसा महानायक था जो अपने जीवन की प्रतिकूल स्थितियों से जूझता रहा।

विशेष रूप से कर्ण इस बात का उदाहरण भी है कि किस प्रकार अनुचित निर्णय किसी व्यक्ति के

महाभारत युद्ध में कर्ण की वीरगति

श्रेष्ठ व्यक्तित्व और उत्तम गुणों के रहते हुए भी किसी काम के नहीं होते। कर्ण को कभी भी वह नहीं मिला जिसका वह अधिकारी था, परन्तु उसने कभी भी प्रयास करना नहीं छोड़ा। भीष्म और भगवान कृष्ण सहित कर्ण के समकालीनों ने यह स्वीकार किया है कि कर्ण एक पुण्यात्मा है जो बहुत विरले ही मानव जाति में प्रकट होते हैं। वह संघर्षरत मानवता के लिए एक आदर्श है कि मानव जाति कभी भी हार ना माने और प्रयासरत रहे।

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

चौपाई : महावीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥३॥

अर्थ - जो महावीर हैं, जिनका उल्लंघन कोई नहीं कर सकता और जिनका शरीर वज्र का है, उन अलौकिक बलशाली हनुमान जी का काम है अपने भक्त की कुबुद्धि का निवारण कर सद्बुद्धि प्रदान करना। वे केवल प्रदान ही नहीं करते, अपितु अपना साथी संगी भी बना लेते हैं।

भावार्थ - "महावीर" का अर्थ है– तीनों लोकों में जो कार्य असम्भव है उसे बिना परिश्रम के कर सके।

रावण ने कुम्भकर्ण, मेघनाद आदि के मारे जाने पर अपने उद्गार प्रकट किये कि मैंने सुर, असुर, यक्ष, गन्धर्व, नाग, किन्नर आदि के साथ युद्ध कर सबके बल को देख लिया है। बाली के साथ युद्ध होने पर मैंने उससे मित्रता कर ली थी, परंतु वानरों के बल की कभी परीक्षा नहीं ली। आज उसका फल हनुमान जी द्वारा भोगना पड़ रहा है।

राम जी ने भी कहा था - "हे मुनिवर अगस्त्य जी! हनुमान के बल के आगे बाली का बल बाल बराबर भी नहीं था, फिर भी उन्होंने बाली को क्यों नहीं मारा?" अगस्त्य जी ने उत्तर दिया–"हनुमान जी त्रिलोक विजयी बाली को क्षण भर में मार सकते थे परंतु भृगुऋषि ने हनुमान जी को बाल्यावस्था में श्राप दिया था कि - "तुम अपने बल को भूल जाओगे तब वानरों के याद कराने पर अपना बल तुम्हें याद आएगा।" केवल जामवंत ही इस श्राप को जानते थे। जब सुग्रीव को कुम्भकर्ण ने पकड़ लिया था तब हनुमान जी ने सोचा - " जितना भयंकर यह राक्षस है मैं इससे दुगुना रूप धारण कर इसे एक ही मुक्के से मार डालूँगा। यदि सुग्रीव स्वयं ही उसके फन्दे से छूट जाए, तो उसका मान बना रहेगा। अन्यथा सुग्रीव के बल का भ्रम मिट जाएगा। मैं उसके पीछे-पीछे चलता हूँ।" "महानुं चासौवीर" इसका अर्थ है 'महावीर' जिसमें पूर्ण सामर्थ्य भरा हो। संसार में जितने भी शक्तिशाली कहे गए हैं उन सबको 'महान' कहा गया है, परंतु उनके ऊपर भी जिसका सामर्थ्य हो उसे 'महावनी' कहते हैं।

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

दूसरा अर्थ है कि बलसाली योद्धाओं को जीतना तो साधारण बात है किंतु जो विकारों काम, क्रोध, मद और लोभ के साथ-साथ इन्द्रियों को जीत ले वही सच्चा महावीर है। हनुमान जी ने अंतःकरण के समस्त विकारों के साथ-साथ समस्त इन्द्रियों को भी जीता था, इसीलिए उन्हें महावीर कहा गया।

"विक्रम" - 'वि' का अर्थ है, रहित और 'क्रम' का अर्थ है उल्लंघन।

ज्ञान, बल, तेज, शक्ति और वीर्य ये छः ऐश्वर्य हैं। इन छःहों ऐश्वर्यों से सम्पन्न हनुमान जी हैं। इन ऐश्वर्यों का उल्लंघन करने वाला (अर्थात् इन ऐश्वर्यों को तुच्छ समझकर हनुमान जी को कमजोर बना देने वाला), संसार में कोई जन्मा ही नहीं। इसीलिए इनको 'विक्रम' से सम्बोधित किया गया है।

एक बार अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के बहाने से भगवान शिवजी से हनुमान जी का युद्ध हो गया। शिवजी ने सुरथ की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी। शिवजी के गण, मुख्य सेनापति वीरभद्र ने भरत के पुत्र पुष्कल का सिर काट डाला और सेना को विध्वंस कर दिया। उस समय 'विक्रम' रूप दिखाने का अवसर हनुमान जी को मिला था। रुद्र सेना का विध्वंस करना हनुमान जी ने आरम्भ कर दिया। जब सब सेना तहस नहस हो गई तब शिवजी को भी पूँछ में लपेट लिया और लगे घुमाने। शिवजी ने कहा–"अरे हनुमान! क्या कर रहे हो?" हनुमान जी ने कहा–"आप सुरथ के रक्षक हैं और मुझे राम जी की सेना का रक्षक बनाया गया है।" शिवजी ने कहा–"तो अच्छा भाई क्या चहते हो? मुझे छोड़ो। यदि इसी तरह घुमाते रहे तो तीनों लोक नष्ट हो जायेंगे।" हनुमान जी ने कहा–" यदि आप मेरे बन्धन से छूटना चाहते हो तो जब तक मैं द्रोणगिरि से संजीवनी लाकर सबको जीवित न कर लूँ तब तक युद्ध न करना।" शिवजी ने 'एवमस्तु' कह दिया। हनुमान जी ने संजीवनी लाकर राम जी की सेना को जीवित कर दिया। यह 'विक्रम' का साधारण भाव है।

" बजरंगी" - जिसका शरीर व्रज का बना हुआ हो। जन्म लेने के बाद दूसरे दिन सूर्य को पकड़ने के लिए दौड़े। साठ हजार मंदार नाम के राक्षसों आउर राहु की सेना को मार दिया। राहु भागकर इन्द्र के पास गया और कहा– " आज मेरा अमृत पीने का समय था। (अर्थात् ग्रहण का दिन था)। एक वानर ने मेरी सेना और राक्षसों का संहार कर दिया।" बल के गर्व से गर्वित होकर इन्द्र ने आकर अपना वज्र बाल-हनुमान पर चला दिया। वह उनकी हनु (ठुड्डी) पर लगा। हनु थोड़ी सी टेढ़ी हो गई पर वज्र कुंठित हो गया। ऐसे वज्र का है हनुमान जी का शरीर। ऐसे अनंत कार्य हनुमान जी ने किए हैं।

"कुमति"–सुग्रीव राज्य प्राप्त कर स्त्री में आसक्त होकर भूल गया कि राम जी से कोई वायदा किया था। तब हनुमान जी ने सुग्रीव से कहा–" तुम कृतघ्न

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

हो। पहले उपकार करने वालों का कार्य तुमने भुला दिया है। शीघ्र ही वानरों को बुलाओ और राम जी की शरण में जाओ।“ सुग्रीव डर गया। उसने कहा–“ भाई! यह काम तुम ही जल्दी करो। मैं अबूझा हूँ, मेरी रक्षा करो।“ तब हनुमान जी ने वानरों को दसों दिशाओं से वानरी सेना बुलाने के लिए भेज दिया। यह ‘कुमति’ का रूप है।

हनुमान जी ने सुग्रीव की कुमति को दूर किया।

“सुमति”–लक्ष्मण के पास पहुँचे। महान क्रोधित थे, कहने लगे– “ तू नीच और कृतघ्न है। जाति स्वभाव के कारण तू वायदा भूल गया है। क्या तू भी बाली वाले बाण की अपेक्षा करता है?” सुग्रीव भयभीत हो गया। हनुमान जी ने हृदय में सुग्रीव की बाँह पकड़ने का जो प्रण था वह जागृत हो गया। सुग्रीव का पक्ष लेते हुए हनुमान जी ने कहा– ‘हे लक्ष्मण! क्या तुम ही राम जी के एक मात्र प्रिय भक्त हो? दूसरों को मूर्ख समझ रखा है क्या? देखो, आसमान में चारों ओर टिड्डियों की तरह वानर छाए हुए हैं। उन्हें बुलाने भेजा था और वानर भी आ रहे हैं। तुमने कैसे कह दिया कि सुग्रीव वायदा भूल गया है? वह राम जी के कार्य के लिए सदा ही जागृत रहता है।“ लक्ष्मण ने

कहा–“ हमने प्यारवश धमकी दी थी। सुग्रीव तो राम जी का परम सखा है। राम जी उदास हैं। हम सब को उनके पास शीघ्र चलना चाहिए।“ यह है ‘सुमति’ के संगी। सुमति देनी और फिर संग करने योग्य बनाना। ॥३॥

जैसे जल द्वारा अग्नि को शांत किया जाता है वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शांत रखना चाहिए।

वेदव्यास

|| द्रोणाचार्य ||

माणक काबरा

माणक काबरा जी चार वर्षों से एडिसन पाठशाला के संचालक हैं| माणक जी हिंदी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर सक्रिय रूप से विशेष योगदान देते हैं| इन्हें हिंदी साहित्य एवम् कविताओं में रुचि है, और ये रामचरित्र मानस का नियमित रूप से पठन और अध्ययन करते रहते हैं| माणक जी स्वभाव से अत्यधिक शांत एवम् गंभीर हैं, और एक अच्छे कार्यकर्ता के सभी गुण इनमें देखे जा सकते हैं|

आचार्य द्रोण महर्षि भरद्वाज के पुत्र थे| पांचाल नरेश का पुत्र द्रुपद भी द्रोण से साथ ही भरद्वाज आश्रम में शिक्षा पा रहा था| दोनों में गहरी मित्रता थी| कभी कभी राजकुमार द्रुपद उत्साह में आकर द्रोण से यहाँ तक कह देता था कि पांचाल देश का राजा बन जाने पर मैं आधा राज्य तुम्हें दे दूँगा| शिक्षा समाप्त होने पर द्रोणाचार्य ने कृपाचार्य की बहन से विवाह कर लिया| उससे उनके एक पुत्र हुआ, जिसका नाम उन्होंने अश्वत्थामा रखा| द्रोण अपनी पत्नी और पुत्र को बहुत प्रेम करते थे|

द्रोण बहुत गरीब थे और चाहते थे कि धन प्राप्त किया जाए और अपनी पत्नी व पुत्र के साथ सुख से रहा जाए| उन्हें खबर लगी कि परशुराम अपनी सारी संपत्ति गरीब ब्राह्मणों में बाँट रहे हैं, तो भागे-भागे उनके पास गए, लेकिन उनके पहुँचाने तक परशुराम अपनी सारी संपत्ति वितरित कर चुके थे और वन-गमन की तैयारी कर रहे थे| द्रोण को देख कर वो बोले "ब्राह्मणश्रेष्ठ, आपका स्वागत है, पर मेरे पास जो कुछ था, वह मै बाँट चूका हूँ| अब मेरे पास मेरा शरीर और धनुर्विद्या ही है| बताइए मैं आपके लिए क्या करूँ ?"
तब द्रोण ने उनसे सारे अस्त्रों के प्रयोग तथा रहस्य सिखाने की प्रार्थना की| परशुराम ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और द्रोण को धनुर्विद्या की पूरी शिक्षा दे दी|

उधर पिता के देहावसान के बाद जब द्रुपद राजगद्दी पर बैठा, तो द्रोणाचार्य यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और राजा द्रुपद से मिलने पांचाल देश चल पड़े| उन्हें लड़कपन की बातचीत याद थी| सोचा, यदि आधा राज्य न भी देगा तो कम से कम कुछ धन तो जरुर देगा| यह आशा लेकर वो राजा द्रुपद के पास पहुँचे और बोले "मित्र द्रुपद, मुझे पहचानते हो न? मैं तुम्हारा बालपन का मित्र द्रोण हूँ|" द्रुपद को द्रोणाचार्य का आना बुरा लगा और द्रोण का अपने साथ मित्र का-सा व्यवहार करना तो और भी अखरा|

वह द्रोण पर गुस्सा हो गया और बोला "ब्राह्मण, तुम्हारा यह व्यवहार सज्जनोचित नहीं है| मुझे मित्र कहकर पुकारने का तुम्हें साहस कैसे हुआ? सिंहासन पर बैठे हुए एक राजा के साथ एक दरिद्र प्रजाजन की मित्रता कभी हुई है? तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है, दरिद्र की धनी से साथ, मूर्ख की

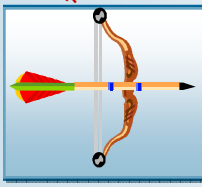

।। द्रोणाचार्य ।।

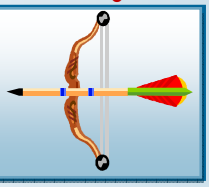

विद्वान के साथ और कायर की वीर के साथ मित्रता कहीं हो सकती है? मित्रता बराबरी वालों के साथ होती है| जो किसी राज्य का स्वामी न हो, वह राजा का मित्र कभी नहीं हो सकता"| द्रुपद की ऐसी बातें सुनकर द्रोण बड़े लज्जित हुए और उन्हें बहुत क्रोध भी आया| उन्होंने निश्चय किया कि मैं इस अभिमानी राजा को सबक सिखाऊँगा और बचपन में जो मित्रता की बात हुई थी, उसे पूरा करके ही चैन लूँगा| ऐसा विचार करके वे अपनी पत्नी से साथ हस्तिनापुर की ओर चल पड़े, और हस्तिनापुर में उनकी पत्नी के भाई कृपाचार्य के यहाँ गुप्त रूप से रहने लगे|

एक दिन जब द्रोण टहल रहे थे तो उन्होंने देखा कि हस्तिनापुर के राजकुमार गेंद से खेल रहे थे, खेलते-खेलते उनकी गेंद एक कुँए में जा गिरी| राजकुमारों के अनेक प्रयत्नों से भी गेंद कुँए से बाहर नहीं निकली परन्तु युधिष्ठिर कि अंगूठी भी कुँए में जा गिरी| सभी राजकुमार कुँए में झाँक-झाँक कर देखने लगे परंतु कोई उपाय नहीं सूझ रहा था| द्रोण चुपचाप यह सब देख रहे थे परंतु राजकुमारों को इस बात का जरा भी ध्यान नहीं था कि कोई उन्हें देख रहा है| राजकुमारों को अचरज में डालते हुए वो बोले "राजकुमारों, अगर मैं तुम्हारी गेंद निकाल दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?"

युधिष्ठिर ने हँसते हुए कहा "ब्राह्मणश्रेष्ठ, आप गेंद निकाल देंगे तो हम आपकी बढ़िया दावत करेंगे"| इस पर द्रोणाचार्य ने पास पड़ी हुई सींक उठा ली और पानी में फेंकी| सींक गेंद को ऐसे तीर जैसे जाकर लगी और फिर लगातार कई सींकें वे कुएँ में डालते गए और सींकें एक दूसरे के सिरे से चिपकती गईं, जब अंतिम सींक का सिरा कुँए से बाहर तक पहुँच गया, तो द्रोणाचार्य ने उसे पकड़ कर खींच लिया और गेंद निकल आई| सभी राजकुमार आश्चर्य से यह करतब देख रहे थे| उन्होंने ब्राह्मण से विनती की कि युधिष्ठिर कि अंगूठी भी निकाल दीजिए| द्रोण ने तुरंत धनुष चढ़ाया और कुएँ में तीर मारा| पल भर में बाण अंगूठी को अपनी नोंक में लिए हुए ऊपर आ गया और द्रोणाचार्य ने अंगूठी युधिष्ठिर को दे दी| यह चमत्कार देखकर राजकुमारों को और भी ज्यादा अचरज हुआ| उन्होंने द्रोण के आगे आदरपूर्वक सिर नवाया और हाथ जोड़कर पूछा "महाराज हमारा प्रणाम स्वीकार कीजिए और अपना परिचय दीजिए कि आप कौन हैं? हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? हमें आज्ञा दीजिए"| द्रोण के कहा "राजकुमारों यह सारी घटना पितामाह को सुनाना और उनसे मेरा परिचय प्राप्त कर लेना" राजकुमारों ने जब पितामाह भीष्म को सारी घटना सुनाई, तो भीष्म ताड़ गए कि हो-न-हो वे सुप्रसिद्ध आचार्य द्रोण ही होंगे| यह सोचकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब से राजकुमारों की अस्त्र-शिक्षा द्रोणाचार्य के ही हाथों पूरी कराई जाये| उन्होंने बड़े सम्मान से द्रोणाचार्य का स्वागत किया और राजकुमारों को आदेश दिया कि वे गुरु द्रोण से ही धनुर्विद्या सीखें|

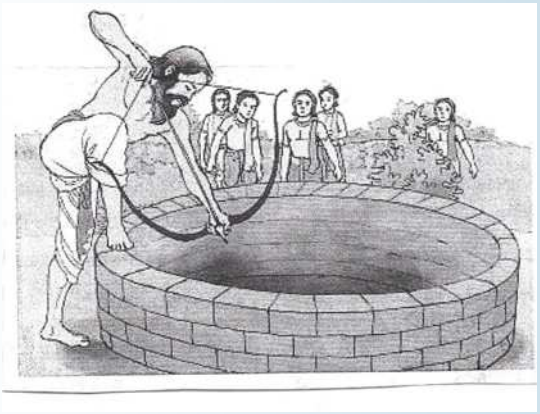

जब राजकुमारों की शिक्षा पूरी हो गई, तो द्रोणाचार्य ने उनसे गुरु-दक्षिणा के रूप में पांचालराज

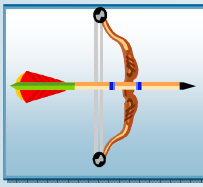

|| द्रोणाचार्य ||

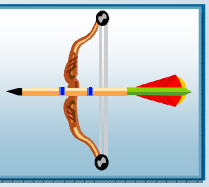

द्रुपद को कैद कर लाने के लिए कहा| उनकी आज्ञा के अनुसार पहले दुर्योधन ने द्रुपद के राज्य पर धावा बोल दिया, पर पराक्रमी द्रुपद के आगे वह नहीं ठहर सका और हारकर वापस आ गया| तब द्रोण ने अर्जुन को भेजा और अर्जुन ने पांचालराज की सेना को तहस -नहस कर दिया और राजा द्रुपद को उनके मंत्री सहित कैद करके आचार्य के सामने ला खड़ा किया|

द्रोणाचार्य ने मुस्कराते हुए द्रुपद से कहा "हे वीर डरो नहीं और किसी प्रकार का भय अपने मन में मत लाओ"| लड़कपन में तुम्हारी-हमारी मित्रता थी| साथ-साथ खेले-कूदे, उठे-बैठे, बाद में जब तुम राजा बन गए, तो ऐश्वर्य के मद में आकर तुम मुझे भूल गए और मेरा अपमान किया| तुमने कहा था कि राजा ही राजा के साथ मित्रता कर सकता है| इसी कारण मुझे युद्ध करके तुम्हारा राज्य छीनना पड़ा| परन्तु मैं तुम्हारे साथ मित्रता ही करना चाहता हूँ, इसलिए आधा राज्य तुम्हें वापस लौटा देता हूँ, क्योंकि मेरा मित्र बनाने के लिए भी तो तुम्हें राज्य चाहिए न| मित्रता तो बराबरी वालों में ही हो सकती है"| द्रोणाचार्य ने द्रुपद को बड़े सम्मान के साथ विदा किया| द्रोण से बदला लेने की भावना से द्रुपद अपने राज्य को लौट गया, बदला लेने की भावना उसके जीवन का लक्ष्य बन गई| उसने कई व्रत और तप इस कामना से किये कि उसे एक ऐसा पुत्र हो, जो द्रोण को मार सके| साथ ही एक ऐसी कन्या हो जो अर्जुन को ब्याही जा सके| आखिर उसकी कामना पूरी हुई,

और उसके धृष्टद्युम्न नामक एक पुत्र और द्रोपदी नाम की एक कन्या| घमासान युद्ध के बीच अचानक आवाज आई "अश्वतस्थामा मारा गया, नर या हाथी" और द्रोणाचार्य ने अपने शस्त्र यह सोचकर डाल दिए कि उनका पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है| वो मौन धारण करके तपस्या में लीन हो गए| यह अवसर देखकर धृष्टद्युम्न सामने आया और तलवार से द्रोणाचार्य के सर को धड़ से अलग कर दिया|

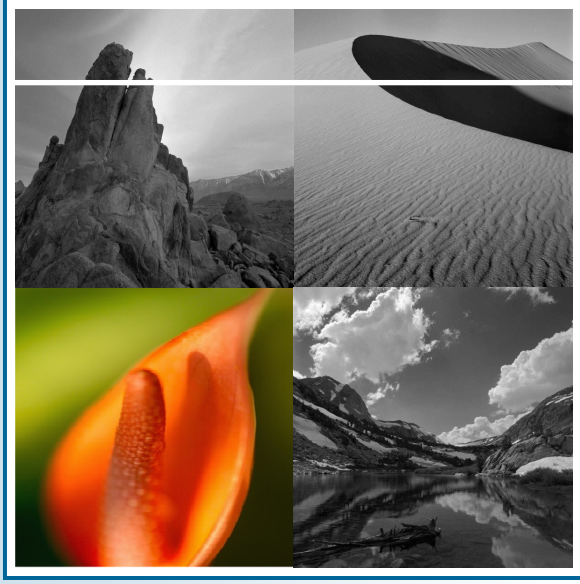

काम

कल पर वह काम न टालें जिसे आप आज करा सकते हैं

अवसर

यह मत समझो अवसर तुम्हारे पास दो बार खट खटाएगा

दानवीर कर्ण

श्वेता सीकरी

प्रस्तुत महाभारत संस्मरण की संकलनकर्ता एवं लेखिका सुश्री श्वेता सीकरी एडिसन, न्यू-जर्सी में रहती हैं तथा भारत में हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं| उनके दो बच्चे हैं| बड़ा बेटा ७ वर्ष का है तथा एडिसन हिंदी पाठशाला में हिंदी का विद्यार्थी भी| श्वेता जी, मर्क फारमेसुएटीकल, औषध निर्माण करने वाले बहुराष्ट्रीय संस्थान में कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं| कार्य में व्यस्त होने के उपरांत भी लेखन कार्यों में काफी रूचि रखती हैं| कर्मभूमि के पूर्वांक में भी इनकी एक सुन्दर कहानी प्रकाशित हुई थी| "दानवीर कर्ण" में महाभारत के यशस्वी पात्र कर्ण की कथा श्वेता जी ने बालसुलभ सुन्दर एवं सरल शब्दों में कही है| आशा है पाठकों को इस रोचक कथा से दानवीर कर्ण के बारे में जानकारी प्राप्त होगी|

कर्ण माता कुंती और भगवान सूर्य की संतान थे| माता कुंती के विवाह से पहले दुर्वासा ऋषि उनके घर पधारे थे| माता कुंती ने उनकी जी जान से सेवा की| ऋषि दुर्वासा उनकी आवभगत से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें कुछ वरदान देने पर मजबूर हो गए| उन्हें माता कुंती के भविष्य में संतान प्राप्ति में कठिनाई का आभास हुआ, इसलिए उन्होंने माता कुंती को इच्छाशक्ति से संतान प्राप्ति का वरदान दिया|

एक दिन माता कुंती ने इस वरदान को जाँचना चाहा| उन्होंने भगवान सूर्य का आह्वान किया| वरदान में वशीभूत होने के कारण सूर्य भगवान एक नवजात शिशु ले कर माता कुंती के पास आ गए और माता कुंती को सौंप दिया| नवजात शिशु कवच कुंडल से सजा हुआ था| नवजात शिशु माता कुंती को दे कर सूर्य भगवान चले गए| माता कुंती को कुछ समझ में नहीं आया| विवाह से पहले शिशु का आना किसी को नहीं भायेगा, यही सोच कर वो बहुत परेशान हो गयी| अपनी बहन के साथ मिल कर माता कुंती ने कवच कुंडल से सजे हुए नवजात शिशु को एक टोकरी में डाल कर गंगा नदी की गोद में सौंप दिया| अपने दिल पर पत्थर रख कर उन्होंने ऐसा काम किया|

टोकरी गंगा नदी में बहती हुई एक किनारे आ कर रुकी| एक अधिरथ (धृतराष्ट्र का सारथी) ने उस टोकरी को देखा और उसमें एक अत्यंत सुन्दर शिशु को देख कर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ| आस-पास किसी को भी न देख कर, उस अधिरथ ने शिशु को उसमें से निकाल लिया| अधिरथ को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह शिशु किसी राजसी परिवार से है| अधिरथ उसको अपनी पत्नी राधा के पास ले आये| कोई संतान न होने के कारण उन्होंने उसे भगवान का दिया हुआ वरदान समझा| उनका यह पुत्र राधे के नाम से जाना गया| कवच और कुंडल होने के कारण उनका नाम कर्ण (कानों के कुण्डलों के कारण) रखा गया| कर्ण ने तन मन से अपने माता-पिता की सेवा की|

जब कर्ण बड़े हुए तो उन्हें गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या की शिक्षा लेने की इच्छा हुई| किन्तु गुरु द्रोणाचार्य ने उन्हें अपना विद्यार्थी बनाने से मना कर

दानवीर कर्ण

श्वेता सीकरी

दिया| गुरु द्रोणाचार्य केवल क्षत्रियों एवं राजकुल के बच्चों को ही शिक्षा देते थे और कर्ण एक अधिरथ के पुत्र थे| कर्ण ने ठान लिया था कि वो किसी गुरु से शिक्षा ले कर ही रहेंगे, यही सोच कर वह परशुराम के पास गए| परशुराम केवल ब्राह्मणों को ही शिक्षा देते थे, इसलिए कर्ण उनके सामने ब्राह्मण बन कर गए और शस्त्र विद्या लेने लगे| एक दिन गुरु परशुराम को निद्रा आ गयी और वह अपने शिष्य कर्ण की गोद में ही सो गए| कर्ण गुरु को अपनी गोद में निश्चिन्त सोता देखकर बहुत खुश हुए| इतने में ही कर्ण के शरीर पर एक कीड़ा रेंगने लगा| कर्ण ने उसे हटाने का प्रयत्न किया, परन्तु कीड़ा नहीं हिला| गुरु की निद्रा भंग न हो, यही सोचकर कर्ण चुपचाप बैठे रहे और कीड़े की पीड़ा को सहते रहे| कीड़ा कर्ण के शरीर को काटने लगा और उनके शरीर से रक्त बहने लगा, परन्तु तब भी कर्ण अडिग बैठे रहे| तदुपरांत, रक्त की एक बूँद परशुराम पर गिरी, जिससे उनकी निद्रा टूट गयी| शिष्य के शरीर से बहता रक्त देखकर उन्हें समझते देर न लगी कि कर्ण ने इतना सभी इसी लिए सहा ताकि उनकी नींद में कोई विघ्न न पड़े| परन्तु, अगले ही क्षण उनके मस्तिष्क में प्रश्न उठा कि एक ब्राह्मण इतनी पीड़ा कैसे सह सकता है? उन्होंने कर्ण से सत्य जानना चाहा| कर्ण गुरु के समक्ष कुछ छुपा न सके और उन्होंने गुरु को सभी कुछ सत्य बतला दिया कि वे कौन हैं| सत्य सुनकर परशुराम अत्यंत क्रोधित हो उठे और उन्होंने कर्ण को श्राप दिया कि जब कभी कर्ण को ब्रह्मास्त्र की सबसे अधिक आवश्यकता होगी, वह सब कुछ भूल जायेंगे| यह सुनकर कर्ण को अत्यंत निराशा हुई |

समय-चक्र अपनी गति से गतीयमान होता रहा| कर्ण अब अधिरथ पुत्र से अंग देश का नरेश बन चुका था| कर्ण अपने मित्र दुर्योधन के अत्यंत करीब थे, और दुर्योधन ने ही कर्ण को अंग देश का राजा बनाया था| दुर्योधन के कर्ण पर इतने उपकार होने के कारण कर्ण को कौरवों की सेना का नेतृत्व करना पड़ा| सत्य और असत्य के इस धर्म युद्ध के पर्यंत कर्ण को यह ज्ञात हुआ कि कुंती उसकी माता है| माता कुंती के अन्य पांच पुत्र (पांडव) कौरवों के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे| कर्ण की शस्त्र-कुशलता एवं निपुणता पर किसी को कोई शंका नहीं थी| सभी जानते थे कि युद्ध में कर्ण को यदि कोई टक्कर दे सकता है तो वह केवल अर्जुन ही है| अर्जुन भी कुंती का पुत्र ही था तथा कर्ण का लघु भ्राता| कर्ण के कवच-कुण्डलों से माता कुंती ने उसे पहचान लिया| अपने ही पुत्रों के बीच होते इस युद्ध को वह नहीं देख पाई| कुछ सोचकर वह कर्ण के पास एक याचना ले कर गई और उससे विनती की कि इस युद्ध में वह अपने भाइयों (पांडवों) का साथ दे| कर्ण इस बात के लिए कतई सहमत नहीं हुआ| कुंती को इससे अत्यधिक निराशा हुई| माता की विनती की पूर्ण रूप से अवहेलना न करते हुए कर्ण ने माता को आश्वासन दिया कि वह केवल अर्जुन से ही युद्ध करेंगे, अन्य

दानवीर कर्ण

श्वेता सीकरी

भ्राताओं से नहीं| उन्होंने माता कुंती को विश्वास दिलाया कि वे पाँच पुत्रों (पाँडवों) की माँ के नाम से विख्यात हैं, और हमेशा पाँच पुत्रों की माँ ही रहेंगी, परन्तु अर्जुन या कर्ण, दो में से कौन एक जीवित रहेगा, यह समय ही बतलायेगा|

महाभारत युद्ध अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था| एक-एक करके सभी महारथी मारे जा चुके थे| भीष्म पितामह भी तीरों की शैय्या पर लेटे हुए युद्ध को देख रहे थे| वह जानते थे कि अर्जुन को यदि कोई परास्त कर सकता है तो वह है कर्ण| यही सोचकर भीष्म पितामह भी अधीर हो रहे थे| उधर अर्जुन के सारथी बने कृष्ण भी इसी सोच विचार में थे| कर्ण अत्यंत दानी था एवं उसकी इस प्रवृति से सभी अवगत थे| कर्ण की इसी प्रवृति का सहारा लेकर कृष्ण ने एक युक्ति सोची| कृष्ण एक ब्राह्मण का भेष धारण करके कर्ण के पास भिक्षा माँगने गए| अपने द्वार पर एक ब्राह्मण भिक्षुक को देख कर्ण दौड़कर उनके पास गए और भिक्षा देने के लिए विभिन्न वस्तुएँ ले आये, परन्तु ब्राह्मण ने वह वस्तुएँ लेने से मना कर दिया| कर्ण को यह सुनकर अत्यंत क्षोभ हुआ| कर-बद्ध खड़े कर्ण ने कुछ लेने का आग्रह किया| ब्राह्मण ने कहा, "कर्ण, जो मैं चाहता हूँ, वह अत्यंत कीमती है"| कर्ण हँसकर बोले, "ब्राह्मण देव, आप आज्ञा दें, जो भी मेरे पास है, वह आपको अर्पण कर दूँगा, यह कर्ण का वचन है" इतना सुनते ही ब्राह्मण रूपधारी श्री कृष्ण ने, कर्ण से उनके कवच और कुंडल को देने की याचना की|

भिक्षुक की इस अनपेक्षित माँग को सुन कर्ण एक क्षण के लिए ठिठके, किन्तु अगले ही क्षण वह अपने शरीर से कवच-कुंडल उतारने के लिए तैयार थे| जन्म से ही कवच कुंडल उनके साथ होने से, उन्हें उतारने में उन्हें अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ा, और इसी कारण उनके शरीर से रक्त बहने लगा| बिना विचलित हुए, कर्ण ने कवच एवं कुंडल अपने शरीर से उतारकर ब्राह्मण को सहर्ष दे दिए| ब्राह्मण रुपी श्रीकृष्ण ने कर्ण को आशीर्वाद प्रदान किया और वहाँ से प्रस्थान किया|

अगले दिन युद्ध में कर्ण के रथ का पहिया एक दलदल में फँस गया| कर्ण का सारथी भी युद्ध में मारा जा चुका था| कर्ण स्वयं ही रथ से उतरकर दलदल में फँसे रथ के पहिये को निकालने का प्रयास करने लगे परन्तु इसमें सफल न हो सके| इसी समय, श्रीकृष्ण के आदेश पर, अर्जुन ने कर्ण पर वार किया| चूंकि कर्ण ने अभिमन्यु (अर्जुन के पुत्र) पर वार किया था जब वो निहत्था था, इसी लिए अर्जुन ने भी निहत्थे कर्ण पर यह समय उचित जानकर वार कर दिया| यशस्वी कवच-कुंडल न होने के कारण, कर्ण घायल हो गए| अर्जुन ने फिर से कर्ण पर वार किये, और अंततः कर्ण युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए| श्रीकृष्ण जानते थे कि कर्ण एक दानवीर एवं नेक व्यक्ति हैं, उन्होंने कर्ण को अपने विराट रूप में दर्शन

दानवीर कर्ण

- श्वेता सीकरी-

देकर आशीर्वाद प्रदान किया |

महाभारत की कहानी में कर्ण का उल्लेख बड़े आदर भाव से होता है| कर्ण का नाम सर्वोच्च दानी के रूप में लिया जाता है तथा इस युग में दानी व्यक्तियों की तुलना दानवीर कर्ण से की जाती है|

यह ज्ञात होते हुए भी कि पांडव उसके भ्राता हैं, कर्ण ने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा| दुर्योधन के उपकारों का बदला चुकाने के लिए कर्ण ने सहर्ष अपने प्राण दे दिए|

महान हो तुम दानवीर कर्ण, महाभारत के एक जीवंत आदर्श !!!!!

एकश्लोकी गीता

आदौ देवकी देवी गर्भजननम् गोपीगृहे वर्धनम्
माया पूतन जीवितापहरणम् गोवर्धनोद्धारणम्
कंसच्छेदन कौरवादी हननम् कुंतीसुत पालनम्
एतद् भागवतम् पुराण कथितम् श्रीकृष्णलीलामृतम्

भावार्थ यह है कि मथुरा में राजा कंस के बंदीगृह में भगवान विष्णु का भगवान श्रीकृष्ण के रुप में माता देवकी के गर्भ से अवतार हुआ। देवलीला से पिता वसुदेव ने उन्हें गोकुल पहुँचाया। कंस ने मृत्यु भय से श्रीकृष्ण को मारने के लिए पूतना राक्षसी को भेजा। भगवान श्रीकृष्ण ने उसका अंत कर दिया। यहीं भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्रदेव के दंभ को चूर कर गोवर्धन पर्वत को अपनी अँगुली पर उठाकर गोकुलवासियों की रक्षा की। बाद में मथुरा आकर भगवान श्रीकृष्ण ने अत्याचारी कंस का वध कर दिया। कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव वंश का नाश हुआ। पाण्डवों की रक्षा की। भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता के माध्यम से कर्म का संदेश जगत को दिया। अंत में प्रभास क्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण का लीला संवरण हुआ।

महाभारत - चक्रव्यूह के कुछ तथ्य

पंकज जैन (साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला)

महाभारत का युद्ध एक धर्म युद्ध था, जो कुरुक्षेत्र में हुआ और सत्रह दिन तक चला था। इतिहासकारों का मानना है कि इस युद्ध में लगभग ३९ लाख सैनिकों ने युद्ध किया था। वैसे तो इस युद्ध में युद्धनीति के अनुसार बहुत सारे व्यूहों की रचना हुई थी, जैसे गरुड़ व्यूह, वज्र व्यूह, असुर व्यूह, देव व्यूह इत्यादि, लेकिन चक्रव्यूह सबसे कठिन व्यूह था। ऐसा माना जाता है कि चक्रव्यूह में अभिमन्यु के वध के बाद इस युद्ध की दशा ही बदल गयी। चलिए इस चक्रव्यूह के बारे में कुछ तथ्य जानते हैं:

१. चक्रव्यूह महाभारत युद्ध के तेरहवें दिन रचा गया था।

२. चक्रव्यूह आचार्य द्रोण द्वारा रचा गया था, जो कि कौरवों के सेनापति थे। इसका उद्देश्य युधिष्ठिर को बंदी बनाना था, जिससे युद्ध समाप्त हो जाये।

३. चक्रव्यूह सेना का एक ऐसा गठन होता है जिसमें प्रतिद्वन्दी को बाहरी चक्र से धीरे-धीरे अंदर के छोटे चक्र में सीमित कर दिया जाता है, जहाँ से बाहर निकलने का रास्ता बहुत ही कठिन होता है।

४. पाँच पांडवों में केवल अर्जुन को ही चक्रव्यूह तोड़ना आता था, लेकिन आचार्य द्रोण और दुर्योधन ने अर्जुन और कृष्ण को युद्धभूमि से बहुत दूर ले जाने की रणनीति बनाई थी। समस्तक योद्धा अर्जुन को ललकार कर युद्ध स्थल के दूसरे छोर पर ले गये, जहाँ उन्हें चक्रव्यूह के बारे में पता ही ना लग सके।

५. कृष्ण, अर्जुन और आचार्य द्रोण के अतिरिक्त और भी लोग थे जो चक्रव्यूह को तोड़ना जानते थे - अश्वत्थामा, प्रद्युम्न, अनिरूद्ध और अभिमन्यु। अश्वत्थामा कौरवों की ओर से युद्ध कर रहे थे तथा अनिरूद्ध और प्रद्युम्न ने इस युद्ध में भाग नहीं लिया था ।

६. अभिमन्यु ने चक्रव्यूह को तोड़ना अपनी माता सुभद्रा के गर्भ में सीखा था। लेकिन जब तक अर्जुन सुभद्रा को चक्रव्यूह से बाहर निकलने का तरीका बताते, उसे नींद आ गयी। इस तरह अभिमन्यु को चक्रव्यूह से बाहर निकलने का रास्ता नहीं जान पाए।

७. चक्रव्यूह के द्वार तोड़ने के बाद बंद ना हों, इसलिए अभिमन्यु के साथ बाकी के पांडव भी गये थे, लेकिन उन्हें जयद्रथ ने पहले चक्र से ही आगे नहीं जाने दिया। इस प्रकार अभिमन्यु को अकेले ही युद्ध करना पड़ा।

महाभारत - चक्रव्यूह के कुछ तथ्य

८. चक्रव्यूह में अभिमन्यु के वध के समय युद्ध के कई नियम तोड़े गये थे, जैसे निहत्थे पर वार, एक योद्धा पर एक से अधिक योद्धा का एक साथ वार करना।

९. चक्रव्यूह की रचना करना एक बहुत ही कठिन कार्य है, जिसे आचार्य द्रोण जैसे सेनापति और योद्धा ही कर सकते थे। यदि शत्रु चक्रव्यूह को तोड़ दे तो सेना की बहुत हानि होती है। शायद इसलिए ही चक्रव्यूह का वर्णन कहीं और नहीं मिलता है।

१०. ऐसा विश्वास है कि कबड्डी का खेल, चक्रव्यूह से प्रेरित हो कर ही बना है ।

प्राचीन शिलाचित्र जिसमें अभिमन्यु चक्र व्यूह में प्रवेश करता हुआ दिखाया गया है

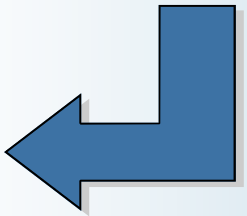

चक्रव्यूह के गठन का चित्रण

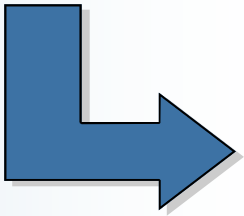

महाभारत प्रश्नावली

सुधा अग्रवाल

१) महाभारत में राजा शान्तनु किस वंश से जाने जाते थे ?

क) राम वंश

ख) भरत वंश

ग) कौरव वंश

२) राजा शान्तनु का पहला विवाह किस से हुआ था?

क) त्रिवेणी

ख) कुन्ती

ग) गंगा

३) भीष्म पितामह किसके पुत्र थे?

क) दुश्यंत

ख) शान्तनु

ग) वेदव्यास

४) भीष्म पितामह का वास्तविक नाम क्या था?

क) देवव्रत

ख) देवराज

ग) द्रुपद

५) राजा शान्तनु का दूसरा विवाह किस से हुआ था?

क) अम्बिका से

ख) कुन्ती से

ग) सत्यवती से

६) सत्यवती के पिता "निशादराज" ने राजा शान्तनु से किस शर्त पर विवाह किया था?

क) सत्यवती से पहली कन्या होगी तो वह राजपाट चलायेगी

ख) राजा शान्तनु के बाद सत्यवती ही राजपाट चलायेगी

ग) सत्यवती का पहला पुत्र ही राजपाट का अधिकारी होगा

महाभारत प्रश्नावली

सुधा अग्रवाल

७) भीष्म पितामह ने सत्यवती के पिता निशादराज से क्या प्रतिज्ञा की थी?

क) भीष्म पितामह ने कहा कि मैं आज से ही अपने पिता के राज्य का परित्याग करता हूँ और आजीवन ब्रह्मचर्य रहूँगा

ख) मेरा होने वाला पुत्र और सत्यवती का पुत्र आधा-आधा राजपाट सम्भालेंगे

ग) भीष्म पितामह ने कहा कि मैं बड़ा पुत्र हूँ इसीलिये यह राजपाट मुझे मिलना चाहिये

८) भीष्म पितामह का असली नाम देवव्रत था परन्तु भीष्म नाम क्यों पड़ा?

क) माता गंगा ने यह नाम दिया था

ख) जब उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि वह राजपाट त्याग कर हमेशा ब्रह्मचर्य रहेंगे जिससे वे एवं उनकी संतान भरतवंश के राजपाट का अधिकारी न बने, तब देवताओं ने उन्हें यह नाम दिया

ग) भीष्म पितामह उनके पिता "राजा" शान्तनु ने दिया था

९) भीष्म पितामह को उनके पिता राजा शान्तनु ने क्या वरदान दिया?

क) पिता राजा शान्तनु ने वरदान दिया, भीष्म का विवाह अवश्य होगा

ख) पिता राजा शान्तनु ने वरदान दिया, "तुम जब तक जीना चाहोगे, जीओगे। तुम्हें कोई नहीं मार साकता। मृत्यु भी तुमसे अनुमति ले कर तुम्हारे पास आएगी।

ग) मेरे राज्य के तुम ही अधिकरी बनोगे

१०) राजा शान्तनु की पत्नी सत्यवती के कितने पुत्र थे?

क) पाँच पुत्र - अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, दुशासन

ख) दो पुत्र - चित्रांगन, विचित्रवीर्य

ग) तीन पुत्र - चित्रांगन, विचित्रवीर्य, दुशासन

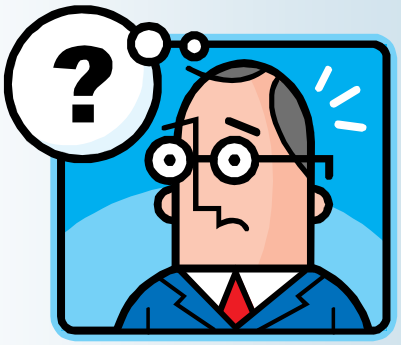

११) विचित्रवीर्य का विवाह किसके साथ हुआ था?

क) अम्बिका एवं अम्बालिका

ख) अम्बा एवं अम्बालिका

ग) द्रौपदी एवं अम्बिका

महाभारत प्रश्नावली

सुधा अग्रवाल

१२) धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर किस के पुत्र थे?

क) विचित्रवीर्य

ख) व्यास जी

ग) भीष्म जी

१३) धृतराष्ट्र की शादी किससे हुई थी?

क) गान्धारी

ख) द्रौपदी

ग) कुंती

१४) गान्धारी किस की पुत्री थी?

क) गान्धार राजा सुबल की

ख) गान्धार राजा कौरव

ग) गान्धार राजा पाण्डव

१५) गान्धारी ने अपनी आँखों पर पट्टी क्यों बाँध ली थी?

क) जब उसको मालूम हुआ कि उसका भावी पति नेत्रहीन है तो उसने प्रतिज्ञा की कि मैं भी अपने पति के अनुकूल रहूँगी।

ख) जब तक मेरे संतान नहीं होती, मैं भी अपने पति की भाँति अन्धी बन कर रहूँगी।

ग) गान्धारी को सूर्य का श्राप था कि तुम्हारा जीवन अन्धे की तरह बीतेगा।

१६) कुंती किसकी पुत्री थी?

क) यदुवंशी सुरसेन की

ख) कुंती भोज

ग) चन्द्रसेन

१७) कुंती का नाम बचपन में क्या था?

क) बचपन का नाम पृथा था, यदुवंशी सुरसेन ने इन्हें कुंतीभोज को गोद दे दिया था, इसीलिए इनका नाम कुंती पड़ा।

महाभारत प्रश्नावली

सुधा अग्रवाल

ख) बचपन का नाम सुभीगा था। कुंती भोज नगर में पैदा हुई थी इसीलिए इनका नाम कुंती पड़ा।
ग) बचपन का नाम माधवी था, कुंती भोज इन्हें युद्ध में जीत कर लाए थे, इसीलिए इनका नाम कुंती पड़ा।

१८) कुंती की शादी किससे हुई थी?
क) कौरव से
ख) पाण्डु से
ग) यदुवंशी से

१९) पाण्डव की दोनों पत्नियों का क्या नाम था?
क) कुंती एवं माद्री
ख) सत्यवती एवं गंगा
ग) सुभद्रा एवं द्रौपदी

२०) कर्ण का नाम कर्ण क्यों पड़ा?
क) क्योंकि कर्ण के चार कान थे
ख) क्योंकि जन्म के समय कर्ण ने कुण्डल एवं कवच पहने हुए थे
ग) क्योंकि जन्म के समय इन्हें कौरव ने यह नाम दिया था

उत्तर पृष्ठ ६५ पर

गरिमा अग्रवाल

गरिमा जी नोरवॉक (CT, USA) में अपने पति और ४ वर्षीय बेटी के साथ रहती हैं| इन्होंने एम.एस.सी. और एम.फिल. वनस्पति विज्ञान में किया है| किताबें पढ़ने में व चित्रकारी करने में रुचि रखती हैं| स्वेच्छाकृत काम करने में इन्हें हमेशा से ख़ुशी मिलती आई है| सन २००४ में अमेरिकन रेड क्रोस व सार्वजनिक पुस्तकालय का हिस्सा बनी रही| अध्यापिका बनना इनका जीवन का सपना है जो यदा-कदा जब भी अवसर मिला पूरा करती आई हैं| एम.फिल. के दौरान एक वर्ष विज्ञान की अध्यापिका रहीं| पिछले वर्ष न्यूजर्सी में नॉन प्रोफिट संस्था में एक साल अंग्रेजी व गणित पढ़ाया व इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए की नोरवॉक शाखा में प्रथमा-१ की अध्यापिका के रूप में अपना सपना साकार कर रही हैं|

प्रसन्नता अर्जित वरदान

आज की आधुनिक भागती दौड़ती दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति तनावपूर्ण रहता है| किसी को पढ़ाई की चिंता है, किसी को नौकरी की, किसी को पैसा कमाने की तो किसी को सेहत की| शायद ही कोई आज के युग में तनाव से अछूता हो|

बदल गया आज आदमी, बदले उसके काम
दहशत कुछ ऐसी बढ़ी, घटे हास परिहास
बची नहीं सद्भावना, बचा नहीं अब प्यार
नैतिकता कुंठित हुई, प्रसन्नता बीमार

तो तनावपूर्ण माहौल में सफल जीवन व्याप्त करने का सिर्फ एक ही राम बाण नुस्खा है, प्रसन्नचित रहना... प्रसन्नता को फिर से हमें तंदरुस्त करना होगा| एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है कि हम प्रत्येक परिस्थिति में सहज और प्रसन्न रहें|

जीवन में सफल होने के लिए 'प्रसन्नता' का गुण अनिवार्य है| प्रसन्न लोग विषम परिस्थितियों में भी संतुलित रह कर अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर लते हैं| जीवन में जब भी तूफ़ान आये, मन घबराये, हौसला जवाब दे तो सहजता और प्रसन्नता का संतुलन बनाने का अभ्यास करें, आत्मविश्वास पैदा करें कि कोई भी

जल से करना सिखिए, विघ्नों का प्रतिकार
पत्थर को भी काटती, जिसकी शीतल धार

प्रसन्नता अर्जित वरदान

कार्य असंभव नहीं हैं जैसे

प्रसन्नचित रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है| हम अपने गुरु स्वयं हैं| जैसा जीवन को बनाना चाहते हैं, बना सकते हैं| सच्ची लगन, एकाग्रता और ठोस संकल्प हो तो ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है| हमें

> मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
> कहे कबीर गुरु पाइए, मन ही के परतीत

अपने मन को हमेशा प्रसन्नचित रहने का पाठ पढ़ाना होगा क्योंकि

> वक़्त भी क्या सिखाएगा मुझे गिर कर बैठ जाना
> कि अरमान और जवान होते हैं यू मंजिल के दूर चले जाने से

जो असल में जिन्दादिल और आशावादी होते हैं वही मिसाल कायम कर जाते हैं| एक बहुत ही प्यारे इंसान ने कहा है...

यह है जिन्दादिली व प्रसन्नता की असली मिसाल| बुरे समय में, बुरी हालतों में भी आशावादी बने रहिये|

> चिंता से चतुराई घटे, घटे रूप और ज्ञान
> चिंता बड़ी अभागिनी, चिंता चिता समान

अगर प्रसन्न न भी हों, परन्तु प्रसन्नता पाने का प्रयास निरंतर हो| सोच सर्वथा सकारात्मक हो|
स्वास्थ्य की दृष्टि से भी प्रसन्न रहना आवश्यक है| प्रसन्नचित लोगों का हृदय स्वस्थ रहता है| पूरे शरीर में

प्रसन्नता अर्जित वरदान

रक्त प्रवाह ठीक रहता है और मधुमेह का खतरा भी कम होता है| कहा भी गया है

स्वस्थ व्यक्ति ही अपने भीतर अन्नत शक्ति का सदुपयोग श्रेष्ठ ढंग से कर सकता है और अपने वर्तमान को सुन्दर बना सकता है|

भारत के राष्ट्रपिता गाँधी जी के जीवन से भी हमें प्रसन्नता अर्जित करने के कई उपाय या साधन मिलते हैं जैसे गाँधी जी के तीन बंदरों की सीख - बुरा ना बोलो, बुरा ना देखो, बुरा ना सुनो|
तात्पर्य, अगर हम कभी किसी के लिए बुरा ना बोलें या दूसरों में केवल बुराई ना देखें व सुने तो हमारे मानस पटल पर गंदगी कम जमेगी व हमारी मन:स्थिति सदैव शांत व प्रसन्न रहेगी| बुराई खोजनी ही है तो स्वयं में खोजें|

प्रसन्नता अर्जित करने की दूसरी सर्वश्रेष्ठ कुंजी है 'क्रोध ना करना' व 'अहिंसा अपनाना'| गाँधी जी ने कहा है, यदि कोई एक थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल आगे कर दो, यानी दूसरों के लिए मन में वैर-भाव, ईर्ष्या, जलन या क्रोध किसी भी परिस्थिति में ना आने पाए| हम अपने चित को संतुलित रख सकें व एक शांत सहज रूप से व्यवहार कर सकें, यह स्थिति सच्ची प्रसन्नता है|

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार
जीना उसी का नाम है

तो चलिए आज से यह प्रण लें कि खुद भी हमेशा प्रसन्न रहेंगे और अपने आस-पास सदैव प्रसन्नता बिखेरेंगे| प्रसन्न रहिये, मिलनसार बनिए| प्रसन्नता को जितना हो सके बाँटिए| प्रसन्न लोगों को ही ईश्वर कि कृपा मिलती है|

एजेण्डा

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

"आप इस देश की नींव हैं। नींव मज़बूत होगी तो भवन मज़बूत होगा । भवन की कई-कई मंजिलें मज़बूती से टिकी रहेंगी," पहले अफ़सर ने रूमाल फेरकर जबड़ों से निकला थूक पोंछा। सबने अपने कंधों की ओर गर्व से देखा, कई-कई मंज़िलों के बोझ से दबे कंधों की ओर।

अब दूसरा अफ़सर खड़ा हुआ, "आप हमारे समाज की रीढ़ हैं। रीढ़ मज़बूत नहीं होगी तो समाज धराशायी हो जाएगा।" सबने तुरंत अपनी अपनी रीढ़ टटोली। रीढ़ नदारद थी। गर्व से उनके चेहरे तन गए- समाज की सेवा करते-करते उनकी रीढ़ की हड्डी ही घिस गई। स्टेज पर बैठे अफ़सरों की ओर ध्यान गया... सब झुककर बैठे हुए थे। लगता है उनकी भी रीढ़ घिस गई है।

"उपस्थित बुद्धिजीवी वर्ग"- तीसरे बड़े अफ़सर ने कुछ सोचते हुए कहा, "हाँ, तो मैं क्या कह रहा था," उसने कनपटी पर हाथ फेरा, "आप समाज के पीड़ित वर्ग पर विशेष ध्यान दीजिए।"

पंडाल में सन्नाटा छा गया। बुद्धिजीवी वर्ग! यह कौन सा वर्ग है? सब सोच में पड़ गए। दिमाग़ पर ज़ोर दिया। कुछ याद नहीं आया। सिर हवा भरे गुब्बारे जैसा लगा। इसमें तो कुछ भी नहीं बचा। उन्होंने गर्व से एक दूसरे की ओर देखा। समाज-हित में योजनाएँ बनाते-बनाते सारी बुद्धि खर्च हो भी गई तो क्या?

अफ़सर बारी-बारी से कुछ न कुछ बोलते जा रहे थे। लगता था सब लोग बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। घंटों बैठे रहने पर भी न किसी को प्यास लगी, न चाय की आवश्यकता महसूस हुई, न किसी प्रकार की हाज़त।

बैठक समाप्त हो गई। सब एक दूसरे से पूछ रहे थे, "आज की बैठक का एजेंडा क्या था?"

भोजन का समय हो गया। साहब ने पंडाल की ओर उँगली से चारों दिशाओं में इशारा किया। चार लोग उठकर पास आ गए। फिर हाथ से इशारा किया, पाँचवाँ दौड़ता हुआ पास में आया, "सर!"

"इस भीड़ को भोजन के लिए हाल में हाँक कर लेते जाओ। इधर कोई न आ पाए।" साहब ने तनकर खड़ा होने का व्यर्थ प्रयास किया।

पाँचवा भीड़ को लेकर हाल की ओर चला गया।

"तुम लोग हमारे साथ चलो।" साहब ने आदेश दिया।

चारों लोग अफ़सरों के पीछे-पीछे सुसज्जित हाल में चले गए।

चारों का ध्यान बीच वाले सोफे की ओर गया। वहाँ चीफ़ साहब बैठे साफ्ट-ड्रिंक पी रहे थे। साहब ने चीफ़ साहब से उनका परिचय कराया, "ये बहुत काम के आदमी हैं। बाढ़, सूखा, भूकंप आदि जब भी कोई त्रासदी आती है; ये बहुत काम आते हैं।"

चीफ़ साहब के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया।

"चलिए भोजन कर लीजिए।" उन्होंने चीफ़ साहब से कहा, "हर प्रकार के नानवेज का इंतज़ाम

एजेण्डा

है।"

"नानसेंस!"– चीफ़ साहब गुर्राए, "मैं परहेज़ी खाना लेता हूँ। किसी ने बताया नहीं आपको?"

"सॉरी सर" -छोटा अफ़सर मिनमिनाया–, "उसका भी इंतज़ाम है, सर! आप सामने वाले रूम में चलिए।"

वहाँ पहुँचकर चारों को साहब ने इशारे से बुलाया। धीरे से बोले, "निकालो।"

धीरे से चारों ने बड़े नोटों की एक-एक गड्डी साहब को दे दी। साहब ने एक गड्डी अपनी जेब में रख ली तथा बाकी तीनों चीफ़ साहब की जेबों में धकेल दीं।

चीफ़ साहाब इस सबसे निर्विकार साफ्ट-ड्रिंक की चुस्तियाँ लेते रहे, फिर बोले, "जाने से पहले इन्हें अगली बैठक के एजेंडे के बारे में बता दीजिएगा। "

कमला निखुर्पा

स्नातकोत्तर शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, एफ़.आर.आई देहरादून [उत्तराखण्ड]

जल संरक्षण

सीमा आज बहुत खुश थी। उसने प्रार्थना सभा में जल संरक्षण पर भाषण दिया था। भाषण सुनकर सभी ने जोरदार तालियाँ बजाईं। साथी अध्यापकों ने उसकी भाषण-कला की प्रशंसा की। दुबेजी बोले "वाह सीमा मैडम! क्या जबरदस्त भाषण था आपका, भई हम तो कायल हो गए हैं आपके, अरे भई शर्माजी! सबसे ज्यादा पानी तो आप ही बरबाद करते हैं पूरी कालोनी में, बारिश के मौसम में भी बगीचे में रोज पाइप से सिंचाई हो रही है, सीमा मैडम! जरा समझाइए इन्हें भी, आज सारा पानी ये बगीचे में गिराते रहे तो कल इनके पोते पोतियाँ प्यासे रह जाएँगे।"

कक्षा में सीमा मैडम ने विद्यार्थियों को जल संरक्षण पर प्रोजेक्ट दिया। उनको निर्देश दिया कि वे अपने मुहल्ले में वर्षा-जल संरक्षण के बारे में लोगों को जागरूक करें। जल संरक्षण पर विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्राचार्य ने सीमा के प्रयासों की सराहना की। सीमा स्कूल से गुनगुनाते हुए घर आई। घर आकर उसने पानी का मोटर ऑन किया, शॉवर खोला और आँखें बंद कर ठंडे पानी से थकान मिटाने लगी। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। जल्दी-जल्दी गाउन पहनकर उसने दरवाजा खोला, देखा तो सामने पड़ोसन परेशान सी खड़ी थी।

"मैडम आप अपना मोटर बंद कर दीजिए, मेरे यहाँ बिल्कुल पानी नहीं आ रहा है।"

"पानी नहीं आ रहा है तो मैं क्या करूँ? आप अपनी कोई और व्यवस्था कर लीजिए।"

"मैडम आपकी और हमारी पाइपलाइन एक है; जब आप मोटर चलाती हैं तो मेरे यहाँ पानी बंद हो जाता है।"

"ये आपकी प्रॉब्लम है मैं क्या कर सकती हूँ?"

सीधी-सादी पड़ोसन अपना-सा मुँह लेकर वापस चली गई।

स्कूल का आखिरी कार्यदिवस, कल से दो महीने की छुट्टियाँ हैं। जल संरक्षण पर जन-जागरूकता अभियान चलाने के लिए सीमा को आज जिलाधिकारी महोदय के हाथों प्रशस्ति पत्र मिला है। सीमा खुशी से फूली न समाई। तुरंत मिठाई खरीदी, घर आकर अपने पति और बच्चों को मिठाई खिलाकर खुशखबरी सुनाई। बच्चे छुट्टियों में नानी के घर जाने की खुशी में शोर मचाने लगे। जल्दी-जल्दी सामान पैक होने लगा। सीमा के पतिदेव टैक्सी लेकर आ गए। सीमा और उसका परिवार छुट्टी मनाने चला गया। ठीक पाँच बजे सीमा के रसोईघर के नल से आवाज आई..सूँ...सूँ फिर बाथरूम के नल ने भी सिसकारी भरी। सभी नलों से पानी बहने लगा झर झर झर झर।

नलों का स्वच्छ पानी गंदी नाली में मिलकर बहने लगा और पूरे दो महीने तक बहता रहा।

रचना श्रीवास्तव

ब्लॉग: http://rachana-merikavitayen.blogspot.com/
विपत्र: rach_anvi@yahoo.com

भीगे विश्वास का दर्द

वो चल रही थी पर उसका मन भाग रहा था। धीरे-धीरे उसने गति बढ़ा दी। वो लगभग दौड़ने लगी थी। शायद वो अपने मन से आगे निकल जाना चाहती थी। उसकी साँस फूलने लगी, पसीने की चन्द बूँदें उस के माथे पर चमकने लगीं, पर फिर भी वो रुकी नहीं। पता नहीं वो खुद से भाग रही थी या कुछ आवाजों से।

जब से वो अर्डमोर आई थी उस ने सुबह टहलने का नियम सा बना लिया था। अपने घर से निकल कर वालमार्ट (अमेरिका की एक दुकान) तक अपने आईपौड पर गाने सुनते हुए जाना उस को बहुत अच्छा लगता था। सूरज का पीला प्रकाश जब उस के बदन को छूता था तो एक अजीब सी ऊर्जा वो अपने में महसूस करती थी। सूरज के निकलने के साथ ही चिड़ियों का चहचहाना भी बढ़ जाता, ऐसा लगता मानो सूर्य की मध्यम किरणों ने उनको हलके से सहला के जगा दिया हो। जैसे उसकी माँ जगाती थी। प्रकृति से उस को प्रारंभ से ही प्यार था पर जब से अमेरिका आई थी, पढ़ाई और उसके बाद नौकरी की तलाश में उस को कभी फुर्सत ही नहीं मिली। साइंटिस्ट के पद पर जब से यहाँ आई है वो मौसम से रोज मिलती है, हवा उसके बाल सहलाती है, चिड़ियाँ गीत सुनती हैं और पेड़ों से झड़े फूल और पत्तियाँ शबनम में नहाकर उस के आने की राह देखते हैं ।

> **"सूरज का पीला प्रकाश जब उस के बदन को छूता था तो एक अजीब सी ऊर्जा वो अपने में महसूस करती थी।"**

जब उसे लगा कि अब वो नहीं दौड़ पायेगी तो पार्क में लगी एक बेंच पर बैठ गई। वो पूरी पसीने से भीग चुकी थी। उसने जींस से रुमाल निकाली। धानी रंग के इस रुमाल के कोने में बहुत सुंदर फूल बना था। उसने फूल पर हाथ फेरा। माँ ने कितने प्यार से इसको काढ़ा था पर आज के दिन उसको न कुछ सोचने का मन कर रहा था और न ही मौसम का कोई भी रंग आकर्षित कर रहा था। अभी दो दिन पहले वो कितनी खुश थी। शुक्रवार की रात से ही समय मानो कट ही नहीं रहा था, इंतजार का समय बहुत भारी होता है शायद इसीलिए बहुत धीरे बीतता है। लैब से आने के बाद से ही वो कामों में लगी थी। धुले कपड़े पहाड़ की तरह अचल खड़े थे, उसकी अलमारी उस को मुँह चिढ़ा रही थी और बेसिन में बर्तन बातें कर रहे थे। फिर अभी खाना भी बनाना था। उस के हाथ यन्त्रवत् चल रहे थे, कपड़े तह कर के रखते और अलमारी सही करते-करते रात के १२ बज गए थे, अभी बर्तन धोना बाकी था। वो डिशवाशर में बर्तन कम ही धोती थी पर आज वो बहुत थक गई थी और उस को भूख भी लग गई थी अतः उसने बर्तन

भीगे विश्वास का दर्द

डिशवाशर में डाल दिए, और खुद मैगी खा कर बिस्तर पर आ गई। पर नींद मानों आँखों में आने से इंकार कर रही थी। मन भी कहाँ शांत था, बस शरीर ही थकन का ज़ामा नहीं उतार पा रहा थ। ये सब बैचेनी उस को इसलिए थी कि कल माँ आ रही थी। पाँच साल पहले जब वो यहाँ आ रही थी, माँ उस को गले लगा कितना रोयीं थी। उनकी वो हलकी गुलाबी साड़ी और उस पर बने नीले फूल आज भी उसकी आँखों की खिड़की में टँगे थे। माँ को गहरे रंग बहुत पसंद थे पर पिताजी की मौत के बाद माँ ने चटकीले रंगों में सफ़ेद रंग मिला उनको हल्का कर लिया था और अब यही हलके रंग इनकी अलमारी में सिसकते हुए समां गए थे। उस दिन से पहले घर में सब कुछ ठीक था। माँ सुबह घर में संस्कार बोती। खिड़कियाँ खोल पीली नर्म धूप को आमंत्रित करती जब तक मैं और पापा उठते घर बातें कर रहा होता और उस के कोने-कोने में पवित्रता आसन लिए बैठी होती। मैं जब प्रसाद के लिए हाथ बढ़ाती मेरे हाथों पर एक हलकी चपत लगाते कहती “पहले मुँह तो साफ कर ले"। माँ के हाथों में जादू था, जो भी बनाती बहुत स्वादिष्ट बनाती। मैंने कभी-कभी माँ को पापा से नाराज भी देखा था पर कारण क्या होता पता न चलता, कुछ घंटों में ही वो दोनों फिर घुल मिल कर बातें करने लगते पर उस दिन, "सताक्षी देख तेरे पिता जी को क्या हुआ है”- माँ चीख रही थी। मैं भाग कर उनके पास पहुँची तो पापा अजीब-अजीब साँसें ले रहे थे। माँ बदहवासी की हालत में पड़ोस के सुधांशु अंकल को बुलाने भागी। मैंने पापा को सीधा किया। उनके मुँह से झाग निकल रहा था वो कुछ कहना चाहते थे। पर आवाज कुछ साफ नहीं थी, वो बार-बार बोलने की कोशिश कर रहे थे। इतने में माँ आ गईं, साथ में सुधांशु अंकल भी थे। “मयंक आप घबराइए नहीं सब ठीक हो जायेगा” -माँ ने कहा और आंचल से उनका मुँह पोछने लगीं -“कितनी बार कहा की शराब न पियें पर मेरी सुनता कौन है -“माँ बडबड़ाती जा रहीं थी और रोती जा रहीं थी। सुधांशु अंकल की सहायता से उन्होंने पापा को कार में लिटाया। पापा बार-बार मेरा हाथ पकड़ रहे थे। कार में लेटते समय उन्होंने जिस निराश निगाह से मुझे देखा आज भी वो निगाहें मेरे मन में गड़ी हुई-सी महसूस होती हैं। माँ लौटी तो सब कुछ ख़त्म हो चुका था। अब न घर बातें करता था, न सूरज घर आता था और न ही संस्कार घर में दिखते थे। बस घायल आवाज और सन्नाटे की फुसफुसाहट पसरी रहती। ये सब सोचते-सोचते वो कब सो गई पता ही न चला। उस की नींद खुली तो ७ बज चुके थे, माँ को लेने हवाई अड्डे जाना था। आर्डमोर से वहाँ पहुँचने में करीब १ घंटा ४० मिनट लगते हैं, अब क्या करूँ -सताक्षी सोच रही थी, क्योंकि प्लेन ९:०० बजे आने वाला था। मरी नींद का क्या करूँ इसका अपनी आप को कोसते हुए सताक्षी जल्दी-जल्दी तैयार होने लगी। जब तक वो घर से निकली ७:३० हो चुके थे। अभी माँ के लिए फूल भी लेने थे जल्दी ही कार हवा से बातें करने लगी लाल गुलाब ले कर जब कार हाइवे पर पहुँची ८ बज चुके थे। गति सीमा ७० किमी थी तो सताक्षी ने स्पीड सेट

“पिताजी की मौत के बाद माँ ने चटकीले रंगों में सफ़ेद रंग मिला उनको हल्का कर लिया था और अब यही हलके रंग इनकी अलमारी में सिसकते हुए समां गए थे।”

भीगे विश्वास का दर्द

कर गाड़ी क्रूज़ पर डाल दी।

पिता जी के जाने के बाद रिश्तेदारों ने एक-एक कर नाता तोड़ लिया। माँ को कुछ भी देने से इंकार कर दिया। माँ सुबह बाहर जाती और जब लौटती मायूसी की गहरी रेखा उस के माथे पर दिखती। परिवार में लोग माँ पर तरह-तरह के लांछन लगाते। मुझे ज्यादा समझ में नहीं आता पर जितना आता बुरा बहुत लगता। पापा की जगह माँ को काम मिल गया था। अँधेरे में दिए की रौशनी ही बहुत होती है। दिन भर काम करने के बाद माँ मुझे भी खुश रखने की कोशिश करती। बहारों का मौसम जब मुझपर आने लगा लोगों की गिद्ध नजर मुझको छेड़ने लगी। माँ को अब मेरी चिंता रहने लगी थी। उस दिन तो हद ही हो गई, जब मेरे चचेरे भाई ने मुझे दबोचने की कोशिश की। माँ ने चाचा-चाची से शिकायत की पर चाची ने माँ को उल्टा सीधा कहना शुरू कर दिया और मुझे भी ताने देने लगी...चाची ने कहा - "क्या करेगी पेड़ में फल लगेगा तो पत्थर तो उछलेंगे ही"। कई दिन सोचने के बाद माँ ने मुझे यहाँ अमेरिका पढ़ने भेज दिया।

तेज हॉर्न से उसकी तंद्रा टूटी तो देखा लाल बत्ती हरी हो चुकी थी। उसने जल्दी से गाड़ी आगे बढ़ा दी। उसकी निगाह बगल की सीट पर रखे फूलों के गुलदस्ते पर पड़ी जिसमें सुर्ख गुलाब मुस्कुरा रहे थे। उसने एक बार फूलों को ऐसे सहलाया, जैसे माँ उसके माथे को सहलाती थी। पास रखी पानी की बोतल को उठा कर उसने मुँह से लगा लिया और सारा पानी एक साँस में पी गई। आज डैलस में गर्मी कुछ ज्यादा ही थी उसने ए.सी. बढ़ा दिया।

"उसने एक बार फूलों को ऐसे सहलाया, जैसे माँ उसके माथे को सहलाती थी।"

जब वो एयर पोर्ट पहुँची तो ९ बज कर २० मिनट हो चुके थे। कार पार्क कर के वो जल्दी से अंदर भागी। वहाँ देखा तो फ्लाइट ९०१, ३० मिनट लेट थी। उफ्फ!! उसने चैन की साँस ली। पेट में उठती भूख की लहरों का अभी ध्यान आया, सुबह से एयर पोर्ट पहुँचने की जद्दोजहद में उसे कुछ खाने का समय ही नहीं मिला। समय बिताने के लिए और अपनी जठराग्नि को शान्त करने के लिए उसने कॉफी ली और धीरे-धीरे उसकी चुस्कियाँ लेने लगी। कॉफी के एक-एक घूँट में मानो वो एक-एक पल पी रही थी। तभी अनाउंस हुआ की फ़्लाइट नंबर ९०१ आने को है। दिल की धड़कन बहुत तेज होने लगी थी करीब २० मिनट बाद माँ आती दिखी माँ ने आज भी वही नीले बूटों वाली पिंक साड़ी पहनी हुई थी सताक्षी दौड़ कर माँ से लिपट गई। माँ को कस कर इस तरह पकड़े थी कहीं फिर माँ चली न जाएँ। "माँ आप का सामान कहाँ है, सुधांशु अंकल ला रहे हैं क्या? वो भी आए हैं तुम ने बताया नहीं"। "अरे बेटा लास्ट समय में उनका प्रोग्राम बना। ऑफिस के काम से उनको न्यूयार्क जाना है २ दिन बाद चले जाएँगे"। इतने में अंकल सामान लेकर आ गये। "हेल्लो अंकल कैसे हैं?" संक्षिप्त सा औपचारिक प्रश्न किया था सताक्षी ने। "ठीक हूँ बेटा" अंकल ने मुस्करा कर कहा, "आप तो बहुत बड़ी हो गईं हैं"। सताक्षी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"माँ मेरे कठहल का अचार, सिरका और अमावट लाई हो ना"

"सब लाई हूँ बेटा, पर सब यहीं पूछ लोगी या घर भी ले चलेगी" और मम्मी कहकर वो फिर से माँ से

भीगे विश्वास का दर्द

लिपट गई।

"इतनी बड़ी हो गई पर बचपना नहीं गया"। कह कर माँ ने सताक्षी के सर पर हलकी सी चपत लगाई। आर्डमोर के रास्ते में माँ उसको पूरे मोहल्ले का हाल बताती रही। कुछ लोगों को तो वो जानती भी नहीं थी फिर भी सुनती रही। माँ का बोलना उस को बहुत अच्छा लग रहा था पाँच साल वो इस आवाज के बिना वो कैसे रही? घर में घुसते ही माँ ने कहा, "अरे सत तूने घर तो बहुत अच्छा रखा है साफ सुथरा। याद है अपने घर में कितना सामान फैलाया करती थी"।

सताक्षी को हँसी आ गई बीता शुक्रवार याद आ गया। बातचीत में कब २ बज गए पता न चला

"माँ कुछ खाओगी"

"नहीं बेटा कुछ नहीं अब बस आराम करना चाहती हूँ और तुम्हारे अंकल भी यही चाहते हैं"। पर सताक्षी को भूख लगी थी उसने अपने लिए सेंडविच बनाकर खाया, अंकल का बिस्तर लिविंग रूम में लगा दिया और खुद वो माँ को लेकर बेड रूम में आ गई। माँ की कमर में हाथ डाल वो माँ के साथ लेटी है सताक्षी माँ के साथ हमेशा ऐसे ही सोती थी ।

"माँ तुम्हारे आने से आज हर शै बातें कर रही है देखो ये तकिया बता रहा है कि तुम को याद कर कभी-कभी मैंने इस को कितना भिगोया है। और वो देखो ना माँ मेज पर तुम्हारी तस्वीर कह रही है कि इस को सीने से लगा कर कितनी रातें जागी हूँ मैं और प्यार कर-कर के इस को कितना तंग किया है। मेज के सामने लगे इस बड़े पेपर को देखो ये कह रहा है कि मैं तो आप के नाम से भरा हूँ, जितनी बार तुम्हारी याद आती थी मैं इस पर लिखती थी माँ। माँ मेरी अच्छी माँ..."

रात खाने की मेज पर माँ ने उसकी पसंद की सभी चीजें परोसी थीं। जिनमें भारत से लाया कटहल का अचार भी शामिल था। "वाह! क्या स्वाद है मेरी भूख तो आज शांत हुई"।

"हाँ बेटा सच कहा तुम्हारी माँ बहुत अच्छा खाना बनाती है अंकल ने माँ की तरफ देख कर कहा"।

"यदि खाना इतना अच्छा लगा है तो बेटा एक रोटी और लो न"।

"अरे नहीं मैंने तो ३ रोटी खा ली हैं एक कौर और खाया तो फट जाऊँगी।"

"अरे कोई बात नहीं मैं सिल दूँगी तू खा", सभी हँसने लगे। माँ बर्तन धोने लगी।

"अरे नहीं माँ मैं डिशवाशर में डालती हूँ। मैंने सारे बर्तन डिशवाशर में डाल कर नोब घुमा दिया। मशीन ने अपना काम शुरू कर दिया।

"अरे सत वह ये तो कमाल की मशीन है। क्या सब बर्तन साफ हो जायेंगे"

"जी माँ आप स्वयं देख लीजियेगा"

भारत और अमेरिका बीच के समय के अन्तर के चक्कर में माँ और अंकल को बहुत नींद आ रही थी। अतः सभी ने अपना-अपना सोने का ठिकाना पकड़ लिया। थोड़ी ही देर में दोनों सो गए। सताक्षी को नींद नहीं आ रही थी। थोड़ा सफाई करके और लैब का कुछ अधूरा काम ख़त्म कर जब सताक्षी सोने आई तो रात के १२ बज रहे थे। माँ बहुत गहरी नींद में सो रहीं थी। ऐसा लग रहा था कि नींद उनको आगोश में ले कर खुद सो गई है। माँ को देखते-देखते वो भी सो गई। सुबह करीब चार बजे माँ और अंकल के हँसने की आवाज से उस की नींद टूटी। माँ

भीगे विश्वास का दर्द

कह रही थीं, अजी थोड़ा धीरे हँसिये सताक्षी उठ जायेगी।

“क्या कहती हो मन वो नहीं उठेगी गहरी नींद में है”। माँ के लिए मन सम्बोधन सुन कर सताक्षी को बहुत बुरा लगा; क्योंकि पापा माँ को प्यार से मन बुलाते थे। माँ का नाम मंजरी जो था फिर अचानक अंकल के मुँह से मयंक अपने पापा का नाम सुन कर वो ध्यान से उनकी बातें सुनने लगी। अंकल कह रहे थे- उस दिन यदि मयंक की शराब में हम ने जहर... सताक्षी को लगा कि एक साथ लाखों बिच्छुओं ने उस को डंक मारा हो।

बेंच पर बैठी सताक्षी अपने बिखरे वजूद को समेटने की कोशिश कर रही थी। इधर शब्द और घटनाएँ एक दूसरे से तारतम्य बैठाने की कोशिश कर रहे थे और उधर सताक्षी पतझड़ के बाद झड़ी पत्तियों-सा असहाय महसूस कर रही थी। पापा के जाने के बाद उसको नहीं लगा पर आज वो खुद को अकेला और अनाथ महसूस कर रही थी। वो बार-बार यही कह रही थी - माँ तुम..... क्यों माँ क्यों? उसने आँसुओं को टी शर्ट की आस्तीन में सुखाया और माँ के लिए न्यूयार्क का टिकट खरीदने का निश्चय कर वह उठ कर चल दी उसने मुड़कर देखा बेंच पर धानी रुमाल पड़ा था।

GARDEN STATE PHYSICIANS P.C.

21 Jefferson Plaza (off Raymond Rd.), Princeton, NJ 08540

Dr. Sonia Deora & Dr. Srinivas Mendu

Board Certified in Family Practice and Internal Medicine

Special Interest in Women's Healthcare

Physical Exams, annual pap smears

Blood work done on premises

EKGs Halter Monitors

Spirometry, Nebulizer Treatments

Management of cuts, minor burns & lacerations

Age appropriate immunizations

732-274-1274

Same day, weekend & evening appointments available

Same day, weekend & evening appointments available

Most Insurances accepted

Hospital affiliations: JFK, RWJ and Somerset Medical Center

Management of all medical conditions including but not limited to Diabetes, Hypertension, Asthma, Allergies, Arthritis and Thyroid Disorder.

मैरी कोनराड

हिन्दी यू.एस.ए. के साथ मेरी यात्रा

मेरा नाम मैरी कोनराड है| हिन्दी यू.एस.ए. से गत २ वर्षों से सम्बद्ध हूँ| पिछले वर्ष मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला की एक छात्रा थी| एक वर्ष हिन्दी का अध्ययन करने के पश्चात्, मैंने इस पाठशाला की सह-संचालिका एवं स्वयं-सेविका के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया है जो मेरे लिए अत्यंत गौरव की बात है| यहाँ के अध्यापकों की लगन, कर्मठता, समर्पण एवं छात्रों को हिन्दी पढ़ाने की भावना अद्वितीय है| जैसा कि मैं प्रत्येक सप्ताह देखती हूँ, बच्चों में हिन्दी भाषा को सीखने का उत्साह एवं लगन उनके हँसते मुस्कराते चेहरों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है|

अक्टूबर माह में एडिसन में हुए विराट दशहरा मेले को देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ| मैंने वहाँ हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा लगाये गए स्टॉल पर काफी देर कार्य किया तथा सैंकड़ों दर्शकों को हिन्दी भाषा के महत्व के बारे में जानकारी देकर इस संस्था द्वारा चलाये जा रहे हिन्दी भाषा के अभियान के बारे में बतलाया| यह एक बहुत सुखद अनुभव था तथा इसमें मुझे काफी आनंद आया| इसके बाद मैंने रामलीला, रावन दहन, आतिशबाजी तथा मेले के अन्य कार्यक्रम देखे| अपनी आँखों से "अनाचार पर सदाचार की विजय" वाले इस अनोखे पर्व को प्रथम बार देखकर मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ तथा मेरा मन श्रद्धा एवं प्रसन्नता से गद-गद हो गया| भारत की संस्कृति, इतिहास तथा परम्पराओं को उजागर करता यह पर्व, अमेरिका में मनाया जाता है, यह देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई| दशहरा मेले में व्यतीत किया प्रत्येक क्षण मेरे लिए अमूल्य था| जो संस्था इस मेले को आयोजित करती है, वह धन्यवाद की पात्र है|

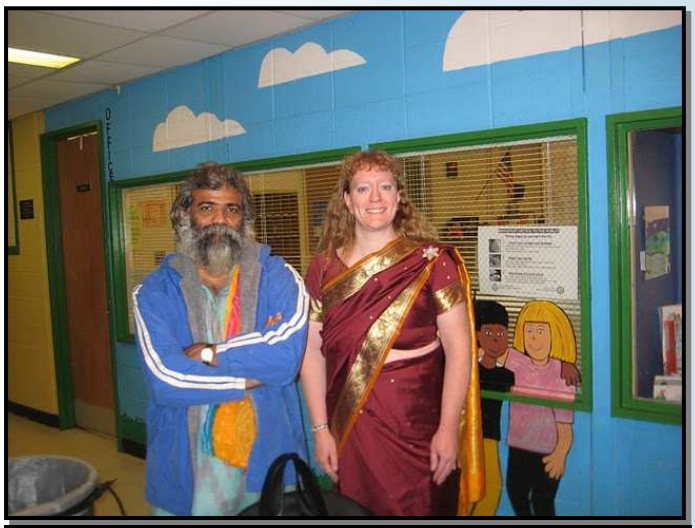

बाबा सत्यनारायण मौर्य के साथ

नवम्बर में पाठशाला में दिवाली पर्व मनाया गया| सभी बच्चों एवं बड़ों में मिठाई वितरित की गयी| सभी बच्चे विभिन्न भारतीय परिधानों में सज-धजकर आये थे एवं बहुत सुन्दर लग रहे थे| उस दिन स्कूल का वातावरण अन्य दिनों की अपेक्षा बिल्कुल भिन्न था| पाठशाला के

मैरी कोनराड

हिन्दी यू.एस.ए. के साथ मेरी यात्रा

प्रवेश द्वार के पास दिए जलाकर इस पर्व का शुभारम्भ किया गया, यह एक अनूठा दृश्य था| अनोखी बात यह थी कि भारत के जाने-माने बहुमुखी कलाकार एवं कवि बाबा सत्यनारायण मौर्य जी भी इस पर्व पर पाठशाला में उपस्थित थे| उनके साथ दिवाली मनाने में विशेष आनंद की अनुभूति हुई| प्रत्येक कक्षा में जाकर उन्होंने श्यामपट्ट पर अनेक चित्र अति शीघ्रता से बनाकर सभी छात्रों को अचम्भित कर दिया|

एडिसन हिन्दी पाठशाला की शिक्षिकाओं के साथ

दिसंबर महीने में मुझे संस्था द्वारा आयोजित "स्वयंसेवक सम्मान दिवस" में सम्मिलित होने का शुभावसर प्राप्त हुआ| अपनी तरह का यह एक अनूठा एवं अद्वितीय आयोजन था| हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं के अध्यापक एवं स्वयंसेवक इसमें उपथित थे| अध्यापकों एवं स्वयं सेवकों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शित किये गए| मैंने भी एक सामूहिक गान में भाग लिया| सभी दर्शकों ने इसे सराहा, मेरे लिए यह अत्यंत गौरव की बात थी| इस पूरे आयोजन में बहुत ही आनंद आया| हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़कर मुझे अभूतपूर्व सुख की प्राप्ति हुई है| हिन्दी भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं का ज्ञान यहाँ आकर तथा इन विभिन्न आयोजनों में भाग लेकर मुझे प्रतिपल होता जा रहा है, इसके लिए मैं अपने आपको भाग्यशाली समझती हूँ| मेरी इच्छा है कि आने वाले अनेक वर्षों तक मैं इस संस्था से जुड़ी रहकर एक स्वयंसेविका के रूप में इसकी अनवरत सेवा करती रहूँ| इसमें चरम आनंद की प्राप्ति होती है|

धन्यवाद

मैरी कोनराड, एडिसन हिन्दी पाठशाला

(अनुवादक - राज मित्तल)

लेख क्यूँ लिखें

राकेश पुरील

राकेश पुरील जी न्यू जर्सी में १० साल से रह रहे हैं| अमेरिका आने से पहले ये भारत में दिल्ली में रहते थे| राकेश जी सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के क्षेत्र में काम करते हैं|कर्मभूमि में इनका यह पहला लेख है, आशा है आपको पसन्द आयेगा|

हिन्दी यू.एस.ए. के माध्यम से मैं यह लेख आप सभी तक पहुँचाना चाहता हूँ। मुझे कर्मभूमि पत्रिका पढ़कर बहुत प्रसन्नता होती है। हमारे इस देश यू.एस.ए. में हिन्दी भाषी लोग इतना अच्छा लिख भी रहे हैं और इतना अच्छा ज्ञान भी बाँट रहे हैं। मुझे भी बोला गया कि कुछ लिखूँ। कभी ऐसा कुछ लिखा नहीं कि लोगों की आत्मा को झिंझोर कर रख दूँ या पढ़ने वाले को कोई सीख दे सकूँ, परन्तु कोशिश की और कलम उठा कर लिखना शुरु किया। तब जाकर मुझे इस कलम की महिमा का पता चला, कितनी ताकतवर है ये कलम, सभी कहते हैं परन्तु आज जाकर महसूस किया। इक बार इसे पकड़ कर चलाना जो शुरु किया उसके बाद इसने रुकने का कोई नाम ही नहीं लिया।

एक शिक्षा यहाँ ये भी मिलती है कि जिस काम को कभी किया ना हो और मन में करने की इच्छा हो तो प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। इसके दो फायदे हैं, एक कि आपके भीतर जो मनोबल है वो मजबूत होता है ओर दूसरा ये कि नयी-नयी चीज़ें सीखने को मिलती हैं।

कर्मभूमि में लेखों को पढ़कर कितने लोगों के मन में विचार आता होगा कि मैं भी एक लेख लिखूँ तो कैसा रहेगा परन्तु मन में एक डर था कि कुछ गलत ना लिखा जाये या पढ़ने वाले को मेरा लेख कैसा लगेगा, बना रहता है, और हाँ यह डर बिल्कुल साधारण बात है क्योंकि अगर आप कुछ नया करने जा रहे हैं और मन मैं परिणाम के बारे मैं न सोचें, ऐसा तो हो ही नहीं सकता, यही मानव की प्रकृति है। अब साथ ही साथ ये भी सोचिए कि यदि आप लिखना चाहते हैं और कभी प्रयास ही ना करें तो कैसे लिख पायेंगे।

मैंने भी आपकी तरह बिल्कुल ऐसा ही सोचा क्योंकि मैं भी मानव ही हूँ, परन्तु जब कलम पकड़ी और लिखना शुरु किया तो बस इस कलम ने रुकने का नाम ही ना लिया। इसीलिए दोस्तों, मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि कभी-कभी अपने मन की बात को सुनिए और जो काम आप करना चाहते हैं शुरु कर दीजिए, यदि मन में विश्वास होगा और काम के प्रति श्रद्धा होगी तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

इस सुन्दर पत्रिका में कितने सारे लेख हैं और प्रत्येक लेख दिल को छू जाता है और कुछ लेख ऐसे भी हैं जो अपार ज्ञान देते हैं। मेरे पिताजी भारत से यहाँ आए हुए थे और इस पत्रिका को पढ़कर बहुत ही प्रसन्न होते थे। उनका कहना यही था कि भारत से इतनी दूर होते हुए भी हम सभी ने भारत को अपने दिलों में सजा कर रखा हुआ है। उनका भी यही कहना है कि हमें हिन्दी को अपनी आने वाली पीढ़ियों को देना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति और अपने सुविचार अपने बच्चों को समझाने चाहिए। मैं अपने बच्चों को वही समझाता हूँ जो कभी मेरे माताजी और पिताजी ने समझाया था कि बड़ों का सम्मान करो,

लेख क्यूँ लिखें

राकेश पुरील

अपनी पुस्तकों का सम्मान करो और अपने देश का सम्मान करो। हम यहाँ यू.एस.ए. में रहते हैं तो हम यू.एस.ए. का भी पूरा सम्मान करते हैं और चूंकि भारत से भी पूरी तरह जुड़े हुए हैं इसलिये भारत का भी पूरा सम्मान करते हैं।

हम अपने बच्चों को अपने रिश्तेदारों से भारत में फोन पर बात करवाते हैं ताकि वो हिन्दी में वार्तालाप सीखें और साथ ही साथ वो अपने व हमारे रिश्तों को भी समझें। हम ये भी कोशिश करते हैं कि शाम की पूजा में वो हमारे साथ खड़े हों और पूजा करना सीखें, इस तरह से वे भगवान का आदर करना सीखते हैं और उनका भगवान में आस्था और विश्वास बढ़ता है। बच्चे हमारी संस्कृति के स्तंभ हैं और हमें इन स्तंभों को अच्छी शिक्षा द्वारा और मजबूत करना है। अच्छे संस्कार और अपनी सभ्यता का ज्ञान देकर इनको हम बता सकते हैं कि इन सब की क्या महत्ता है।

अब आप ही देखिए मैंने पहली बार कलम पकड़ी और लेख लिखना आरम्भ किया और बात ही बात में यह सब लिख डाला, इसलिये मैं आप सभी से यह प्रार्थना करूँगा कि आप सभी भी लेख लिखें और इस कर्मभूमि पत्रिका को सफ़ल व सार्थक बनाएँ।

दीपावली उत्सव पर लॉरेंसविल पाठशाला के छात्र एवं छात्राएँ प्रर्थना करते हुए

संजय सोलंकी

बालयोगाचार्य संजय जी का जीवन पिछले १२ वर्षों से योग साधक, होलिस्टिक स्वास्थ्य, योग शिक्षा, मूल्य शिक्षा, शांति व सामाजिक एकता को समर्पित है। आपको राष्ट्रीय योग चैम्पियनशिप व दिल्ली स्टेट ओपन चैम्पियनशिप में आप ३ बार स्वर्ण पदक विजेता रहे हैं। दिल्ली विभिन्न स्थानों पर योग की कक्षाओं व शिविरों का आयोजन करते हैं। दिल्ली में सर्वोदय योग (अष्टांग-योग प्रशिक्षण केन्द्र) का संचालन करते हैं व आत्मोदय चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक हैं।

योग दर्शन

सूर्योदय योग-शंखनाद (अष्टांग-योग-आधारित)

'योग-प्रशिक्षक की देखरेख में योग'

योगेन चित्तस्य पदेन वाचा, मलम् शरीरस्य च वैद्यकेन ।

योऽपाकरोति प्रवरं मुनीनां, पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि ॥

प्रिय पाठकगण !

'योग' का नाम अथवा विचार भी आते ही न केवल भारतवर्ष अपितु सम्पूर्ण मानव जाति, योग प्रणेता, योगर्षि कुलश्रेष्ठ, महर्षि पतंजलि के श्रीचरणों में अनायास नतमस्तक हो जाती है। इसमें कोई अतिशयोक्ति भी नहीं, क्योंकि भारतभूमि जहाँ देवी-देवताओं की प्रिय निवास-स्थली रहा है वहीं हमारी ऋषि-परंपरा को इस राष्ट्र ने, सूक्ष्म-साधना, विराट् अनुसंधानों, आध्यात्मिक खोजों और तथ्यों की स्थापना हेतु सशक्त संसाधन और विस्तृत प्रयोगशालाएँ प्रदान की हैं। फलस्वरूप भारतीय ऋषि-रत्नों ने, आत्मा-परमात्मा, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान, गुण-कला, भक्ति-शक्ति, संस्कृति व सभ्यता, जीवन-मृत्यु, इहलोक-परलोक, शस्त्र-शास्त्र, स्थूल-सूक्ष्म, तर्क-वितर्क, आसक्ति-विरक्ति, भोग और वियोग आदि जीवन-सम्बन्धी हर संभावित और अकल्पनीय क्षेत्रों को इतने वैज्ञानिक व सूक्ष्तम-स्तर पर प्रकाशित और प्रतिष्ठित किया कि आज के युग में अपने को विकसित कहने वाले 'लोक' भी अपनी अनेक समस्याओं के समाधान हेतु "ज्ञान-सूर्योदय" के स्थान (देश) भारतवर्ष की ओर ही निरीह भाव से निहारते हैं। और मान्यवर जब बात आती है जीवन जीने की कला और संपूर्ण जीवन-शैली की, तो भी भारतवर्ष का नाम ध्रुवतारे के समान अटल रूप से देदीप्यमान दृष्टिगोचर होता है। भारतीय सुधीजनों ने आर्ष साहित्य रूपि जिस ब्रह्मांड की रचना की, उसके मूल में श्रेष्ठ-मानव-जीवन को श्रेष्ठता की पराकाष्ठा तक ले जाना था। हमारे ऋषियों द्वारा आश्रम और वर्ण-व्यवस्था के अतिरिक्त उस सम्पूर्ण जीवन-शैली को 'योग' के नाम से प्रतिष्ठित किया गया। फलस्वरूप भोग से निवृत्ति और अध्यात्म की प्रवृत्ति का विचार देने वाला दर्शन है- 'योग' ।

अतः वेदों, उपनिषदों, गीता एवं पुराणों आदि में 'योग' पद अति पुरातन काल से सिद्ध है। इस सूक्ष्तम तथा

योग दर्शन

विराट् जीवन-शैली को जन साधारण तक पहुँचाने हेतु ऋषियों ने कुछ विश्व-चर्चित-परिभाषाओं में मर्यादित किया है। जैसे:-

'योगश्चित्तवृत्ति निरोध: । तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम्।' - 'पातञ्जल-योग-दर्शनम्'

- चित्त की समस्त विचार-वृत्तियों का नियंत्रण 'योग' है।

- विचार वृत्तियों का नियंत्रण कर योग साधक अपने स्वरूप में अवस्थित अथवा ठहर जाता है।

'योग: समाधि:' योग समाधि को कहते हैं अथवा योग का अंतिम-लक्ष्य समाधि है। समाधि का वास्तविक अर्थ है, सभी काल, परिस्थिति और अवस्था में सम रहते हुए धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को साधना। - 'व्यास भाष्य' 'योग समंवय' - (श्री अरविन्दाचार्यकृत)

'योग: कर्मसु कौशलम्' - (श्री मद्भागवत् गीता) योग करके साधक कर्मों में कुशलता लाता है।

- 'समत्वं योग उच्यते' (श्री मद्भागवत् गीता)

योग से स्वयं को साधकर साधक जीवन की उच्च अवस्था "समता" (भेदभाव रहित अवस्था)" को प्राप्त हो जात है। - दार्शनिक पक्ष पर यदि और दृष्टि डालें तो योग का शाब्दिक अर्थ है 'जोड़ना', जो कि संस्कृत भाषा की "युज्" धातु से आया है। यहाँ जोड़ने से तात्पर्य है जड़ और चेतन का योग, सूर्य से चन्द्र का योग और अंत में आत्मा-परमात्मा अर्थात् जीवात्मा का उसके मुख्य स्त्रोत में मिलने को 'योग' कहा गया है।

इस योग-गंगा में स्नात महायोगियों की परंपरा अंतहीन है। जो भगवान शंकर से प्रारम्भ होकर महर्षि पतञ्जलि, श्रीराम, योगीश्वर श्रीकृष्ण, गुरु गोरखनाथ, गुरु मच्छेन्द्र नाथ, राजर्षि, जनक, योग-ऋषि अष्टावक्र, विश्वामित्र, गुरुनानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, आचार्य अरबिन्द घोष, परम हंस योगानन्द, स्वामी शिवानन्द सरस्वती, स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी और अद्यतन स्वामी रामदेव आदि द्वारा अनवरत चल रही है और चलती रहेगी। क्रमशः

नीलू गुप्ता

बहुत ही सरल स्वभाव वाली नीलू जी पिछले १५ वर्षों से अमेरिका में अपने परिवार के साथ रह रही हैं। तथा १५ वर्षों से ही कैलिफोर्निया में हिन्दी पढ़ाने का पवित्र कार्य कर रही हैं। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। पिछले पाँच वर्षों से डी एन्जा कॉलेज, कुपरटीनो कैलिफोर्निया, में हिन्दी की एकमात्र प्रोफेसर का कार्यभार सम्भाले हुए हैं, तथा अपने कॉलेज में भारतीय त्योहारों व संस्कृति को बहुत बढ़ावा देती हैं। विश्व हिन्दी न्यास की चैपटर अध्यक्ष रहने के साथ-साथ आप उत्तर प्रदेश मंडल ऑफ नॉर्थ अमेरिका की संस्थापक व अध्यक्ष हैं। आप हिन्दी के प्रचार व प्रसार के कार्य में सदैव ही अग्रसर रही हैं, व अपने क्षेत्र में कवि सम्मेलनों का आयोजन भी बहुत बार करवा चुकी हैं। आपने बहुत सी कहानियाँ व लेख लिखे हैं। आप द्वारा रचित कविता संग्रह "फूलों की डाली" व हिन्दी भाषा सिखाने सम्बन्धी पुस्तक "हिन्दी भारती" बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

विदेश में हिन्दी प्रशिक्षण - स्वर व्यंजन

विदेश में रहकर शिक्षण कार्य में संलग्न सभी शिक्षक व शिक्षिकाएं इस बात से अवश्य सहमत होंगे कि स्वदेश में रहकर हिन्दी भाषा सीखने सिखाने और विदेश में रहकर हिन्दी भाषा सीखने सिखाने में अंतर अवश्य है। कारण भी स्पष्ट है कि स्वदेश में हमारा अपनी भाषा के साथ निरन्तर सम्पर्क में बने रहना और विदेश में बहुत ही कम समय के लिए सम्पर्क में रहना।

विदेश में हिन्दी भाषा को सिखाना इसलिए भी कठिन है क्योंकि यहाँ पढ़ने वाले छात्र -छात्राएं हिन्दी मूल के निवासी नहीं होते और यदि हिन्दी मूल के निवासी होते भी हैं तो भी उनके घर परिवार में हिन्दी न बोले जाने के कारण उन्हें भी हिन्दी सीखने में असुविधा होती है।

इस समस्या का समाधान खोजने के लिए हमें सर्वप्रथम देखना होगा कि हिन्दी सीखने में कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। इसमें तेरह स्वर होते हैं जिनको आसानी से सीखा जा सकता है, क्योंकि ये संख्या में कम हैं और उच्चारण में भी सरल हैं इसलिए इनके उच्चारण में कोई विशेष असुविधा नहीं होती है। किन्तु जब व्यंजन की बारी आती है तो कठिनाई बहुत बढ़ जाती है। एक तो संख्या में अधिक और फिर उच्चारण में भी असुविधा जैसे क ख ग घ च छ ज झ इत्यादी सभी के उच्चारण सम्बन्धी अंतर को समझना और ठीक से उच्चारण करना उनके लिए बहुत ही कठिन होता है।

स्वर और व्यंजन सीखने के उपरांत मात्राओं को सीखने पर ही विद्यार्थी हिन्दी में शब्द बनाने, लिखने और पढने योग्य हो सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए ही मैंने हिन्दी अक्षरमाला के सभी स्वर, व्यंजन व मात्राओं को एक कविता/गीत के रूप में पंक्तिबद्ध करने का प्रयास किया है। कक्षा में बार बार गाने से स्वर और व्यंजन स्वत: ही कंठस्थ हो जाते हैं और शुद्ध उच्चारण करने में भी विद्यार्थी सक्षम हो जाते हैं। कक्षा में गाने के साथ साथ यदि लिखने का भी अभ्यास किया जाए तो 'सोने में सुहागा' स्वर और व्यंजन को लिखने और उनको पहचानने में भी सफलता मिलती है।

विदेश में हिन्दी प्रशिक्षण - स्वर व्यंजन

इस गीत के अंतर्गत स्वर और व्यंजनों के साथ साथ सम्पूर्ण मात्राओं का भी समावेश है जिससे हिन्दी अक्षरमाला के साथ साथ मात्राओं का भी पूर्ण ज्ञान हो जाता है। 'करत करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान'

कहना न होगा की आनन-फानन में ही विद्यार्थी भिन्न-भिन्न मात्राओं के साथ शब्दों को खोजने और बनाने में आनंद का अनुभव करने लगते हैं। अमेरिका में अपनी हिन्दी कक्षा में हिन्दी का प्रशिक्षण करते हुए स्वर-व्यंजन के इस गीत के माध्यम से हिन्दी अक्षरमाला सिखाने में मुझे बहुत ही सहायता मिली और सफलता प्राप्त हुई है। अन्य छात्र छात्राएँ भी इस गीत से लाभान्वित हो सकेंगे इस आशा के साथ मैं इस गीत को प्रस्तुत कर रही हूँ।

आओ हम याद करें हिन्दी में स्वर होते हैं तेरह ----

[अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः]

अः स्वर का प्रयोग केवल विसर्ग के रूप में होता है जैसे अतः, प्रायः इत्यादि।

आओ खोजें कहाँ छिपे हैं इसमें स्वर बारह ----

इस ओर ऐसे ऊंचे पर्वत उस ओर एक ऐसी नीची खाई

ऋषि की कुटिया में अनार, आम और अंगूर की शोभा छाई

आओ याद करें हिन्दी में व्यंजन होते हैं तेंतीस---

क ख ग घ ङ.
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श
ष स ह

विदेश में हिन्दी प्रशिक्षण - स्वर व्यंजन

आओ खोजें कहाँ छिपे हैं इसमें तेंतीस व्यंजन और बारह मात्राएँ (अ की मात्रा नहीं होती)

ढोल बाजे ढमढम ढमढम ढमढम

डमरु बाजे डमडम डमडम डमडम

घन्टा बाजे ठनठन ठनठन ठनठन

बिजली चमके चमचम चमचम चमचम

घुमड़ घुमड़ कर बादल बरसें झमझम झमझम झमझम

घुंघरु बाजें छमछम छमछम छमछम

धरती पर फूल खिलें हरदम हरदम हरदम

भौंरें करते उनपर गुनगुन गुनगुन गुनगुन

गंगा बहती होकर चंचल सुनसुन सुनसुन सुनसुन

शाम हुई और फिर हवा चले पुरवैया

बढ़चढ़ कर ड्योढ़ी पर नाचें कृष्ण कन्हैया

ता था थैया ता था थैया ता था थैया

खेल खेल में हमने सीखी हिन्दी सीखे स्वर और व्यंजन

आओ मिलकर जय बोलें हिन्द की जय बोलें हिन्दी की सब जन ..

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल।
बिनु निज भाशा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल॥

– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

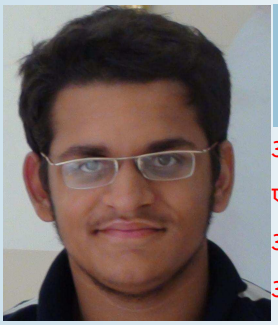

योग - एक अनुभव

आदित्य नौवीं कक्षा के मेधावी छात्र हैं। हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला से विशिष्ठा की कक्षा उतीर्ण की है। एडिसन हाई स्कूल में भी हिन्दी ऑनर के छात्र हैं। आदित्य हिन्दी यू.एस.ए. के होनहार युवा कार्यकर्ताओं में से एक हैं। आदित्य को नेट सर्फिंग में बहुत रुचि है। हिन्दी फिल्मी संगीत की कक्षाओं में जाते हैं व भारतीय संस्कृति के प्रति अत्यधिक आदर है।

हमारा परिवार पिछले ११ वर्षों से अमेरिका में रह रहा है। प्रत्येक वर्ष बसंत व पतझड़ में मुझे बहुत अधिक एलर्जी होती है। डॉक्टर के अनुसार मुझे वर्ष में १० माह तक एलर्जी की दवाई खानी चाहिए। मुझे लगने लगा मेरा जीवन ऐसे कैसे चल सकता है? हर समय जैसे मेरा नाक सूखा सा रहता था। मैं अपनी इस बीमारी से बहुत परेशान हो गया था। मैं इस वर्ष गर्मी की छुट्टियों में भारत गया। वहाँ मेरी मम्मी ने मुझे योग कक्षाओं में जाने को कहा। परंतु मुझे लगा यदि मैं दवाई से ठीक नहीं होता तो योग करने से क्या होगा? मैंने योग कक्षा में जाने से मना कर दिया। हमारे अमेरिका आने से २ सप्ताह पहले मैं गजेन्द्र सोलंकी अंकल से फोन पर बात कर रहा था, उन्होंने मुझे कहा कि मैं उनके कहने पर एक बार योग कक्षा में चला जाऊँ। यदि मुझे अच्छा लगे तो ठीक है नहीं तो दोबारा मत जाना।

मैं उनके छोटे भाई संजय सोलंकी अंकल के पास योग सीखने गया। उन्होंने मुझे जल नेती सिखाई, जिससे मुझे लगा शायद अब मुझे नाक की बीमारी से छुटकारा मिलेगा। प्राणायाम करने से मुझे साइनस प्रैशर में बहुत आराम मिला। संजय अंकल ने मुझे और भी बहुत से व्यायाम सिखाए जिनसे हम अपने शरीर को

लचीला बना सकते हैं। उन्होंने मुझे व्यायाम का हमारे जीवन में क्या महत्व है बताया। हम लोग जिम में जाते हैं, परंतु यदि हम लगातार योग करें तो जिम से कहीं अधिक अच्छा है। पहले दिन मुझे लगा कि शायद मैं अगले दिन नहीं आऊँगा, परन्तु मुझे १० दिनों में ही अपने में बहुत अंतर दिखाई दिया। मैं हमारे अमेरिका आने के अंतिम दिन तक कक्षा में जाता रहा और मुझे लगा कि मैं पहले क्यों नहीं आया। संजय अंकल ने मुझे कुछ ऐसे व्यायाम सिखाए जिन्हें मैं रोज कर सकता हूँ व इस प्रकार अपना वजन भी नियंत्रित कर सकता हूँ। अब मैं रोज योग करता हूँ। परंतु बहुत बार लापरवाही भी करता हूँ, हालांकि मुझे पता है यह ठीक नहीं है। अब मैं गर्व से कह सकता हूँ, भारत महान है जहाँ योग ने जन्म लिया।

कवि कुलवंत सिंह

दोहे - धरम के

कवि कुलवंत सिंह की प्रकाशित पुस्तकें निकुंज (काव्य संग्रह), परमाणु एवं विकास (अनुवाद) और विज्ञान प्रश्न मंच हैं| साहित्यिक पत्रिकाओं, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार की विभिन्न गृह पत्रिकाओं, वैज्ञानिक, आविष्कार, अंतरजाल पत्रिकाओं में अनेक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक रचनाएँ प्रकाशित| काव्य, लेख, विज्ञान लेखों, विभागीय हिंदी सेवाओं के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत| मानव सेवा धर्म: डायबिटीज, जोड़ों का दर्द इत्यादि का इलाज|

शुद्ध धरम बस एक है, धारण कर ले कोय
इस जीवन में फल मिले, आगे सुखिया होय||

सत्य धरम है विपस्सना, कुदरत का कानून
जिस जिस ने धारण किया, करुणा बने जुनून||

अणु अणु ने धारण किया, विधि का परम विधान
जो मानस धारण करे, हो जाये भगवान||

अंतस में अनुभव किया, जब जब जगा विकार
कण - कण तन दूषित हुआ, दुख पाये विस्तार||

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख हो, भले इसाई जैन
जब जब जगें विकार मन, कहीं न पाये चैन||

दुनियादारी में फंसा, दुख में लोट पलोट
शुद्ध धरम पाया नही, नित नित लगती चोट||

मैं मैं की आशक्ति है, तृष्णा का आलाप||
धर्म नही धारण किया, करता रोज विलाप||

माया पीछे भागता, माया का अभिमान
माया को सुख मानता, धन का करे न दान||

गंगा बहती धरम की, ले ले डुबकी कोय
सच्चा धरम विपस्सना, जीवन सुखिया होय||

तप करते जोगी फिरें, जंगल, पर्वत घाट
काया अंदर ढूंढ़ ले, तीन हाथ का हाट||

अपनी मूरत मन गढ़ी, सौ सौ कर श्रृंगार
जब जब मूरत टूटती, आँसू रोये हजार||

पत्नी, माता, सुत, पिता, नहीं किसी से प्यार
अपने जीवन में सभी, स्वार्थ पूर्ति सहकार||

बच्चों की दुनिया

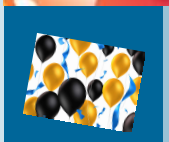

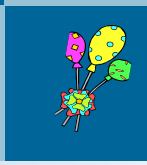

फूलों की नदी

अविना तीसरी कक्षा में पढ़ती हैं। इन्हें पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है, वे छोटी-छोटी कहानियाँ व कविताएँ लिखती हैं। वे लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला में पढ़ती हैं। अविना को भारतीय भोजन पसन्द है व भारतीय परिधान पहन कर बहुत खुश होती हैं। तैराकी, टेनिस व नृत्य भी इनके शौक हैं।

अविना

फूलों की नदी में गुलाबी रंग के कमल होते हैं।

चिड़िया के मीठे-मीठे गीत में हजारों बोल होते हैं।

होली के दिन, आसमान से जमीन तक रंग भर जाता है।

दिवाली के दिन पूरा आसमान पटाखों से चमकता है।

पूरा शहर दियों से जगमगा जाता है, रंग से भर जाता है

मीठी आवाज सुनाई देती है, गुलाबी रंग के फूल तैरते हुए दिखते हैं।

एकाग्रता

महाभारत में यह कथा है कि द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों के लिए एक तीरंदाजी की परीक्षा का आयोजन किया। उन्होंने एक पेड़ की शाखा से एक लकड़ी की चिड़िया को टाँग दिया। उन्होंने अपने सभी शिष्यों को चिड़िया की आँख पर निशाना लगाने को कहा। प्रत्येक धनुर्धारी के आने पर उन्होंने पूछा, "तुम क्या देख रहे हो?" एक शिष्य को पेड़ दिखाई दिया, दूसरे ने शाखाएँ देखीं, कुछ ने केवल चिड़िया को देखा। इस प्रकार भिन्न-भिन्न उत्तर प्राप्त हुए। उन्होंने किसी को भी बाण छोड़ने की अनुमति नहीं दी। जब अर्जुन की बारी आई तो उन्होंने कहा, "मुझे सिर्फ चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।" द्रोणाचार्य अर्जुन की एकाग्रता और तीरंदाजी की कला के प्रति सही दृष्टिकोण से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अर्जुन को तीर चलाने की अनुमति दे दी।

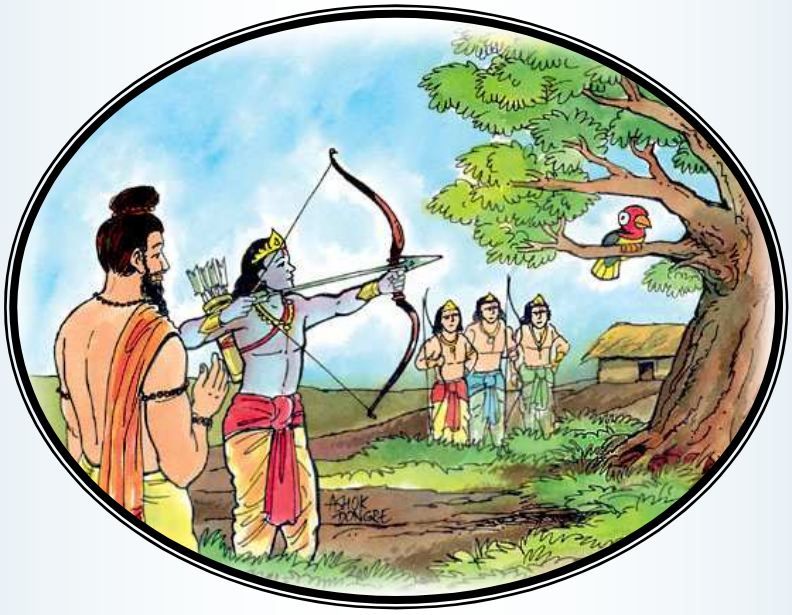

किसी लक्ष्य के प्रति, पूर्णरूपेण ध्यान देना ही एकाग्रता है। एकाग्रता का अर्थ है अपनी संपूर्ण ऊर्जा और मन को इच्छित दिशा में केन्द्रित करना। ध्यान व एकाग्रता से मानसिक शक्ति को बढ़ाया जा सकता है और उसका उपयोग किया जा सकता है। एकाग्रता के बिना मन को केन्द्रित नहीं किया जा सकता। जब मन की शक्ति बिखरी हुई होती है तो आप इसे सफलता की दिशा में प्रयुक्त नहीं कर सकते। एकाग्रता की शक्ति आपकी योग्यता एवं कुशलता को बढ़ाती है।

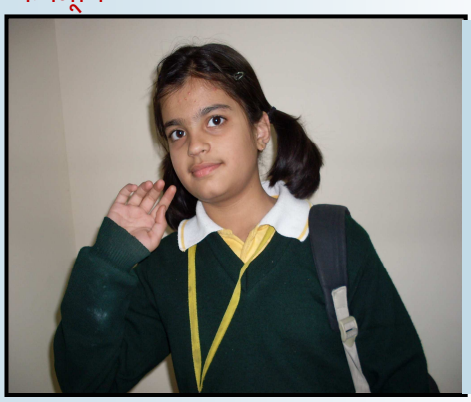

वागीशा शर्मा

वागीशा शर्मा (११ वर्ष), इंदौर, पर जैसे साक्षात् माँ सरस्वती की कृपा बरसती है। मात्र ४ वर्ष की उम्र से वागीशा शर्मा ने विभिन्न मंचों पर अपने व्याख्यानों एवं हास्य कविताओं की प्रस्तुतियों का जो अनवरत सिलसिला शुरू किया, वह आज तक कायम है। संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी के शब्दों, मुहावरों एवं काव्यांशों को हिंदी भाषा के साथ पिरोकर वागीशा जब मंचों पर अपनी वाणी कला की प्रस्तुति देती है तो हज़ारों-हज़ार मंत्रमुग्ध श्रोतागण तालियाँ बजाने पर विवश हो जाते हैं।

महाभारत

एक ने कही, दूजे ने लिखी

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मनं सृजाम्यहम॥

महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है| इसकी सर्जना की कहानी बड़ी रोचक है| महर्षि पराशर के सुपुत्र वेदव्यास के मस्तिष्क में महाभारत की रचना प्रस्फुटित हुई| इस विराट व विलक्षण ग्रन्थ को लिपिबद्ध कौन करे यह प्रश्न व्यासजी के सम्मुख उठ खड़ा हुआ| अपने प्रश्न का उत्तर पाने के लिए व्यासजी ने ब्रह्मा का बड़ा तप किया| ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और उन्होंने व्यासजी से कहा -"वत्स – केवल विघ्नहर्ता गणेशजी ही महाभारत को लिपिबद्ध कर सकते हैं|" व्यासजी के अनुरोध पर गणेशजी इस ग्रन्थ को लिखने के लिये तैयार हो गये किन्तु उन्होनें शर्त रखी -"महर्षि व्यास, मैं यह ग्रन्थ बिना रुके हुए निरंतर लिखूँगा| यदि लिखवाते-लिखवाते आप रुक गये तो फिर मेरी लेखनी भी रुक जाएगी और फिर आगे नहीं चलेगी|"

व्यासजी इस बात को भली भाँति जानते थे कि गणेशजी की लेखन गति अत्यंत तेज़ है इसलिये उन्होंने भी गणेशजी के समक्ष एक शर्त रखी – "गौरीपुत्र गणेश, मुझे आपकी शर्त स्वीकार है लेकिन मेरी भी एक शर्त है, वह यह कि जब तक आप मेरे प्रत्येक श्लोक का अर्थ पूरी तरह से ठीक-ठीक न समझ लें तब तक लेखन कार्य आगे न बढायें| "स्वीकार है" गणेशजी ने कहा|

अब व्यासजी और गणेशजी अपने-अपने आसनों पर आमने-सामने बैठ गये| व्यासजी बोलते जाते थे, गणेशजी लिखते जाते थे| बीच-बीच में व्यासजी श्लोकों को थोड़ा कठिन बना देते थे जिससे गणेशजी को भावार्थ समझने में कुछ देर लग जाती थी और उनकी लेखनी कुछ देर के लिये रुक जाती थी| इसी बीच व्यासजी कई और श्लोकों की मन ही मन रचना कर लेते थे| इस तरह महाभारत की कथा "एक ने कही और दूजे ने लिखी|" व्यासजी की ओजपूर्ण वाणी और गणेशजी की अथक-अनवरत लेखनी, दोनों की सात्विक शर्तों के बीच का साकार स्वरुप है -"महाभारत"

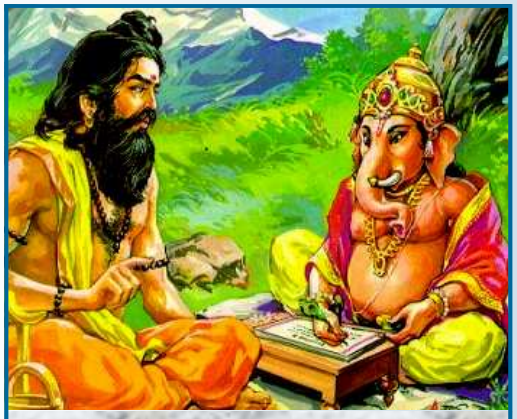

महाभारत

व्यासजी की ओजपूर्ण वाणी और गणेशजी की अथक-अनवरत लेखनी, दोनों की सात्विक शर्तों के बीच का साकार स्वरुप है - "महाभारत"

आया शुक्रवार आया

आरुषि श्रीवास्तव १० वर्ष की हैं और ब्रुक्स क्रौसिंग प्राथमिक पाठशाला में पाँचवीं कक्षा की छात्रा हैं| वे साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला में पिछले ४ वर्षों से हिंदी सीख रही हैं| हिन्दी के अलावा वह पियानो, कथक नृत्य और कला सीखने में रुचि रखती हैं| आरुषि को हिंदी गाने सुनना बहुत पसंद है| भविष्य में वे भी हिन्दी यू.एस.ए. संगठन में एक स्वयंसेविका बनेंगी| कहानी लिखने का, यह उनका पहला प्रयास है|

अभी मैं स्कूल बस में बैठ कर घर जा रही हूँ। मन ही मन बहुत खुश हूँ कि शुक्रवार आ गया। आज शाम को हिन्दी पाठशाला में जाना है। घर जाकर हिन्दी का गृहकार्य भी करना है।

मैं १० साल की हूँ और साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला की उच्च स्तर की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मुझे ऐसा लगता है, कि सब बच्चों को हिन्दी सीखनी चाहिए। इसी बहाने बच्चे अपनी राष्ट्र भाषा पढ़ना और लिखना जान सकते हैं और अपने त्योहारों के बारे में जान सकते हैं।

अब मैं अपने नाना-नानी और दादा-दादी के साथ फोन पर हिन्दी में बात कर सकती हूँ। वे बहुत खुश होते हैं।

मुझे गर्व है कि मैं हिन्दी पाठशाला जाती हूँ।

वसुंधरा दानी इंदौर की ११ वीं कक्षा की बहुत ही होनहार छात्रा हैं| इन्होंने कत्थक में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है| इन्हें कविता लिखना बहुत अच्छा लगता है|

श्री कृष्ण की महिमा

गोकुल के हैं नंदलाला और मैया के कृष्ण कन्हैया
दुखियों के हैं तारणहार और गोपियों के हैं रास रचईया
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, राधा के मनमोहन
मोरमुकुट, वैजन्ती माला और पीताम्बर सोहन
महाभारत के युद्ध के, बने वो आधार स्तम्भ
दुष्टों को पराजित कर, किया धर्म का आरंभ
दीनबंधु, दीनानाथ और दीनदयाल हैं जिनके नाम
उन्होंने भेजा दानवों को भी अपने बैकुंठ धाम
महाभारत के युद्ध में, दिया अर्जुन को गीता ज्ञान
अपने सूक्ति तीरों से, किया धरती का कल्याण
गीता के द्वारा दिया, सभी को ये पैगाम
की सत्कर्म से ही मिलेगा तुम सब को मुक्ति धाम

ऋषभ राउत

ऋषभ ७ वर्ष के हैं और एडीसन हिंदी पाठशाला में प्रथमा-२ स्तर में पढ़ते हैं| ऋषभ को पुस्तकें पढ़ना और चित्र बनाना पसंद है|

मुझे कुछ ही दिन पहले महाभारत के बारे में पता चला। मैं अपने एक मित्र के घर पर था। हम कुछ पुस्तकें देख रहे थे। मैंने वहाँ महाभारत की पुस्तक देखी व उसी समय बार-बार देखता रहा। मुझे महाभारत पसन्द है क्योंकि यह रामायण की तरह है। इसमें बहुत कुछ है। मैंने विशेष रूप से यह चित्र चुना क्योंकि यह महाभारत के उस भाग से है जिसमें अर्जुन लड़ाई के आरम्भ होने से पहले हैं। वे धनुष उठाने से घबरा जाते हैं, क्योंकि दूसरी ओर उनके शिक्षक हैं। कृष्ण जी उनके सारथी हैं और उन्हें अच्छा काम पूरा करने के लिए कहते हैं।

ऋषभ की चित्रकला को दर्शाता हुआ महाभारत का एक महत्वपूर्ण दृश्य

सच्चा वीर युयुत्सु

धृतराष्ट्र के एक वैश्य वर्ण की पत्नी थी। उसी के गर्भ से युयुत्सु का जन्म हुआ था। युयुत्सु का स्वभाव गान्धारी के सभी पुत्रों से बिलकुल अलग था। वह आपसी कलह और विद्वेष का विरोधी था और सदा धर्म और न्याय की बातें करता था, लेकिन चूंकि सत्ता गान्धारी के पुत्रों के हाथ में थी, इसीलिए कोई भी इसकी नहीं सुनता था। कौरवों ने जिस प्रकार का छलपूर्ण व्यवहार अपने भाई पाण्डवों के साथ किया था, उसकी कटु भर्त्सना युयुत्सु ने की। दुर्योधन आदि इसका इसी कारण अपमान भी करते थे। कुछ दिन तक यह देख कर कि कौरव किसी प्रकार भे धर्म के पथ पर नहीं आएंगे, उसने इनका साथ सदा के लिए छोड़ दिया। युद्ध से पहले युधिष्ठिर ने घोषणा की थी जो कि हमारे पक्ष की ओर से लड़ना चाहे, वह हमारे यहाँ आए, हम उसका स्वागत करेंगे। इसी घोषणा को सुनकर युयुत्सु कौरवों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए पाण्डव पक्ष में जा मिला। उसे विश्वासघाती भी कहा गया, लेकिन उसने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की, क्योंकि उसके सामने परिवार और कुल की मर्यादा से ऊपर धर्म और सत्य की मर्यादा थी। उसी की प्रेरणा से उसने कुल और परिवार के उन बन्धनों को काट दिया था, जिन्हें भीष्म जैसे योगी और द्रोणाचार्य जैसे पंडित भी नहीं काट पाए थे। भीष्म पितामाह और द्रोणाचार्य पूरी तरह समझते थे कि कौरवों ने पाण्डवों के साथ अन्याय किया है। यहाँ तक कि उन्होंने स्वयं अपने सामने द्रौपदी का अपमान होता देखा था, फिर भी अपनी आँखें नीचे झुका लीं। वे कौरवों के इस अन्यायी पक्ष का साथ तो छोड़ना चाहते थे, लेकिन नमक के धर्म में बंधे रहकर इसके लिए साहस नहीं जुटा पाते थे। बार-बार भीष्म ने दुर्योधन को बुरा कहा, लेकिन अंत में युद्ध उसकी सेना का सेनापति बनकर किया। द्रोण ने भी ऐसा ही किया। द्रोण ने भी ऐसा ही किया। द्रोण ने तो उस वीर बालक अभिमन्यु के अन्यायपूर्ण वध में भी सहयोग दिया था। इसकी तुलना में यदि हम युयुत्सु को रखें तो वह न्याय की भावना से अपने जीवन का तादात्मय स्थापित कर लिया था। कुछ नासमझ व्यक्ति उसको विश्वासघाती या कुलघाती कहते हैं, लेकिन जीवन के सत्य की विराट् आधारभूमि पर चिंतन करने से पता लगता है कि वह बड़ा ही सच्चा शूरवीर था। पांडवों के यहाँ उसका अपार स्वागत होता था। उसने भी पाण्डवों की ओर से सच्चाई के साथ युद्ध किया था और उनका इतना विश्वास जीत लिया था कि जब परीक्षित को राज्य देकर पाण्डव हिमालय की ओर चले तो युयुत्सु को परीक्षित का संरक्षक नियुक्त कर गए। इन सबको देखकर हमें युयुत्सु के रूप में एक ऐसा पात्र मिलता है, जिसमें सत्य और धर्म के प्रति अपूर्व दृढ़ता और साहस था और जिसने कभी झूठे बंधनों में बंधकर अपनी आत्मा को नहीं बेचा था।

अपने विषय में कुछ कहना प्राय: बहुत कठिन हो जाता है

क्योंकि अपने दोष देखना आपको अप्रिय लगता है और उनको

अनदेखा करना औरों को। - महादेवी वर्मा

महाभारत प्रश्नावली के उत्तर

सुधा अग्रवाल

१) ख) भरत वंश

२) ग) गंगा

३) ख) शान्तनु

४) क) देवव्रत

५) ग) सत्यवती से

६) ग) सत्यवती का पहला पुत्र ही राजपाट का अधिकारी होगा

७) क) भीष्म पितामह ने कहा कि मैं आज से ही अपने पिता के राज्य का परित्याग करता हूँ और आजीवन ब्रह्मचर्य रहूँगा

८) ख) जब उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि वह राजपाट त्याग कर हमेशा ब्रह्मचर्य रहेंगे जिससे वे एवं उनकी संतान भरतवंश के राजपाट का अधिकारी न बने, तब देवताओं ने उन्हें यह नाम दिया

९) ख) पिता राजा शान्तनु ने वरदान दिया, "तुम जब तक जीना चाहोगे, जीओगे। तुम्हें, कोई नहीं मार सकता। मृत्यु भी तुमसे अनुमति ले कर तुम्हारे पास आएगी।

१०) ख) दो पुत्र - चित्रांगन, विचित्रवीर्य

११) क) अम्बिका एवं अम्बालिका

१२) ख) व्यास जी

१३) क) गान्धारी

१४) क) गान्धार राजा सुबल की

१५) क) जब उसको मालूम हुआ कि उसका भावी पति नेत्रहीन है तो उसने प्रतिज्ञा की कि मैं भी अपने पति के अनुकूल रहूँगी।

१६) क) यदुवंशी सुरसेन की

१७) क) बचपन का नाम पृथा था, यदुवंशी सुरसेन ने इन्हें कुंतीभोज को गोद दे दिया था, इसीलिए इनका नाम कुंती पड़ा।

१८) ख) पाण्डु से

१९) क) कुंती एवं माद्री

२०) ख) क्योंकि जन्म के समय कर्ण ने कुण्डल एवं कवच पहने हुए थे।

लॉरेंसविल पाठशाला का दीपावली उत्सव

दिनांक २९ अक्टूबर को लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला में दीपावली का भव्य आयोजन किया गया।

बच्चों को अपनी संस्कृति से पूर्णतः जोड़े रखने के उद्देश्य से इस बार एक मत से यह विचार किया गया कि यह पर्व धूम-धाम से मनाया जाएगा।

तिथि निर्धारित होते ही हमने स्कूल का सभा गृह सुरक्षित कर लिया। सभी अभिभावकों को पूर्व सूचित कर दिया गया था, चूंकि अगर उनका बच्चा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना चाहता है तो कार्यक्रम संचालिका को उसका नाम दे दें। अभिभावकों का उत्साह इससे दर्शित होता है कि हमारे पास जरुरत से ज्यादा कार्यक्रम प्रस्तुत करने को आ गए। बच्चों ने अपनी निर्धारित कक्षा के बाद रुक कर कार्यक्रम के लिए तैयारी की। जिस दिन कार्यक्रम होना था सभी

शिक्षिकाओं ने द्वार से लेकर पूरे हॉल में दीपावली से संबन्धित सुसज्जा कर रखी थी। द्वार को तोरण व दीयों से सजाया गया था।

सभी अभिभावकों को अपने भारतीय परिधान पहनने के

निर्देश दिए गए थे, जिसका अभिभावकों ने पूर्णतः पालन किया। उस दिन देखने वाली बात थी कि बच्चों के दादा-दादी भी कार्यक्रम का आनन्द लेने के लिए पूरे उल्लास में थे।

कार्यक्रम लक्ष्मी वन्दना से आरम्भ हुआ, उसके बाद क्रमशः तेरह प्रस्तुतियाँ मंच पर की गईं। सभागृह जो करीब-करीब पूरा भरा हुआ था, बच्चों का उत्साहवर्धन तालियों से करता नहीं थक रहा था। कार्यक्रम का पट्टाक्षेप हमने भारत के राष्ट्रीय गान से किया जिसका संगीत हिन्दी पढ़ने वाले दो छात्रों ने वायलिन पर किया।

अंत में बच्चों को भारतीय मिठाई, दिए और कगज पर रंगोली की एक रचना के साथ उपहार स्वरूप बैग दिये गए। हम सभी को यह दिवस अविस्मरणीय रहेगा।

रत्ना पाराशर

संचालिका, लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला

ईस्ट ब्रुंसविक पाठशाला का दीपावली उत्सव

आदरणीय मित्रगण,

ईस्ट ब्रुंसविक हिंदी स्कूल में हमने बहुत हर्ष एवं उल्लास के साथ दिवाली का उत्सव मनाया। बच्चे और अभिभावक अपनी सुन्दर-सुन्दर रंग-बिरंगी भारतीय पोशाकों में आये। सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने पिछले वर्ष से भी अधिक संख्या में भाग लिया। शिक्षिकाओं व अभिभावकों ने मिलकर गरबा नृत्य में भाग लिया। बच्चों ने रंगोली में भाग लिया। प्ले-डो से दिए इत्यादि बनाये। जब एक बच्चे ने गणपति की बहुत सुन्दर आकृति बनाई और एक छोटी सी बच्ची ने संस्कृत की लंबी कविता का शुद्ध उच्चारण किया तो देखने-सुनने वाले दंग रह गए और खूब तालियाँ बजाईं। यह सब देखकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों को नाश्ता दिया गया। अभिभावकों ने आकर मायनो जी और मुझसे कहा कि प्रत्येक वर्ष आपका स्कूल पिछली बार से भी अच्छा कार्य कर रहा है। उनके उत्साहन से हमको हार्दिक प्रसन्नता हुई और आगे से और भी अच्छा करने की प्रेरणा मिली।

हमने शिक्षकों और अभिभावकों के बीच बातचीत के लिए सभा का आयोजन भी किया था। वहाँ हमने सभी अभिभावकों को अपनी पाठशाला की शिक्षिकाओं का परिचय दिया और उनको अपने हिंदी विद्यालय का उद्देश्य बताया। विस्तार से विचार-विमर्श भी हुआ जिसमें अभिभावकों ने भाग लिया और हमको अपने सुझाव देकर प्रोत्साहित किया।

सादर,

सविता नायक

एडिसन हिंदी पाठशाला का दीपावली उत्सव

एडिसन हिंदी पाठशाला का यह पाँचवां वर्ष है, लगता है जैसे कल की ही बात है जब एडिसन में हिंदी पाठशाला प्रारंभ हुई। एडिसन पाठशाला हिंदी यू.एस.ए. की सबसे बड़ी पाठशाला है, जिससे ३९० बच्चे, ४५ शिक्षक और ५ संचालक जुड़े हुए हैं। इस वर्ष से अमेरिका मूल की नागरिक "मेरी कोनराड" एडिसन पाठशाला से सह-संचालक के रूप में जुड़ीं। वे पिछले वर्ष इसी पाठशाला की छात्रा थीं। ३९० छात्रों को २१ कक्षाओं में बाँटा गया है, पाठशाला की शान हैं इसके शिक्षक जो बहुत ही परिश्रम और लगन से पढ़ाते हैं। जब ८:१५ बजे कक्षा के बाद बच्चों के घर जाने का समय होता है तो ऐसा लगता है कि भारत के सारे बच्चे यहाँ जमा हो गए हैं और वातावरण बहुत ही आनन्दमयी हो जाता है। ऐसा दृश्य अमेरिका में शायद ही कहीं देखने को मिले।

हिंदी पाठशाला के संचालक बाबा मौर्य के साथ

कक्षा से बाहर निकलते हुए बच्चे

हमने हर वर्ष की भाँति इस बार भी दिवाली मनाई। इस बार एडिसन पाठशाला की दिवाली कुछ विशेष थी क्योंकि भारत से बाबा सत्यनारायण मौर्य जी आये हुए थे और उन्होंने प्रत्येक कक्षा में जाकर बच्चों से बात की। उन्होंने बच्चों से प्रश्नोत्तर के रूप में वार्तालाप की। बाबाजी जी ने प्रत्येक कक्षा के श्यामपट्ट पर बहुत ही सुन्दर चित्र बनाये और छात्रों से उनके बारे में पूछा, छात्रों के उत्तर से वे बहुत ही प्रभावित हुए।

सभी छात्र भारतीय परिधानों में आये तो ऐसा

बाबाजी ने अपनी चित्रकारी से सभी बच्चों का मन मोह लिया

लगा कि हम भारत में आ गए हों। सभी शिक्षकों ने बच्चों को दिवाली का महत्व बताया और भारत के विभिन्न भागों में दिवाली कैसे मनाई जाती है वह भी बताया।

बच्चों ने भी बहुत से प्रश्न पूछे, कुछ बच्चे दिवाली से सम्बन्धित वस्तुएँ भी लाये जैसे रंगोली, दिये इत्यादी। बच्चों ने भी बताया कि वे दिवाली कैसे मानते हैं, और बहुत से बच्चों ने बताया कि वे वर्षभर इस त्योहार की प्रतीक्षा करते हैं।

फूलों से सजी हुई थाली कक्षा में ले जाते हुए एक छात्रा

सभी छात्र-छात्राओं को मिठाई बाँटी गई और एक दूसरे को दिवाली से साथ-साथ नव वर्ष की शुभकामनाएँ दी गईं।

धन्यवाद

माणक काबरा

एडिसन पाठशाला में दीपावली के दिन लिए गए कुछ चित्र

हिन्दी यू.एस.ए. का चतुर्थ शिक्षक अभिनन्दन दिवस दिसम्बर ५

हिन्दी यू.एस.ए. का चतुर्थ शिक्षक अभिनन्दन दिवस दिसम्बर ५ को बहुत ही सुचारु रूप से व धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस वार्षिक समारोह का उद्देश्य हिन्दी यू.एस.ए. की कर्मठ शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्ताओं को एक दूसरे से परिचित करवाना तथा उनकी निःस्वार्थ व निष्काम सेवाओं के लिए सम्मानित करना है। पिछले ३-४ वर्षों में हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में अद्भुत वृद्धि के कारण हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का विस्तार बढ़ता चला जा रहा है, यह समारोह सभी कार्यकर्ताओं और शिक्षकों को आपस में जोड़ने का व परिचय करवाने का एक सफल माध्यम है।

इस कार्यक्रम का आयोजन बहुत ही औपचारिक रूप से किया गया। ऐसा जान पड़ता था मानों सभी एक परिवार के ही सदस्य हैं। इस वर्ष यह आयोजन नॉर्थ ब्रंस्विक स्थित रमाडा इन में किया गया।

समारोह का आरम्भ डॉ. नरेश शर्मा जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तत्पश्चात् कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना से किया गया।

देवेन्द्र सिंह जी स्वयंसेवकों का अभिनंदन करते हुए

सर्वप्रथम हिन्दी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेन्द्र सिंह जी ने निदेशक मंडल के समूह (दल) को मंच पर बुलाकर परिचय करवाया। तत्पश्चात् विभिन्न कक्षाओं के स्तर संचालकों को मंच पर आमंत्रित किया गया। स्तर संचालकों का उतरदायित्व अपने-अपने स्तर के शिक्षकों से दूरभाषिक सभा का आयोजन करना, उनकी समस्याओं को सुनना व समाधान बताना है व पूरे सत्र के लिए जॉच परीक्षा-पत्र बनाना है। स्तर संचालकों के परिचय के बाद आगे बढ़ते हैं पाठशाला संचालकों के परिचय पर। हिन्दी यू.एस.ए. के प्रत्येक विद्यालय में एक-एक पाठशाला संचालक नियुक्त हैं, कहीं-कहीं बड़े विद्यालयों में दो या अधिक संचालक भी हैं। पाठशाला संचालक का कार्य विद्यार्थियों के पंजीकरण से लेकर शिक्षकों की नियुक्ति, अभिभावकों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देना, पुस्तकों का वितरण, टी-शर्ट वितरित करना व अपने-अपने विद्यालयों के स्तर पर कविता पाठ का आयोजन करना है। पाठशाला का पूरा उतरदायित्व पाठशाला संचालकों पर है।

अगला चरण था शिक्षक व शिक्षिकाओं का मंच पर सम्मान करना। देवेन्द्र जी ने बारी-बारी सभी पाठशाला

हिन्दी यू.एस.ए. का चतुर्थ शिक्षक अभिनन्दन दिवस दिसम्बर ५

संचालकों को मंच पर आमंत्रित किया व संचालकों द्वारा शिक्षकों का बहुत लघु परिचय देते हुए व सम्मान करते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। रमाडा इन के मालिक श्री सुनील नायक जी व डॉ. नरेश शर्मा जी द्वारा शिक्षकों को हिन्दी यू.एस.ए. का एक-एक बैग व कैलेंडर भेंट स्वरूप दिए गए।

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

सम्मान समारोह के उपरांत कार्यक्रम सांस्कृतिक कार्यक्रमों की ओर अग्रसर हुआ। श्री माणक काबरा जी व श्रीमति अंजलि भाटे जी ने उद्घोषक के रूप में बहुत ही सुचारु रूप से कार्यक्रम का संचालन किया। सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम हिन्दी यू.एस.ए. के शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए गए। वातावरण अत्यंत ही संगीतमय हो चला था-- कहीं भजन तो कहीं किशोर - रफी के गीत। कहीं पंजाबी भांगड़ा तो कहीं भारत की एकता को दर्शाते नृत्य। सभी कार्यक्रमों की प्रस्तुति सराहनीय थी। शिक्षकों का उत्साह देखते ही बनता था। इस समारोह में शिक्षकों को सपरिवार निमंत्रित किया जाता है। बच्चों के लिए विशेष रूप से अलग कक्ष में प्रबन्ध किया गया था। कार्यक्रमों के उपरांत रात्रि भोज का प्रबन्ध था। बहुत ही स्वादिष्ट भोजन का सभी उपस्थित जनों ने आनंद उठाया।

एडिसन हिंदी पाठशाला की शिक्षिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसा मंच है जहाँ शिक्षक अपनी प्रतिभा का कौशलपूर्ण प्रदर्शन महोत्सव में बच्चों के माध्यम से करते हैं व शिक्षक अभिनन्दन दिवस में

हिन्दी यू.एस.ए. का चतुर्थ शिक्षक अभिनन्दन दिवस दिसम्बर ५

साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला के शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ

अपनी प्रस्तुति देकर। यह एक मात्र ऐसी दिव्य संस्था है जो कार्यकर्ताओं के इतने बड़े समूह के साथ निरंतर अपने लक्ष्य को प्राप्त करती हुई प्रगति की ओर अग्रसर है। सभी कार्यकर्ताओं की ओर से रचिता जी व देवेन्द्र जी को सम्मान-पत्र भेंट किया गया। यह उनका प्रेम व आदर ही है जिसने उन्हें ऐसा करने पर बाध्य किया। यदि यह दिव्य दंपति हिन्दी यू.एस.ए. नामक इस पौधे का बीज प्रत्यारोपित नहीं करते तो आज सभी कार्यकर्ता सम्मान के भागीदार नहीं होते। ईश्वर की असीम कृपा से अपने निजी हितों को भूलकर इस दंपति ने जो कार्य कर दिखाया है वह अतुलनीय है। रमाडा इन के मालिक श्री सुनील नायक जी ने विशेष रूप से हिन्दी यू.एस.ए. की प्रशंसा करते हुए भविष्य में पूर्ण सहयोग देने का भरोसा दिलाया।

हिन्दी यू.एस.ए. श्री अजय कुमार जी का विशेष रूप से आभारी है जिनके निरंतर परिश्रम से हिन्दी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों को कैमरे में कैद कर के सदैव के लिए यादों में संजो के रखा जाता है।

इस प्रकार इस बड़े यज्ञ में एक और आहुति देने का कार्य संपूर्ण हुआ।

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। - महर्षि अरविंद

दशहरा उत्सव २०१० - एक रिपोर्ट

आज का दिन बहुत सुहाना था, हो भी क्यों नहीं आज दशहरा जो था। जलेबी और फाफड़ा के स्वादिष्ट नाश्ते से दिन का आरम्भ होता है। (पता नहीं क्यों, पर हम हर दशहरे पर ये खाते आये हैं)। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिंदी यू.एस.ए. ने दशहरा उत्सव में अपना स्टॉल लगाने का निर्णय किया और लगभग प्रातः ११ बजे से ही सभी लोग अपने स्टॉल तैयार करने पहुँच गए। दशहरा महोत्सव प्रति वर्ष न्यूजर्सी के एडिसन शहर में बहुत ही धूम-धाम से मनाया जाता है। इस वर्ष यह उत्सव दशहरे वाले ही दिन अक्टूबर को मनाया गया। इस वर्ष पिछली बार से अधिक स्टॉल दिख रहे थे।

हिंदी यू.एस.ए. स्वयंसेवक भी प्रातः अपने स्टॉल को सजाने पहुँच गए, सभी ने मिल कर स्टाल में बैनर, टीशर्ट और भारत के झंडे लगाये। स्टॉल में सबसे बड़ा कार्य होता है पुस्तकें लगाना। हमने भी प्रातः आते ही मेज पर पुस्तकें सजाना आरम्भ कर दिया थ। लगभग दोपहर के १ बजे तक स्टॉल सजाने का कार्य समाप्त हो गया। इस वर्ष बच्चों की कहानियों की पुस्तकें अधिक थीं। कहानियों की पुस्तकों के अतिरिक्त साथ-साथ सी.डी., डी.वी.डी., प्रमुख लेखकों के उपन्यास भी स्टॉल में सजाए गए थे।

हिन्दी यू.एस.ए. के स्टॉल में हनुमान चालीसा, आरति संग्रह व सभी वारों की व्रत कथाओं की पुस्तकें भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहीं। हमारे टैंट में वर्गीकरण के आधार पर अलग-अलग मेजों पर पुस्तकें सजाई गई थीं। सुबह से केवल

दशहरा उत्सव २०१० - एक रिपोर्ट

४-५ कार्यकर्ता ही थे, परंतु सांय काल तक और भी बहुत से कार्यकर्ता पहुँच गए थे।

जन समूह तो १ बजे ही आना आरम्भ हो गया था, परंतु ३ बजे के बाद तो जैसे अपार भीड़ एकत्रित हो गयी। स्टॉल में कुछ लोग केवल देखने ही आते रहे, परंतु इस बार लोगों का आकर्षण मुख्यतः बच्चों की पुस्तकों रहीं। अधिकतर लोगों ने कोई न कोई पुस्तक खरीदी। शायद ही कोई ऐसे लोग रहे होंगे जिन्होंने बिक्री नहीं की। बच्चों का उत्साह तो देखते ही बनता था। कुछ बच्चे तो बहुत ही उत्साहित थे जैसे सभी पुस्तकें खरीद लेना चाहते थे। मेले के वातावरण से ऐसा तो लगता ही नहीं था कि यह उत्सव अमेरिका में हो रहा है।

हिन्दी यू.एस.ए. दशहरा स्टॉल को भी अन्य उत्सवों जैसे हिन्दी महोत्सव, कवि सम्मेलन, कविता प्रतियोगिता के समान ही महत्व देता है। दशहरा उत्सव के संयोजक के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का प्रबन्ध कर रखा था, जैसे गीत, नाटक, नृत्य इत्यादि। परंतु इस महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रामलीला का प्रस्तुतिकरण होता है जो सांयकाल को रावण दहन तक चलता है। इस बार रामलीला का मंचन ३ बजे आरम्भ हो गया था।

अपार जन समूह जैसे उमड़ पड़ा हो दशहरा देखने के लिए। शाम ७ बजे रावण, कुम्भकरण और मेघनाद के पुतले जलाए गए। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध था। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं को रावण दहन के बाद स्टॉल सम्भालने में बहुत समय लग गया व सभी लोग १० बजे के बाद एक साथ रात्रि भोज के उपरांत अपने-अपने घर गए।

HELP RAISE MONEY

Hindi USA Inc. (Code: A1516)

Call our Edison/Oak Tree Store at 732-494-2007 to become a member of the program

AFFINITY MEMBERSHIP PROGRAM

Open an account at TD Bank and we'll make a contribution to your organization. TD Bank will make an annual contribution based on the average balance in all members' accounts. Checking, Savings, Money Market, CD and Retirement accounts are all included in the Program.

Contributions are calculated at 1/2% on Checking balances and 1/4% on Savings, Money Market, CD and IRA balances. Members' accounts are not affected in any way by this contribution. Your account balances are used to determine the level of contribution and are kept confidential.

If you are already a TD Bank Customer, visit any TD Bank location and ask to have your balances included as part of your organization's Affinity Membership Program.

GET
$25
WHEN YOU OPEN A NEW NON-INTEREST BEARING CHECKING ACCOUNT
20005

Enjoy the Benefits of Banking with
AMERICA'S MOST CONVENIENT BANK®

- **PICK A DAY, ANY DAY. WE'RE OPEN!**
  Weekdays 7:30 - 8
  Saturday 7:30 - 6
  Sunday 11:00 - 4
- **CONVENIENCE CHECKING.**
  First year FREE, then only $100 minimum daily balance. Plus, first order of standard checks FREE!
- **WE DON'T NICKEL & DIME YOU.**
  FREE Coin Counting at our Penny Arcades!
- **FREE TD BANK VISA® DEBIT CARD.**
  Get it on the spot! Plus, sign up for Visa® Extras and earn points for rewards.
- **FREE ATM ACCESS.**
  At over 5,300 ATMs. Plus, we'll reimburse other banks' ATM fees when you maintain a minimum daily balance of $2,500.
- **ALWAYS OPEN. ALWAYS READY.**
  FREE Online Banking with e-mail alerts and Bill Pay at www.tdbank.com.
- **FREE NOTARY SERVICES.**
- **TD BANK VISA® GIFT CARDS.**
  No purchase fee for TD Bank Customers.
- **TD CREDIT CARDS.**
  Earn great rewards or get cash back automatically.

TD Bank
America's Most Convenient Bank®

After the first 12 months, $15 monthly maintenance fee is waived when $100 minimum daily balance is maintained. Free order of standard checks. 5,300 ATMs includes TD Bank and TD Canada Trust ATMs. For non-TD Bank ATM transactions, the institution that owns the terminal (or network) may assess a fee (surcharge) at the time of your transaction, including balance inquiries. Bonus offered to new Personal Checking Customers only. Only new, non-interest bearing Checking accounts with initial deposits of $100 or more are eligible. Cannot be combined with any other offer. One bonus maximum per household. Bonus will be given at time of account opening and will be reported as taxable income. © 2010 Visa U.S.A. Inc. | TD Bank, N.A.

Member FDIC

62-5996 (06/10)

Show your **support** with **every purchase** you make!

Apply for the
Hindi USA Inc
credit card

Donate to our cause with your everyday purchases!

$ **Earn $50** for our organization after your first purchase with your card.

% **A percentage** of every purchase you make is donated to our organization.

Personalized images to increase awareness with every swipe.

Apply today!

www.CardLabConnect.com/constructhindibhavaninusa

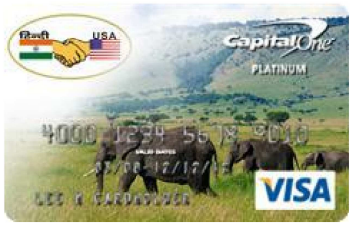

This Card is issued by Capital One pursuant to a license from Visa U.S.A. Inc.
Credit approval required. Terms and conditions apply. Offered by Capital One Bank (USA), N.A., member FDIC. © 2009 Capital One.

Powered by
Capital One®